कृष्णावास्यमिदं सर्वम्
हिंदी-बघाटी
हिमाचली
अनुवादसहितं
काव्यम्
डा. लेखराम शर्मा

कृष्णावास्यमिदं सर्वम्

(हिन्दी-बघाटी हिमाचली अनुवादसहितं काव्यम्)

कृष्णावास्यमिदं सर्वम्

(हिन्दी-बघाटी हिमाचली अनुवादसहितं काव्यम्)

डॉ. लेखराम शर्मा

देशभारती प्रकाशन

सी-585, गली नं. 7, अशोकनगर, दिल्ली-110093

॥ सर्वस्वरूपाय श्रीकृष्णाय तुभ्यं नमः ॥

– विनम्र समर्पण –

पूज्य माता-पिता
स्व. श्रीमती कमलादेवी एवं पं. श्री गीताराम शर्मा
सहित समस्त पूर्वजों के करकमलों में
जिनकी प्रेरणा का यह
मधुर फल है।

प्रशस्ति-वाक्

परम पिता परमात्मा की सार्वभौम सत्ता चिरन्तन काल से मनुष्य मात्र की सदैव उपास्य रही है तथा भारतीय आर्ष परम्परा में देवताओं का महत्त्वपूर्ण स्थान है। 'देवाधीनाः प्रजाः सर्वा देवायत्तमिदं जगत्' (वि.ध.पु. 3/288/1) के अनुसार मानव के सकल सुख-दुःख देवताओं के अधीन हैं। प्रत्येक भारतीय देवताओं की अर्चना-उपासना को अपना पुनीत धर्म समझता है। 'देवो नाद् वा दीपनाद् वा द्योतनाद् वा द्युस्थानो भवतीति वा' (निरूक्त 7/15) निर्वचन के अनुसार आचार्य यास्क दानार्थक, दीपनार्थक, द्योतनार्थक अथवा द्युस्थानीय होने से देव शब्द व्युत्पन्न मानते हैं। इसी परमात्मा (ब्रह्म) अथवा परम सत्ता विषयक ऋषियों, चिन्तकों का मनन-चिन्तन निखिल प्राणीमात्र के लिए सर्वोत्तम आध्यात्मिक अद्‌भुत उपहार है। हमारे वेदों, उपनिषदों, पुराणों आदि अनेक गन्थों में देवता तत्त्व की व्यापक मीमांसा, अवतारवाद मनीषा उपलब्ध होती है और भगवान् श्रीकृष्ण की रहस्यमयी लीलाओं का सम्मोहन भगवत प्रेमियों, सहृदयों, साधकों, विचारकों को सदैव आकृष्ट करता रहा है। भगवान् श्रीकृष्ण अहैतुकी कृपा निधान है। श्रीमद् भागवत का यह कथन- 'इन्द्रारिव्याकुलं लोकं मृडयन्ति युगे युगे' (1/3/28) तथा 'यदा यदा हि धर्मस्य...' एवं 'परित्राणाय साधूनां...' (गीता- 4/7-8) के समवेत स्वरों में कह रहे हैं कि जब जब लोग अत्याचार, अनाचार, व्यभिचार, कदाचार से व्याकुल होते हैं तब तब ईश्वरीय शक्ति उनके रक्षार्थ अवतरित होती है। पुराणविदों के अनुसार भगवान् में एक कृपा नामक शक्ति होती है। भगवान् इस शक्ति के वश में होकर जीवों के कल्याणार्थ अपनी रज, सत्व और तमो गुण रूपी तीन शक्तियों के द्वारा क्रमशः ब्रह्मा, विष्णु और शिव रूप धारण करते हैं तथा ब्रह्मा सृष्टि की उत्पत्ति, विष्णु पालन और शिव संहार करता है-

सत्वां रजस्तम इति प्रकृतेर्गुणास्तै
र्युक्तः परः पुरुष एक इहास्य धत्ते।
स्थित्यादये हरिविरिञ्चिहरेति संज्ञाः
श्रेयांसि तत्र खलु सत्त्वतनोर्नृणां स्युः।

–(श्रीमद् भागवत 1/2/23)

यही एक परमसत्ता भगवान् नाटककार के सदृश अपने को ब्रह्मा आदि विविध रूपों में प्रदर्शित करते हैं तथा सृष्टि की उत्पत्ति, पालन और संहार में प्रवृत्त होते हैं और 'त्रय अक्षर के मध्य ये तीनों एक' की सार्थकता व्यक्त करते हैं। यही भगवान् की लीला शक्ति है। श्रीमद् भागवत का कथन है कि भगवान् का लोक कल्याण हेतु देवता, मनुष्य, पशु एवं पक्षी आदि रूप धारण करना ही लीलावतार है। भगवान् श्री कृष्ण रूप परमात्मा में छः भग रूप– ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्रीः, ज्ञान और वैराग्य, आठ सिद्धियाँ– अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, ईशित्व तथा वशित्व, एक कृपा और एक लीला रूप से षोडश शक्तियाँ विद्यमान होती हैं। इनके अतिरिक्त भगवान् श्रीकृष्ण में - अन्तमयी, प्राणमयी, मनोमयी, विज्ञानमयी, आनन्दमयी, अति शायिनी, विपरिणामिनी, संक्रामिणी, प्रभ्वी, कुण्ठिनी, विकासिनी, मर्यादिनी, संह्यादिनी, आह्लादिनी, परिपूर्णा और स्वरूपावस्थिति षोडश कलाएं भी व्याप्त हैं। इन षोडश कलाओं से समन्वित ही परमात्मा का पूर्णावतार माना गया है। अतः ऐसे सकल चराचर ब्रह्माण्ड नायक भगवन् श्री कृष्ण जिन्होंने स्वयं श्रीमद् भगवद् गीता में कहा है–

यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति।
तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति।। –(6/30)

प्रभु सर्वव्यापकता की सर्वथा अनुपालना में कृत प्रयत्न 'कृष्णावास्यमिदं सर्वम्' ग्यारहवीं कृति के रचयिता डॉ. लेखराम शर्मा उद्धृत किये जा सकते हैं।

सतत साहित्य साधना में संरत डॉ. लेखराम शर्मा द्वारा विरचित इससे पूर्व 'श्री कृष्णाज्ञामिवन्दनम् (संस्कृत काव्यम्) हिन्दी-पहाड़ी बघाटी अनुवाद सहित 121 पृष्ठीय कृति सन् 2019 में प्रकाशित हुई है।

साहित्य दर्पणकार आचार्य विश्वनाथ खण्ड काव्य के लक्षण के विषय में लिखते हैं–

"खण्डकाव्यं भवेत्काव्यस्यैकदेशानुसारि च।" –(6/329)
अर्थात् काव्य के एक अंश का अनुसरण करने वाला खण्ड काव्य होता है। 'श्री कृष्णाज्ञाभिवन्दनम्' और 'कृष्णावास्यमिदं सर्वम्' ये दोनों रचनाएं भगवान् श्रीकृष्ण की विराट दैवी शक्तियों का कवि ने यत्र-तत्र-सर्वत्र आञ्चलिक परिवेश से समन्वित कर अलौकिकता के साथ लौकिक मणिकाञ्चन संयोग स्थापित करने में सफलता प्राप्त की है। इनकी लेखन रुचि विद्यार्थी काल से ही रही है जो अध्यापन काल में निखरी और सम्प्रति सेवानिवृत्ति काल में सत्तर वर्ष पूर्ण करने पर परिपक्व अवस्था को प्राप्त हो गई है। अनुष्टुप् वृत्त में लिखी इस रचना में 'यथाऽस्मै रोचते-विश्वं तथेदं परिवर्तते' (अग्निपुराण अ. 338/10-11) उक्ति की यथार्थता सहसा सम्मुख आती है। इस रचना में विद्वान् लेखक की संस्कृत हिन्दी तथा बघाटी हिमाचली त्रिवेणी भाषायी कुशलता अवलोकनीय है। समग्र रचना के अध्ययन करने से सुप्रतीत होता है कि लेखक ने बघाट की माटी, जन-जीवन, सभ्यता-संस्कृति, स्थानीय देवी-देवता आदि सभी का समन्वय श्री कृष्ण से स्थापित करते सर्वत्र कृष्णमय बना दिया है। लेखक दर्शन विषय में निष्णात है अतः इनकी रचना में दार्शनिक विषय का समावेश स्वाभाविक है।

श्रीकृष्ण की सर्वश्रेष्ठता स्थापित करते वे लिखते हैं–

ईशः ब्रह्मेन्द्रयोरपि अजेय श्चैव शौर्यतः।
निर्वहन्ति स्वकर्त्तव्यं भयात्तव हि देवताः।। –(134)

विश्वसर्जक ब्रह्मा, देवराज इन्द्र के स्वामी तथा अपनी वीरता से अजेय होने से देव-गण भी श्रीकृष्ण के भय से अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करते हैं। सृष्टि-स्थिति-संहारकारक त्रिमूर्ति भगवान् श्री कृष्ण विग्रह वर्णन अवलोकनीय है–

सृष्टं विश्वं त्वयैवेह पालयसि तथैव च।
कल्पान्ते च लयो यस्मिन् नमस्तुभ्यं त्रिमूर्तये।। –(142)

संस्कृत साहित्य एवं हिन्दी साहित्य में वर्णित श्री कृष्ण तत्त्व का इन्होंने अतीव सूक्ष्मता से अध्ययन, मनन तथा चिन्तन किया है। लेखक वन्दनीय श्री कृष्णतत्त्व का अनेकशः स्मरण करते हैं–

प्रियाय नन्दगोपस्य वसुदेव सुताय च।

व्याप्ताय अन्तबर्हिश्च जगत्प्रियाय ते नमः।। –(147)

श्री कृष्ण विग्रह के सम्मुख वन्दन मात्र से व्यक्ति के समस्त ज्ञाताज्ञात पाप–क्लेश सूखे पत्ते की तरह जल जाते हैं–

गोविन्द नाम संस्मृत्य चित्रं नमन्ति ये जनाः।
ज्ञाताज्ञातानि पापानि दह्यन्ते शुष्कपत्रवत्।। –(150)

माया, जीवात्मा, महामन्त्र गायत्री, रतिपति, शब्दमूर्ति, मातृ शक्ति राधा, देश, ग्राम, गृह, गोप–गोपी, संसार के समस्त कार्यों आदि सभी में श्रीकृष्ण का समावेश वर्णित है। सोलन की अधिष्ठात्री देवी शूलिनी, बघाट नरेश दुर्गासिंह का स्मरण कर इन्होंने अनिवार्य दायित्व निभाया है।

डॉ. लेखराम शर्मा ने अपनी समग्र साहित्य साधना में भगवान् श्री कृष्ण को आधार मानकर दो रचनाएँ संस्कृत में लिखी हैं तथा हिन्दी और बघाटी हिमाचली अनुवाद लिखकर नवीन प्रयोग किया है। महाकवि कालिदास ने– 'अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः।'' (कुमारसम्भवम् 1/1) कहकर हिमालय पर्वत को देवतात्मा स्वीकार किया है, उसी प्रकार डॉ. लेखराम शर्मा ने भू देवताओं, ग्राम देवताओं, नगर देवताओं, क्षेत्रपाल देवता, बघाट के पर्वत, नदि–नालों, पेड़–पौधों, पशु–पक्षियों के साथ भगवान् श्री कृष्ण का तादात्म्य स्थापित करने की अद्‌भुत पहल की है जो कि स्तुत्य है। सर्वत्र श्रीकृष्ण की सत्ता स्वीकार करते ''देवो भूत्वा देवान् यजेत'' शास्त्रीय प्रमाणानुसार डॉ. लेखराम शर्मा भी देव स्वरूप हैं और इन श्रद्धामयी रचनाओं को लिखकर उन्होंने अपने स्वर्ग–अपवर्ग के मार्ग को भी प्रशस्त कर दिया है। श्रीकृष्ण जी की सरल, साधारण विस्तृत तथा लोकप्रिय भाषाओं में रूचिकर महनीय मीमांसा के लिए अनेक रचनाओं के लेखक डॉ. लेखराम शर्मा जी हार्दिक साधुवाद के पात्र हैं।

7 अक्तूबर, 2021

–डॉ. प्रेमलाल गौतम 'शिक्षार्थी'
सरस्वती सदन, रबौण
वार्ड संख्या–16,
पत्रालय– सपरून 173211
जिला– सोलन (हि.प्र.)
सम्पर्क– 9418828207

कवि हृदयात्

इदं अमूल्यं जीवनं भगवतः महाकालस्य एकः खण्डः। यस्य पूर्णभगवतोऽयं खण्डः स एव जीवात्मनः, प्रस्तुतकाव्यस्य मम जीवनस्य च ससम्मानं उपासनीयं तत्त्वम्। सहजसरलभाषया कणे कणे क्रियाशीलस्य तस्य जगत्पतेः भगवतः कृष्णस्य दर्शन लाभाय अयं प्रयासः। सर्वस्वरूपः कृष्णः प्रेमपूर्वकं तस्याज्ञापालनेनैव अनुभवितुं शक्यते। तेनैव जीवात्मनः शरीरमोहजन्य दुःखेभ्यो मुक्तिः कृष्णानन्दलाभश्च सम्भवः। कवेः कस्य श्लोकस्य कोऽभिप्रायः इति दर्शयितुं हिन्द्यानुवादोऽपि दीयते। अद्यतनीये जीवने बघाटी हिमाचली भाषोपेक्षां दृष्ट्वा काव्येन साकं बघाटी हिमाचली भाषयापि अनुवादः प्रस्तूयते। आशासे पाठकाः लाभान्विताः भविष्यन्ति।

वन्दे सरस्वतीमातरम्।

मकर सङ्क्रान्तिः
कोरोनाविषाणुग्रस्त संवत् 2076

प्रथम अध्याय

गणेशं शूलिनीं वन्दे साक्षात्श्रीकृष्णमेव हि।
क्रीडनार्थं धृतं येन रूपमानन्ददायकम्।।1।।

हिन्दी– मैं भगवान् श्रीकृष्ण के द्वारा अपनी क्रीडा के लिए धारण किए गए रूपों गणेश और शूलिनी रूपकृष्ण को प्रणाम करता हूँ।

बघाटी हिमाचली– आऊँ भगवान् कृष्णा रे द्वारा आपणे खेला री खातर दारण किए दे रूपा गणेशा अरो सोलनी री आमा खे डाल करू।

नमामि पितरौ पूज्यौ कुले पूजितदेवताः।
कुटुम्बिनः स्वबन्धून् च सर्वान्कृष्ण स्वरूपिणः।।2।।

हिन्दी– मैं अपने कृष्णरूप पूज्य माता-पिता, कुल के पूज्य देवता, परिवारजनों और बन्धुजनों को भी प्रणाम करता हूँ।

बघाटी हिमाचली– आऊँ आपणे कृष्णरूप माता-पिता, कुला रे पूज्य देवते, परिवारजना अरो बन्धु जना खे बि डाल करू।

सुनवं जायते नित्यं स्वानन्दार्थं सदैव यः।
तेन कृष्णेन मद्हस्तात् पुष्पमिदं समर्प्यते।।3।।

हिन्दी– जो भगवान् कृष्ण अपने आनन्द के लिए नित नूतन रूप धारण करते हैं वे मेरे हाथों से यह पुष्प आप पाठकों को समर्पित कर रहे हैं।

बघाटी हिमाचली– जो भगवान् कृष्ण आपणे आनन्दा री खातर रोज नवा रूप दारण करो से मेरे हाथा साए इ फूल तूमा खे समर्पित करनि लग रोए।

जानाति कृष्णकार्यंकः तवाकाङ्क्षां तथैव च।
यथेच्छसि तथा क्रीड ब्रह्माण्डक्रीडनाङ्गणे।।4।।

हिन्दी– हे कृष्ण! आपके कार्य और इच्छा को कौन जानता है। आप जैसे चाहो वैसे इस ब्रह्माण्ड रूप खेल के मैदान में खेलते रहो।

बघाटी हिमाचली– हे कृष्ण! त्हारे कामा अरो इच्छा खे कुण जाणो। तूमे जीशा चाहो तीशे एस ब्रह्माण्डरूप खेला रे मदाना माँएं खेल्या करो।

त्वं क्रीडसि जगत्क्रीडति विरामे ते विराम च।
क्रीडकश्च त्वमेवासि आनन्दोऽपि तवैव हि॥5॥

हिन्दी– जब तुम खेलते हो तो दुनिया खेलती है और रूकते हो तो दुनिया रूक जाती है। तुम ही खिलाड़ी हो और आनन्द भी तुम्हारा ही है।

बघाटी हिमाचली– जबे तूमे खेलो तो दुनिया खेलो अरो रुको तो दुनिया रुको। तूमे ही खिलाड़ि असो अरो आनन्द बि त्हारा ही असो।

त्वमेव मङ्गलाचारः प्रतिपाद्यं त्वमेव हि।
लेखको वाचकश्चैव रसिकश्च त्वमेव हि॥6॥

हिन्दी– आप ही इस काव्य के मङ्गलाचरण हैं और आप ही प्रतिपाद्य। लेखक भी तुम ही हो और पाठक तथा रसिक भी आप ही हैं।

बघाटी हिमाचली– तूमे ई एस काव्य रे मङ्लाचरण, वर्णनीय, लेखक, पाठक अरो रसिक असो।

संक्षुब्धे त्रिगुणे दैवात् स्वस्यां योनौ परः पुमान्।
चिद्वीर्यं तत्र संस्थाप्य सः ब्रह्माणमजीजनत्॥7॥

हिन्दी– देवशक्ति से सत्त्वादि गुणों में हलचल पैदा होने पर परमात्मा ने प्रकृतियोनि में चेतनरूप वीर्य को स्थापित करके जगत् स्रष्टा ब्रह्मा जी को पैदा किया।

बघाटी हिमाचली– देवशक्ति साय सत्त्वादि गुणा माँएं हलचल पैदा ओणि पाँएं भगवाने प्रकृतियोनि माँएं चेतनरूप वीर्य स्थापित कर रो जगत्पिता ब्रह्माजी पैदा किए।

द्वेषादयः जने तावत् शत्रवस्तावदेव हि।
बोधं प्राप्य जनाः यावत् शरणं तव नागताः॥8॥

हिन्दी– मुनष्य में द्वेषादि दोष और अन्य शत्रु तभी तक हैं जब तक उन लोगों ने ज्ञान पाकर आपकी शरण ग्रहण नहीं की है।

बघाटी हिमाचली– आदमी माँएं ईर्ष्यादि दोष अरो दूजे शत्रु ताँव ई तेईं असो जाँव तेईं तीने आत्म ज्ञान पाय रो त्हारि शरण ग्रहण नी कि।

त्वत्तः जीवशरीराणि प्रजायन्ते पुनः पुनः।
गुणाः प्रोक्ताःरजस्तेषां त्वं चिद्वीर्यप्रदः पिता॥9॥

हिन्दी– आपसे ही बार–बार जीवात्माओं के शरीर पैदा होते हैं। सत्त्वादि गुण उनके लिए रजरूप हैं और आप वीर्यस्थापक पिता रूप।

बघाटी हिमाचली– तूमा दे ई बार बार जीवात्मा रे शरीर पैदा ओ। सत्त्वादि गुण तीना खे रजरूप असो अरो तूमे वीर्य स्थापक पिता रूप।

मायाशक्तिं विना कृष्ण कर्तुं किमपि नार्हसि।
मायायुक्तो यदा कृष्ण सर्वं कर्तुमिहार्हसि॥10॥

हिन्दी– हे कृष्ण! मायाशक्ति के बिना आप कुछ नहीं कर सकते। जब आप माया शक्ति से युक्त होते हैं तब सब कुछ कर सकते हैं।

बघाटी हिमाचली– हे कृष्ण! मायाशक्ति दे विना तूमे कुछ नीकर सकदे। जबे तूमे मायाशक्ति दे युक्त रौ तबे सब ठेंव कर सको।

कृष्णमायातिप्रबला गुणं स्वं मनुते यया।
प्रबलकृपया तस्य आवरणं विनश्यति॥11॥

हिन्दी– कृष्ण की मायाशक्ति बहुत प्रबल है जिससे मुनष्य अपने को सत्त्वादि गुण मानता है। उनकी प्रबल कृपा से ही वह माया का परदा हटता है।

बघाटी हिमाचली– कृष्णा रि मायाशक्ति बहुत ताकतवर असो जनी साए से आदमि आपि खे गुण मानो। कृष्णा री प्रबल कृपा साए से माया रा परदा अटो।

पीड्यन्ते प्रेमिणो यत्र प्रभुस्तत्र प्रजायते।
प्रह्लादे पीडिते जाते नृसिंहः समजायत॥12॥

हिन्दी– जहाँ पर भगवत्प्रेमियों को पीड़ा दी जाती है वहाँ भगवान् प्रकट होते हैं। जब प्रह्लाद को पीड़ा दी गई तो वे भगवान् नृसिंह के

रूप में प्रकट हो गए।

बघाटी हिमाचली– जेती भगवाना रे प्रेमी खे पीड़ा दि जाओ तेती भगवान् प्रकट ओय जाओ। जबे प्रह्लादा खे पीड़ा दि गोइ तो भगवान् नरसिंहा रे रूपा माँएं प्रगट ओय गोए थे।

निन्दायां वा प्रशंसायां उदासीनो हि सर्वथा।
त्वत्कृते प्रदत्तचित्तः त्वां प्राणतोऽप्यति प्रियः॥13॥

हिन्दी– जो आदमी अपनी निन्दा और प्रशंसा के प्रति उदासीन रहता है और आप कृष्ण में मन लगाए रहता है वह आपको बहुत प्रिय लगता है।

बघाटी हिमाचली– जो आदमि आपणी निन्दा और प्रशंसा माँएं बेपरवाह रौ अरो तूमा कृष्णा माँएं मन लाओ से तूमा खे भौत प्यारा लगो।

नाचरामि तु धर्मं हि नात्मज्ञोऽहं तथैव च।
त्वदृते शरणं मे न यथा योग्यं तथा कुरु॥14॥

हिन्दी– हे भगवान्! न तो मैं धर्म का आचरण कर पाता हूँ और न ही आत्मज्ञाता हूँ। आपके अतिरिक्त मेरी कोई और शरण नहीं है, जो उचित लगे वह करो।

बघाटी हिमाचली– भगवन् ना तो आऊँ दर्मा रा आचरण कर पांदा अरो ना ही आऊं आत्मज्ञाता आथि। तूमा दे इलावा मेरि कोई शरण नी आथि, जो ठीक लगो से करो।

वैकुण्ठे महदैश्वर्यं तु तत्र प्रभुः सुदुर्लभः।
भूमौ कृष्णः सबन्धुर्हि व्रजानन्दो न दुर्लभः॥15॥

हिन्दी– बेकुण्ठलोक में बहुत ऐश्वर्य है, वहाँ भगवान् के दर्शन दुर्लभ हैं। धरती पर कृष्ण बन्धुओं सहित रहते हैं अतः व्रज में ही वैकुण्ठ का आनन्द लेना दुर्लभ नहीं है।

बघाटी हिमाचली– वैकुण्ठ लोका माँएं बहुत ऐश्वर्य असो, तेती भगवाना रे दर्शन करने दुर्लभ असो। दरती पाँएं कृष्ण बाई बन्धु साथी रौ, एते री बजा साए व्रजा माँएं बेकुण्ठा रे दर्शन करने चाएते नी आथि।

कृष्ण त्वं शक्तिरूपेण सर्वबुद्धिषु तिष्ठसि।
हरसि विपत्तिं काले संस्मर्तॄणां विशेषतः॥16॥

हिन्दी– हे कृष्ण! तुम शक्ति रूप से सबकी बुद्धियों में स्थित हो। समय पड़ने पर सबकी विपदा का हरण करते हो, विशेष रूप से अपने याद करने वालों की।

बघाटी हिमाचली– हे कृष्ण! तूमे शक्ति रूपा साए सबी री बुद्धि माँएं स्थित असो। समय पड़नि पाँएं तूमे स बीरी विपत्ति राहरण करो, विशेष रुपा साए आपणे याद करनि आले री।

जगतः सर्वभूतानि वसन्ति परमात्मनि।
भूतेष्वपि स एव तु वासुदेवस्ततः स्मृतः॥17॥

हिन्दी– संसार के सब प्राणी परमात्मा में बसते हैं और उन प्राणियों में परमात्मा बसते हैं अतः परमात्मा वासुदेव कहलाते हैं।

बघाटी हिमाचली– दुनिया रे सब जीव परमात्मा माँएं बसो अरो तीना माँएं परमात्मा बसो। एनि खे भगवाना खे वासुदेव बोलो।

ब्रह्माण्डं कृष्ण सृष्ट्वा त्वं सुप्रविष्टस्तदन्तरम्।
पिता लोके यथा पुत्रं स्वाङ्गादङ्गानि यच्छति॥18॥

हिन्दी– हे कृष्ण! आपने ब्रह्माण्ड की रचना की और उसके अन्दर इस तरह प्रवेश किया जैसे पिता अपने पुत्र को उत्पन्न करके उसके अङ्गों को अपने अङ्ग प्रदान करते हैं।

बघाटी हिमाचली– हे कृष्ण! तूमे ब्रह्माण्डा रि रचना कि अरो तीन्दा बीतरा खे ईशा प्रवेश किया जीशा पिता पुत्रा खे पैदा कर रो तेसरे अङ्गा खे आपणे अङ्ग प्रदान करो।

श्रयं भगवतो लोके जगति यान्ति सज्जनाः।
दिव्यः वैकुण्ठलोकः सः यत्र कृष्णः श्रिया सह॥19॥

हिन्दी– संसार में सज्जन लोग वैकुण्ठ में भगवान् की शरण ग्रहण करते हैं। वह वैकुण्ठ लोक दिव्य है जहाँ भगवान् कृष्ण जगज्जननी लक्ष्मी के साथ रहते हैं।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ माँएं सज्जन आदमि वैकुण्ठा माँएं भगवाना

रि शरण ग्रहण करो। से वैकुण्ठ लोक अलौकिक असो जेती भगवान् कृष्ण जगन्माता लक्ष्मी साए रौ।

आदिपूज्योऽसि गोविन्द षोडशमातर एव च।
नवग्रहेषु पूज्यस्त्वं कलशेऽपि प्रतिष्ठितः।।20।।

हिन्दी– भगवन्! आप आदि पूज्य गणेश हैं। आप ही सोलह माताएं हैं। नौ ग्रहों के रूप में आप ही पूज्य हैं। पूजनीय कलश रुप समुद्र में भी आप ही विराजमान हैं।

बघाटी हिमाचली– हे कृष्ण! तूमे ई गणेश, सोला माता, नौ ग्रौ अरो कलश रूप समुद्र असो।

मनोहरमिदं विश्वं विरच्यते त्वयैव तु।
सत्त्वादिभिर्विहीनोऽपि निर्मासि प्रकृतेः गुणान्।।21।।

हिन्दी– इस सुन्दर संसार को आपने ही रचा है। आप सत्त्वादि गुणों से रहित होकर भी प्रकृति के इन तीन गुणों को रचते हो।

बघाटी हिमाचली– तुमे सत्त्वादि गुणा दे रहित ओय रो बि प्रकृति रे ईनातिं गुणा खे रचो।

सहजास्त्वन्मनस्कास्तु त्वदर्थं त्यक्तदैहिकाः।
संत्यक्तलोकधर्माश्च तेषां त्वमेव पालकः।।22।।

हिन्दी– आप में मन लगाने वाले सहज स्वभाव के लोग जिन्होंने आपके लिए शरीर और लोकधर्म त्याग दिए हैं, उनका आप ही पालन करते हैं।

बघाटी हिमाचली– जीने सहज स्वभावा रे आदमिए तूमा माँएं मन लाया, शरीर अरो लोक दर्म त्याग राखा तीना रा पालन तूमे ही करो।

गोपीभ्यः पतिसेवा न मुख्यं गौणी सुनिश्चिता।
सेवा प्रियस्य गोपीनां भक्तिरा सीद् जगत्पतेः।।23।।

हिन्दी– गोपियों के लिए उनके अपने पतियों की सेवा गौण थी। उनकी पति सेवा तो वास्तव में जगत्पिता भगवान् कृष्ण की भक्ति थी।

बघाटी हिमाचली– गोपी खे तीनी रे आपणे पति रि सेवा गौण थि।

तीनी रि पति सेवा असली माँएं दुनियाँ रे मालक भगवान् कृष्णा रि सेवा थि।

विषयचिन्तनाच्चित्तं विषये हि विलीयते।
गोविन्दचिन्तनात्तच्च तस्मिनेव विलीयते॥24॥

हिन्दी– सांसारिक वस्तुओं का चिन्तन करने से मन उन्हीं वस्तुओं में विलीन हो जाता है और भगवान् कृष्ण का चिन्तन करने से मन भगवान् में विलीन हो जाता है।

बघाटी हिमाचली– दुनिया री चीजा माँए मन लाणि साए मन तीनी चीजा माँएं ई विलीन ओए जाओ अरो भगवान् कृष्णा माँए मन लाणि साए से कृष्णा ई माँएं विलीन ओय जाओ।

सीतां रामं च वन्देऽहं साम्बसदाशिवाय च।
राधां नमामि कृष्णं च सर्वरूपाय ते नमः॥25॥

हिन्दी– मैं भगवती सीता, राम जी, माँ पार्वती, शिव, राधा और कृष्ण आदि सर्वदेवरूप कृष्ण को प्रणाम करता हूँ।

बघाटी हिमाचली– आऊँ सीता जी, राम जी, पार्वती, शिव अरो राधा बगैरा सर्वदेव रूप कृष्णा खे डाल करू।

जातो हि ब्रह्मणो देहात् जीवस्तत्परमात्मनः।
ब्रह्मदेहगतिस्तस्मात् जीवदेहेऽपि तत्तथा॥26॥

हिन्दी– यह जीवात्मा परमात्मा या ब्रह्म के शरीर से उत्पन्न हुआ है, उसी से ब्रह्म का शरीर ब्रह्माण्ड गतिमान् है और उसी से जीवात्माओं के शरीर भी।

बघाटी हिमाचली– इ जीवात्मा भगवाना रे शरीरा ब्रह्माण्डा दे पैदा ओय रोआ। ब्रह्माण्ड बि तेनी साए गतिमान् असो अरो जीवात्मा रे शरीर बि।

श्वसनं जीवचेष्टा ते जीवेष्वभेद पूर्वकम्।
भेदं करोति मूढस्तु भेदं नैव तु कृष्णवित्॥20॥

हिन्दी– हे भगवान्! आपके सांस लेने से ही जीवों में चेष्टाएं हो रही हैं जिसे आप हर जीव को बिना भेदभाव के देते हैं। जीवों में भेद

तो मूर्ख करता है। कृष्ण को जानने वाला सबमें अभेद करता है। वह सभी को बराबर समझता है।

बघाटी हिमाचली– भगवन् त्हारे शाश लणि साए जीवा माँएं गति असो जो तूमे हर जीवा खे बिना भेद भावा दे देओ। जीवा माँएं फरक तो मूर्ख करो। कृष्णा खे जाणनि आला कस माँएं फरक नी करदा। से सबी खे बराबर समजो।

जीवेष्वसङ्गक्रीडा ते कृष्ण स्वगुणमायया।
सुखित्वं त्वत् सुखे एव प्रेममन्त्रः सुखप्रदः।।28।।

हिन्दी– आप कृष्ण अपने गुणों की माया शक्ति से जीवों में अनासक्त होकर क्रीडा करते हैं। आप भगवान् के सुख में ही सबका सुख निहित है, यह प्रेम मन्त्र ही सुखदायक है।

बघाटी हिमाचली– तूमे कृष्ण आपणे गुणा ही री माया शक्ति साय जीवा माँएं अनासक्ति साय खेल्या करो। तूमा भगवाना रे सुखा माँएं ही सबी रा सुख असो, इ प्रेममन्त्र ही सुखदायक असो।

लक्ष्मी तु जननी यत्र पिता चैव जगत्पतिः।
बन्धवः कृष्ण भक्ताश्च तन्मन्दिरं हि भारतम्।।29।।

हिन्दी– जहाँ माता लक्ष्मी हैं, पिता भगवान् विष्णु हैं और बन्धुजन कृष्ण के भक्त हैं वह मन्दिर भारत है।

बघाटी हिमाचली– जेती आमा लक्ष्मी, बाव भगवान् विष्णु अरो बाइ कृष्णा रे बगत असो से मन्दर बारत असो।

प्रत्यक्षं नैव जीवात्मा ईश्वरीयं हि चेतना।
प्रत्यक्षसत्ता शरीरान्तं चित्सत्ता देहतः परम्।।30।।

हिन्दी– जीवात्मा प्रत्यक्ष नहीं है, यह ईश्वरीय चेतना अप्रत्यक्ष है। प्रत्यक्षवस्तु की सत्ता शरीर के रहने तक ही है पर चेतना की सत्ता शरीर के नष्ट होने के बाद भी रहती है।

बघाटी हिमाचली– जीवात्मा रा प्रत्यक्ष नी ओंदा, इ ईश्वरीय चेतना अप्रत्यक्ष असो। प्रत्यक्ष वस्तु रि सत्ता शरीरा रे रौणि तईं रौ पेरि चेतना रि सत्ता शरीरा रे नष्ट ओणि दे बादा खे बि रौ।

कार्यं किमपि लोके स्यात् न तेषामशुभं भवेत्।
कृष्णः समादृतो येषां हृदयेषु सदा भवेत्॥31॥

हिन्दी– संसार में कोई भी कार्य हो, उनका कभी बुरा नहीं होता जिनके हृदयों में आदर के साथ हमेशा कृष्ण रहते हैं।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ रा कोंएं बि काम ओ, तीना रा कबे बि बूरा नी ओंदा जीना रे दिला माँएं आदरा साए सदा कृष्ण रौ।

भावे हि परमा शक्तिः भावे सर्वं समाहितम्।
गोपिकेव पत्यादिषु भावनीयः जगत्पतिः॥32॥

हिन्दी– भाव में परम शक्ति है। भाव में सब कुछ समाया है। सभी मनुष्यों को गोपियों द्वारा अपने पतियों में विश्वेश्वर की भावना की तरह अपने कर्तव्यों में परमेश्वर की भावना करनी चाहिए।

बघाटी हिमाचली– बावा माँएं परमशक्ति असो। सब ठेंव बावा माँएं असो। सबी लोका खे गोपी रे द्वारा आपणे पति माँएं भगवाना रि बावना री तरह आपणे कर्तव्या माँएं भगवाना रि बावना करनि चैं।

त्वत्त एव गुणास्त्रयः गुणाः नैव परे त्वयि।
त्रिगुणमोहिताः जीवाः नैव जानन्ति त्वां परम्॥33॥

हिन्दी– हे कृष्ण! तीन गुण आपसे ही उत्पन्न हुए हें, ये आपसे अलग नहीं हैं। तीन गुणों से मोहित मनुष्य तीन गुणों से अलग आपको नहीं जानते।

बघाटी हिमाचली– तीन गुण तूमा दे ही पैदा ओ रोए इ तूमा दे जूदे नी आथि। तिं गुणा साए मोहित जीव तिं गुणा दे अलग तूमा खे नी जाण दे।

दुर्लभः व्रजकामस्तु क्षीणपापैः सुलभ्यते।
काममन्त्रः व्रजस्यायं कृष्णस्याहं ममापि सः॥34॥

हिन्दी– व्रजवासियों की कामना दुर्लभ हैं, वह उन्हीं को प्राप्त हैं जिनके पाप नष्ट हो गए हैं। मैं कृष्ण का हूँ और कृष्ण मेरे हैं, यह व्रजवासियों की कामना का मन्त्र है।

बघाटी हिमाचली– व्रजवासी रि कामना दुर्लभ असो। से तीना खे

ही प्राप्त ओ जीना रे पाप नष्ट ओ गोए। आऊँ कृष्णा रा असू अरो कृष्ण मेरे असो, इ व्रजवासी रा काममन्त्र असो।

धर्माधर्मरहितोऽपि जीवानां धर्मरक्षकः।
परमानन्दरूपस्त्वं जीवात्मनां प्रकाशदः॥35॥

हिन्दी– भगवान्! आप धर्म और धर्म से रहित होने पर भी जीवों के धर्म के रक्षक हैं। आप परमानन्दस्वरूप हैं और जीवों को प्रकाश प्रदान करते हैं।

बघाटी हिमाचली– भगवन्! तूमे दर्मा अरो अदर्मा दे रहित ओणि पाँएं बि जीवा रे दर्मरक्षक असो। तूमे परमानन्दा रा रूप असो अरो आदमी खे प्रकाश प्रदान करो।

स्वधर्मः नियतं कर्म सर्वेषामिह शास्त्रतः।
धर्मः सर्वोपरि प्रोक्तं कृष्णस्य शरणं शुभम्॥36॥

हिन्दी– शास्त्रों के अनुसार व्यक्ति के लिए नियत कर्म ही स्वधर्म है। उससे भी सर्वोपरि धर्म भगवान् की शरणागति बताई गई है।

बघाटी हिमाचली– शास्त्रा माँएं आदमी खे नियत कर्म ही तेसरा स्व धर्म बताय राखा। तेईदे बि सबी दे ऊपर दर्म भगवाना री शरणा माँएं जाणा बताय राखा।

नश्वराणीह कार्याणि क्रियन्ते गुणमायया।
चराचरेषु मर्त्येषु अमरस्त्वं विराजसे॥37॥

हिन्दी– संसार में परिवर्तनशील कार्य गुणों की माया से किए जाते हैं। चर और अचर पार्थिव जीवों में आप अपरिवर्तनशील होकर विराजमान हैं।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ माँएं बदलनि आले काम गुणा री माया साय किए जाओ। चलित और अचलित पार्थिव जीवा माँएं तूमे बीना बदलनि आले ओए रो विराजमान असो।

करिष्ये न करिष्ये वा मिथ्याहंकार एव हि।
कार्याणि तु गुणैः सदा विधीयन्ते दिवानिशम्॥38॥

हिन्दी– मैं यह काम करूँगा या नहीं करूँगा, यह मिथ्या अहंकार है। कार्य तो दिन रात तीन गुणों द्वारा किए जाते हैं।

बघाटी हिमाचली– मेरे इ काम करना या नी करना, इ झूठा अभिमान असो। काम तो दिन रात तिं गुणा रे द्वारा किए जाओ।

देहदु:खं मनोदु:खं यावत्कृष्ण प्रेम न जायते।
कृष्णप्रेम्णि समुत्पन्ने दु:खमूलं गतं गतम्।।39।।

हिन्दी– शरीर और मन के दु:ख तभी तक हैं जब तक कृष्ण प्रेम नहीं होता। कृष्ण प्रेम पैदा होनेपर दु:ख का कारण समाप्त हो जाता है।

बघाटी हिमाचली– शरीरा और मना रे दु:ख तांव तैं ही बणे रौ जाँव तैं कृष्णा साय प्रेम नी ओंदा। कृष्णप्रेम पैदा ओणि पाँएं दु:खा रा कारण समाप्त ओय जाओ।

जीवानां चेतना कृष्ण स्कन्दस्त्वं च बृहस्पतिः।
तुलसी चैव ओंकारः प्रह्लादश्च यमस्तथा।।40।।

हिन्दी– हे कृष्ण! आप ही जीवों की चेतना, कार्तिकेय, बृहस्पति, तुलसी, ओंकार, प्रह्लाद और यमराज हैं।

बघाटी हिमाचली– भगवन्! तूमे ई प्राणी रि चेतना, कार्तिकेय, बृहस्पति, तुलसी, ओंकार, प्रह्लाद अरो यमराज असो।

कामविनाशकं नित्यं कृष्णनामार्थचिन्तनम्।
तच्चिन्तयामि कर्मस्थः जीवात्मनो विशुद्धये।।41।।

हिन्दी– कृष्ण के नाम के अर्थ का चिन्तन हमेशा कामना का नाश करता है। इसलिए अपना कर्तव्य निभाते हुए आत्मा की शुद्धि के लिए मैं उसका चिन्तन करता हूँ।

बघाटी हिमाचली– कृष्ण नाँवां रे अर्था रा चिन्तन हमेशा कामना रा नाश करो। एनी खे आपणा काम करदे आत्मा री शुद्धि री खातर आऊं तेस अर्था रा चिन्तन करू।

गुणाः कुर्वन्ति कार्याणि कर्ता जीवः कथं भवेत्।
अनित्ये नित्यसंभावात् अहं भावो हि जायते।।42।।

हिन्दी– कार्य तो गुण करते हैं, जीवात्मा का कर्ता होना कैसे संभव है? परिवर्तनशील वस्तु में नित्यता का भाव रखने से अहंकार भाव पैदा होता है।

बघाटी हिमाचली– काम तो गुण करो तबे जीवात्मा कर्ता कीशा ओआ? अनित्य वस्तु माँएं नित्यता रा भाव करनि साय अहंकार पैदा ओय जाओ।

गुणेष्वेव क्रियाः सर्वाः नैव कृष्णे कदाचन।
कृष्णस्तेन संध्यातव्यः कर्तृत्वं येन नश्यति।।43।।

हिन्दी– क्योंकि समस्त क्रियाएं गुणों में ही होती हैं, कृष्ण में नहीं। इसलिए भगवान् कृष्ण का ध्यान करना चाहिए जिससे कर्तापन का अभिमान नष्ट हो जाता है।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ रे सारे काम गुणा माँएं ओ, कृष्ण आपि नी कर दे। एनी री खातर कृष्णा रा द्यान करना चैं जनी साए कर्तापाणा रा नाश ओय जाओ।

आसक्तचेतना जीवः असक्तः परमेश्वरः।
प्राप्त्यर्थं कृष्णलोकस्य कर्म कृष्णार्थमाचर।।44।।

हिन्दी– सांसारिक विषयों में आसक्त होने वाली चेतना का नाम जीव है, परमेश्वर उनमें अनासक्त रहते हैं। कृष्ण के आनन्दमय लोक की प्राप्ति हेतु अपना कर्म कृष्ण के लिए करना चाहिए।

बघाटी हिमाचली– सांसारिक विषया माँएं आसक्त ओणि आली चेतना रा नाँव जीव असो, परमेश्वर तींदे अनासक्त रौ। आनन्दमय कृष्णलोका री प्राप्ति खे आपणा काम कृष्णा री खातर करना चैं।

नारीणां वैदिको धर्मः पातिव्रत्यं हि केवलम्।
जगत्पतिगृहं नार्यः प्राप्नुवन्त्यसंशयम्।।45।।

हिन्दी– स्त्रियों का वैदिक धर्म पातिव्रत्य मात्र है। इससे वे निस्संदेह कृष्णलोक को प्राप्त होती हैं।

बघाटी हिमाचली– ज्वानसा रा वैदिक दर्म पतिव्रता मात्र असो। एनी साए से कृष्णलोका खे प्राप्त होय जाओ।

गोविन्दः प्रेमसिन्धुस्तु प्रेमेशं तं तु भावयेत्।
यथाभावस्तथा कर्म यथा कर्म तथा फलम।।46।।

हिन्दी– भगवान् कृष्ण प्रेम के सागर हैं। उन प्रेमेश्वर का ध्यान

करना चाहिए। जैसा जिसका भाव होता है वैसा उसका कर्म होता है। जैसा जिसका कर्म होता है वैसा उसका फल होता है।

बघाटी हिमाचली– भगवान् कृष्ण प्रेमा रे सागर असो। तेस प्रेमेश्वरा रा द्यान करना चैं। जीशा जसरा बाव ओ तीशा जा तेसरा कर्म असो। जीशा जसरा कर्म ओ तीशा तेतेरा फल ओ।

मृत्युर्ममत्व भावेन अममत्वेन चामृतम्।
कृष्णस्याहं मदीयः सः सुमन्त्र अमृतप्रदः।।47।।

हिन्दी– ममत्व के भाव का नाम मृत्यु और अममता के भाव का नाम अमृत है। मैं कृष्ण का हूँ और कृष्ण मेरे हैं, यह श्रेष्ठ मन्त्र अमरतादायक है।

बघाटी हिमाचली– ममता रे भावा रा नाँव मृत्यु और अममता रे भावा रा नाँव अमृत असो। आऊँ कृष्णा रा असू और कृष्ण मेरे असो, इ श्रेष्ठ मन्त्र अमरतादायक असो।

एक एव सदा कृष्णः द्विधा सः प्रेमहेतवे।
एकस्यैकेन किं प्रेम द्वितीयं तेन कल्पितम्।।48।।

हिन्दी– भगवान् एक है, एक से अधिक वह प्रेम करने हेतु बने हुए हैं। एक का एक से कैसा प्रेम, इसलिए उन्होंने दूसरे की कल्पना की।

बघाटी हिमाचली– कृष्ण एक असो, एकी दे सखड़े से प्रेमा री खातर बन रोए। एकी रा एकी साए प्रेम कीशा, एनी खे तीणिए दूजे रि कल्पना कि।

यच्छति भगवान् बुद्धिं युद्धायायाति नैव सः।
युद्धमसुरभावेन करणीयं स्वकर्मणा।।49।।

हिन्दी– भगवान् हमको बुद्धि देते हैं, वे हमारी ओर से युद्ध करने के लिए नहीं आते। अपने सहज कर्म के द्वारा असुर भाव के विरुद्ध युद्ध करना ही चाहिए।

बघाटी हिमाचली– भगवान् आदमी के बुद्धि देओ, से म्हारे कनारे दे युद्ध करनि नी आओंदे। आपणे कर्मा साए असुरभावा साए युद्ध करना

ही चैं।

कण्टकं लघु कामस्तु गोविन्दः दीर्घकण्टकम्।
लघुं दीर्घेण निष्कास्य कृष्णप्रेमी लभेत् सुखम्।।50।।

हिन्दी– काम की भावना छोटा कान्टा है और भगवान् बड़ा कान्टा। कृष्ण का प्रेमी बड़े कान्टे से छोटे कान्टे को निकालकर सुख पाता है।

बघाटी हिमाचली– कामभाव छोटा अरो कृष्णभाव बड़ा कान्टा असो। कृष्ण प्रेमी बड़े कान्टे साय छोटे कान्डे खे खरिण्ड रो सुख प्राप्त करो।

ब्रह्मभावं विना जीवः भ्रमति बहुयोनिषु।
कृष्णभावयुतो जीवः योनिचक्राद् विमुच्यते।।51।।

हिन्दी– परमात्मभाव को प्राप्त किए बिना जीवात्मा अनेक योनियों में भ्रमण करता रहता है। कृष्ण भाव को प्राप्त करने वाला जीवात्मा कीटादि विविध योनियों के चक्र काटने से बच जाता है।

बघाटी हिमाचली– परमात्म भावा दे बिना जिउ भौत सारी योनी माँएं फिरया करो। कृष्ण भावा खे प्राप्त करनि आला जिउ सबी योनी रे चक्र काटणि दे छुट जाओ।

कृष्णतरङ्गिणीरूपा राधा जीवात्मिका प्रिया।
आह्लादिन्या तया कृष्णः आह्लाद्यते दिवानिशम्।।52।।

हिन्दी– कृष्ण की प्रिया जीवात्मा राधा भगवान् कृष्ण की तरङ्ग रूपा है। वह आह्लादिनी शक्ति हर समय कृष्ण को आनन्द प्रदान करती रहती है।

बघाटी हिमाचली– भगवान् कृष्णा रि प्यारि जीवात्मा राधा कृष्ण जी रि लहर रूप असो। से आनन्द देणि आलि शक्ति हर टैम कृष्णा खे आनन्द देन्दि रौ।

कृष्णस्त्वं सर्वजीवेषु मायया मोहकारणम्।
मोहितोऽज्ञः गुणैर्लोके त्वां कदापि न विन्दति।।53।।

हिन्दी– आप कृष्ण सब जीवों में माया रूप से मोह के कारण

बनते हैं। तीन गुणों के द्वारा मोहित अज्ञानी जीव आपको कभी प्राप्त नहीं होता।

बघाटी हिमाचली— तूमे कृष्ण सबी जिउआ माँएं माया शक्ति साय मोह रे कारण असो। तिं गुणा साय मोहित अज्ञानि आदमि तूमा खे कबे बि प्राप्त नी ओंदा।

परमात्मा प्रभुः कृष्णः ब्रह्मादीनामपि गुरुः।
प्रेमिणे आत्मदानार्थं वेदशास्त्राणि निर्ममे।।54।।

हिन्दी— भगवान् कृष्ण परमात्मा हैं और ब्रह्मादि समस्त देवताओं के गुरु हैं। इन्होंने अपने प्रेमी भक्तों को आत्मदान करने के लिए वेदों और शास्त्रों की रचना की है।

बघाटी हिमाचली— भगवान् कृष्ण परमात्मा असो अरो ब्रह्मादि देवते रे गुरु बि असो। ईने आपणे प्रेमी बगता खे आत्मदान करनि खे वेदा अरो शास्त्रा रि रचना कर राखि।

भोगेष्वेव रमन्ते हा असुराः भोगवादिनः।
वेदाज्ञाविरताः सर्वे पतन्त्यसुरयोनिषु।।55।।

हिन्दी— हाय, भोगवादी असुर खाने-पीने और मौज उड़ाने में लगे रहते हैं। वेदाज्ञा के उलटे काम करने वाले ये सब असुर योनियों में गिरते हैं।

बघाटी हिमाचली— हाय, बोगवादि असुर खाणि-पिणि अरो मौज ड्वावणि माँए मस्त रौ। वेदा री आज्ञा दे उलट काम करनि आले इ सब असुर योनी माँएं पड़ो।

त्वमेव सर्वजीवानां हृत्पद्मसु विराजसे।
तत्रस्थं ये द्विषन्ति त्वां तानसुरान्निहन्सि त्वम्।।56।।

हिन्दी— भगवन्! आप ही समस्त जीवों के हृदय कमलों में विराजमान रहते हैं। वहाँ स्थित आपसे जो द्वेष करते हैं उन असुरों का तुम नाश करते हो।

बघाटी हिमाचली— तूमे सबी जीवा रे हृदय कमला माँएं विराजमान रया करो तेती रौणि आलै तूमा साय जो ईर्ष्या करो तीना असुरा रा तूमे

विनाश करो।

स्वस्वकर्मरताः लोके ये ये सन्तीह मानवाः।
तेषु तेषु सदाऽस्माकं भवतु प्रेम शाश्वतम्।।57।।

हिन्दी– संसार में जो जो मनुष्य अपने अपने स्वभावगत कर्मों में रत रहते हैं उन उनमें हमारा नित्य प्रेम बना रहे, यह प्रार्थना है।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ माँएं जो जो आदमि आपणे आपणे स्वभावा रे कामा माँएं लगे होंदे रौ, तीना साय मारा प्यार सदा बणा रौ, इ विनति असो।

आत्मवत्सर्वभूतानां दुःखं पश्यति यो जनः।
कृष्णानुकम्पया तस्य जायते सर्वमङ्गलम्।।58।।

हिन्दी– सभी प्राणियों के दुःखों को जो अपने दुःख के समान अनुभव करता है, भगवान् कृष्ण की कृपा से सभी प्रकार से उसका कल्याण हो जाता है।

बघाटी हिमाचली– सबी प्राणी रे दुःखा खे जो आपणे दुःखा रे समान समजो, कृष्ण जी री कृपा साय तेसरा सबी बाते भला ओय जाओ।

शक्तिहीनः शवः प्रोक्तः सुमुनिभिः पुनः पुनः।
राधानाम जपेन्नित्यं शिवत्व प्राप्ति हेतवे।।59।।

हिन्दी– शक्तिहीन मनुष्य को विचारकों ने शव के समान बताया है इसलिए शक्तिमान शिव की प्राप्ति के लिए नित्य जीवात्मशक्ति राधा का नाम जपते रहना चाहिए।

बघाटी हिमाचली– शक्तिहीन आदमि विचारके शवा री तरह बताय राखा, एनी खे शक्तिमान् शिवा री प्राप्ति री खातर, रोज राधा जीवात्मा रा नाँव जपणा चैं।

चिन्तनं विषयाणां हि विषयासक्तिवर्धकम्।
चिन्तनञ्चैव कृष्णस्य विषयासक्तिनाशकम्।।60।।

हिन्दी– सांसारिक विषयों का चिन्तन करने से उन विषयों के प्रति आसक्ति बढ़ती है परन्तु कृष्ण जी का चिन्तन करने से उस आसक्ति

का नाश हो जाता है।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ री चीजा रा चिन्तन करदे रौणि साए तीनी चीजा रे प्रति आसक्ति बढ़ो पेरि भगवाना रा चिन्तन करदे रौणि साय तींया आसक्ति रा नाश ओय जाओ।

राम रामेति रामेति कृष्णनाम मनोरमम्।
यस्तज्जपति नित्यं तु तस्यानन्दो न नश्यति।।61।।

हिन्दी– राम राम राम, यह कृष्ण का ही एक सुन्दर नाम है। जो इसको हर रोज जपता है उसका ईश्वरीय आनन्द कभी नष्ट नहीं होता।

बघाटी हिमाचली– राम राम राम, इ कृष्णा रा ई एक सुन्दर नाँव असो। जो एते रोज जपो तेसरा बागवत आनन्द कबे नष्ट नी ओंदा।

राधादेहस्य रूपांशाः गोप्यः सौन्दर्यराशयः।
कृष्णश्रान्तिहराः नित्यं विस्मृत्य नामरूपकम्।।62।।

हिन्दी– सुन्दरता की भण्डार गोपियाँ राधा के शरीर की ही अंश रूप हैं, ये नित्य अपने नाम और रूप को भूलकर विश्वेश्वर कृष्ण की सृष्टि के कार्यों से हुई थकान का हरण करती रहती हैं।

बघाटी हिमाचली– सुन्दरता री बन्डार गोपी राधा रे शरीरा री ही अंश रूप असो, इ रोज आपणा नाँव अरो शकल बुल रो पणमेसरा कृष्णा रे दुनियाँ रे कामा साय आए दे खड़बे मटे या करो।

गायत्री चित्स्वरूपा त्वं विश्वरूपमयी हि या।
सविज्ञानं जपित्वा तां कृष्णानन्देन मोदते।।63।।

हिन्दी– भगवन्! आप वैश्विक चेतनास्वरूप गायत्री माता हैं। उस मन्त्र का उसके अर्थ के ज्ञान के साथ जप करके मनुष्य कृष्ण के आनन्द से प्रसन्न रहता है।

बघाटी हिमाचली– हे कृष्ण! तूमे विश्व रि चेतनास्वरूप गायत्री माता असो। तेते रे रहस्यज्ञाना साथी गायत्री मन्त्रा रा जप कर रो आदमि कृष्णा रे आनन्दा साए आनन्दित रौ।

नित्यपूज्या जगन्माता नित्या कृष्णसहायिका।
सर्वगतो यथा कृष्णः तथेयं तस्य सङ्गिनी।।64।।

हिन्दी– नित्य पूज्या जगन्माता भगवान् कृष्ण की नित्य सहायिका हैं। जिस प्रकार कृष्ण सर्वगत हैं। उसी तरह ये भी उनके सङ्ग सर्वगत हैं।

बघाटी हिमाचली– नित्य पूज्य जगन्माता कृष्णा रि नित्य सहायिका असो। जीशे भगवान् सबी आदमी माँएं रौ तीशी इ बि तीना साथे सबी आदमी माँएं रौ।

त्वं पञ्चकं च भद्रा च मुहूर्तं च शुभाशुभम्।
चन्द्रश्चैव चतुर्थस्तु अष्टमः द्वादशस्तथा।।65।।

हिन्दी– भगवन् आप ही पञ्चक, भद्रा, शुभाशुभ मुहूर्त्त तथा चौथे, आठवें और बारहवें चन्द्रमा हो।

बघाटी हिमाचली– भगवन् तूमे ही पांजग, बद्रा, बूरा सौणा मुर्त अरो चौथा, आठवा तथा बारवा चन्द्रमा असो।

स्वभावजेन कार्येण कृष्णं हि लभते नरः।
अस्वभावजकार्येण जीवस्य पतनं ध्रुवम्।।66।।

हिन्दी– अपना स्वाभाविक काम करने से मनुष्य भगवान् कृष्ण को प्राप्त करता है लेकिन अस्वाभाविक काम करने से उसका पतन निश्चित है।

बघाटी हिमाचली– आपणा स्वाभाविक काम करनि साय आदमि भगवाना खे प्राप्त करो पेरि अस्वाभाविक कामा साय तेसरा पतन निश्चित असो।

अजोऽपि जायसे नित्यं विश्वजीवेषु दृष्यसे।
जीवेभ्यः प्रेमदानार्थं मायया जायसे द्विधा।।67।।

हिन्दी– आप अजन्मा होकर भी नित्य पैदा होते हैं और संसार के जीवों में दिखाई देते हैं। आप जीवों को प्रेमदान देने के लिए अपनी माया की शक्ति से एकाधिक रूप धारणा करते हैं।

बघाटी हिमाचली– तूमे अजन्मा ओए रो बि रोज जन्म लौ अरो दुनिया रे प्राणी माँएं देखुओ। तूमे जीवा खे प्रेमदान देणि री खातर आपणी माया री शक्ति साय बहुत सारे रूप दारण करया करो।

गोविन्दस्य हि दिव्यत्वं तन्मनोगतमेव च।
गोपिका एव जानन्ति अन्ये नैव तु मादृशाः।।68।।

हिन्दी– भगवान् कृष्ण की अलौकिकता अरो उनके मन की बात को उनकी प्रेमिकाएं गोपियां ही जान सकती हैं, अन्य मेरे जैसे लोग नहीं जान सकते।

बघाटी हिमाचली– भगवान् कृष्णा रि अलौकिकता अरो तीना रे मना रि बात तीना री प्रेमिका गोपी ही जाण सको, दूजे मां जीशे जे लोग नी जाण सकदे।

क्रीडोपकरणं राधा कृष्णस्य परमात्मनः।
प्रियतमप्रसादाय हृदयेन समर्पिता।।69।।

हिन्दी– जगन्माता श्री राधा जी परमात्मा कृष्ण की खेल की वस्तु हैं जो कि अपने प्रियतम जगत्पति को प्रसन्न करने के लिए समर्पित हैं।

बघाटी हिमाचली– भगवती माता राधा जी भगवान् श्री कृष्णा रे खेलणि रि चीज असो जो आपणे सबी दे प्यारे जगत्पति खे प्रसन्न करनि री खातर समर्पित असो।

वेदगुरुश्च गौर्यादेः सर्वदुःखान्तकः शिवः।
कुशासनान्तकर्ता त्वं परशुराम एव च।।70।।

हिन्दी– आप ही पार्वती माता आदि के वेदगुरु और सर्व दुःखनाशक शिव हैं तथा आप ही बुरे शासन का अन्त करने वाले भगवान् परशुराम जी हैं।

बघाटी हिमाचली– तूमे ही पार्वती माता आदि रे वेदगुरु, सर्व दुःखनाशक शिव अरो तूमे ही बूरे शासना रा अन्त करनि आले भगवान् परशुराम जी असो।

त्वदीयानुग्रहो यस्मिन् सुखं तस्य सुनिश्चितम्।
तच्चैव नास्ति यस्मिन् तु दुःखं तस्य सुनिश्चितम्।।71।।

हिन्दी– जिस मनुष्य पर आपकी कृपा होती है उसको सुख मिलना निश्चित है और जिस पर आपकी कृपा नहीं होती उसका दुःखी होना निश्चित है।

बघाटी हिमाचली– जस आदमी पाँएं तारि कृपा रौ तेसके सुख मिलना निश्चित असो अरो जस पाँएं कृपा नी ओंदि तेसरा दुःखी होणा निश्चित असो।

देहोऽहं जीवचिन्तनं ब्रह्माण्डोऽहं च ब्रह्मणः।
अशुद्धं प्रथमं तत्र शुद्धं हि केवलं परम्।।72।।

हिन्दी– जीवात्मा सोचता है कि मैं शरीर हूँ और परमात्मा सोचता है कि मैं ब्रह्माण्ड हूँ। इनमें पहले प्रकार की सोच अशुद्ध परन्तु दूसरी प्रकार की सोच शुद्ध है।

बघाटी हिमाचली– जीवात्मा सोचो जे आऊँ शरीर असू अरो परमात्मा सोचो जे आऊँ ब्रह्माण्ड असू। एती पैली किश्मा रि सोच अशुद्ध पेरि दूजी किश्मा रि सोच शुद्ध असो।

ज्योतिषामपि ज्योतिस्त्वं हृत्कमले प्रकाशसे।
मायाचक्रं श्रृतः लोकः कथं कुर्याद्धि दर्शनम्।।73।।

हिन्दी– आप ज्योतियों की भी ज्योति बनकर सबके हृदय कमलों में प्रकाशित होते हैं। माया के चक्र में पड़े लोग उसके दर्शन कैसे करें?

बघाटी हिमाचली– तूमे जोति रि बि जोत बण रो सबी रे हृदय कमला माँएं प्रकाशित ओणि लग रोए। माया री शरणा माँए पड़े दे आदमि तेते रे दर्शन कीशे करो?

गोविन्दप्रेमिकाः गोप्यः प्रियतमा च राधिका।
ब्रह्माण्डनायकः यस्याः हि मूलप्रकृतेर्वशे।।74।।

हिन्दी– गोपियां भगवान् कृष्ण की प्रेमिकाएं हैं और राधा जी उनकी प्रियतमा हैं जो कि मूल प्रकृति हैं तथा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के नायक जिनके वश में रहते हैं।

बघाटी हिमाचली– गोपी भगवान् कृष्णा री प्रेमिका असो अरो राधा जी तीना रि प्रियतमा असो जो मूल प्रकृति असो अरो सारे ब्रह्माण्डा रा मालक जीनां रे बसा माँएं रौ।

दुष्टतमो जनः श्रेष्ठः कृष्णप्रेम परायणः।
प्रभु प्रेमविहीनस्तु वेदज्ञोऽपि न शस्यते।।75।।

हिन्दी– कृष्ण जी का प्रेमी अगर सबसे दुष्ट आदमी भी है तो भी अच्छा है परन्तु कृष्ण प्रेम विहीन आदमी वेदों का ज्ञाता भी प्रशंसनीय नहीं है।

बघाटी हिमाचली– भगवान् कृष्णा रा प्रेमि अति दुष्ट आदमि बि अच्छा ओ पेरि कृष्णप्रेमरहित आदमि वेदा रा ज्ञाता बि प्रशंसनीय नी ओंदा।

जीवसेवा भवत्सेवा सर्व पूजा तवैव च।
साधुहिंसा यदा जाता धृतं शस्त्रं त्वया तदा॥76॥

हिन्दी– सब प्राणियों की सेवा आपकी ही सेवा है और सबकी पूजा आपकी ही पूजा है। जब जब संसार में सज्जनों की हिंसा हुई तब तब आपने शस्त्र धारण किया है।

बघाटी हिमाचली– सबी प्राणी रि सेवा त्हारी सेवा असो और सबी देवते रि पूजा त्हारि पूजा ही असो। दुनियाँ माँएं जबे जबे अच्छे आदमी पाँए अत्याचार ओए तबे तबे तूमे शस्त्र दारण किया।

राधेशः सुख रूपो हि बहिरन्तः प्रकाशसे।
प्रेम्णा त्वं प्राप्यसे लोके नैवान्यथा तु गृह्यसे॥77॥

हिन्दी– आप भगवान् सुखरूप हैं तथा हमारे बाहर और अन्दर प्रकाशित होते रहते हैं। आप संसार में प्रेम से प्राप्त होते हैं अन्य किसी उपाय से नहीं।

बघाटी हिमाचली– तूमे भगवान् सुखरूप असो अरो बारे अरो बीतरे सारे प्रकाशित ओन्दे रौ। तूमे दुनियाँ माँएं बस प्यारा साए ई मीलो बाकी ओरी तरीके साय नी।

गोविन्दः परमानन्दः न विषयेषु लभ्यते।
प्रेम्णैव सः सुलभ्यस्तु शरणं तमवाप्नुयात्॥78॥

हिन्दी– भगवान् कृष्ण परमानन्दरूप हैं, सांसारिक वस्तुओं के अन्दर नहीं मिलते। वे प्रेम से ही सरलता से मिलते हैं अतः उनकी शरण में जाना चाहिए।

बघाटी हिमाचली– भगवान् परमानन्दरूप असो, दुनियाँ री चीजा

माँएं से नी मिलदे। से प्रेमा साए ही सुखा साए मीलो, एनी खे तीना री शरणा माँएं जाणा चैं।

शक्तः त्यक्तुं स्वभावं न स्वीयं प्रज्ञानवानपि।
जीवाः गुणनिबद्धास्तु समाचरन्ति दासवत्॥79॥

हिन्दी– संसार में बुद्धिमान् व्यक्ति भी अपने स्वभाव को नहीं त्याग सकता, प्राणी तीन गुणों से बन्धे हुए उनके दास की तरह काम करते हैं।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ माँएं विवेकि आदमि बि आपणा स्वभाव नी छाड सकदे, प्राणि तिं गुणा साए बन्दे दे तीना रे गुलामा री तरह काम करो।

प्रियतम प्रसादार्थं गोविन्दप्रेमिजीवनम्।
उद्धवः प्रेम गोपीनां दृष्ट्वा ताभ्यो ननाम हि॥80॥

हिन्दी– कृष्णप्रेमी का जीवन केवल अपने प्रियतम कृष्ण की प्रसन्नता के लिए होता है। उद्धव जी ने जब गोपियों का कृष्णप्रेम देखा तो वे उनके सामने नतमस्तक हो गए थे।

बघाटी हिमाचली– कृष्णप्रेमी रा जीवन आपणे प्रियतमा री प्रसन्नता री खातर ओ। उद्धवे जबे गोपी रा कृष्णप्रेम देखा तो से तीनी सामणे नतमस्तक ओए गोआ था।

सूर्यरश्मिः महारश्मिः शरीरेष्वपि संस्थिता।
यावदियं स्थिता देहे प्रेम्णैवानुभवेत् जनः॥81॥

हिन्दी– सूर्य की किरण भगवान् की ही किरण है जो शरीरों में भी विद्यमान् है। जब तक यह शरीर में स्थित है इसका प्रेमपूर्वक अनुभव करना चाहिए।

बघाटी हिमाचली– सुरजा रि किरण भगवाना री ही किरण असो जो शरीरा रे बीचा माँएं बि स्थित असो। जाँव तैं इ शरीरा माँएं असो ताँव तैं एनी रा अनुभव करना चैं।

कृष्णावास्यमिदं सर्वं लोके यदनुभूयते।
प्रेम्णेह तमुपासस्व प्रेमसर्वस्वदायकम्॥82॥

हिन्दी– संसार में जो कुछ भी अनुभव किया जाता है उसके अन्दर श्री कृष्ण का आवास है। प्रेम से उनकी उपासना करनी चाहिए क्योंकि प्रेम ही सर्वस्व देने वाला है।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ माँएं जो कें बि अनुभव करुओ तींदा भगवान् कृष्णा रा आवास असो। प्रेमा साए तेसरि उपासना करनि चैं कोए कि प्रेम ही हामा खे सब ठेंव देणि आला असो।

मायामिह परित्यज्य वंशीनिमन्त्रणं श्रृणु।
मधुरं च प्रियं दिव्यं आयान्तं कृष्णलोकतः॥83॥

हिन्दी– इस संसार में माया की गुलामी को त्यागकर वंशी का निमन्त्रण सुनो जो कृष्णलोक से आ रही भगवान् की मधुर और प्रिय आवाज है।

बघाटी हिमाचली– इयां दुनियाँ माँएं माया री गुलामी खे छाड रो बंसरी रा न्योंदा शुणना चैं जो कृष्णलोका दे आवणि लगि दि भगवाना रि मिठि आवाज असो।

यथा विविधकुम्भेषु महाकाशः पृथक् पृथक्।
सर्वजीवेषु चिद्रूपः संदृश्यसे तथैव त्वम्॥84॥

हिन्दी– जैसे बहुत से घड़ों के अन्दर एक ही महान् आकाश अलग अलग भरा होता है वैसे ही सभी प्राणियों के अन्दर आप चेतना रूप से अलग अलग दिखाई देते हैं।

बघाटी हिमाचली– जीशा भौत सारे गड़े माँएं एक ही बड़ि सारि गैण जुदि जुदि बरि दि असो तीशे ई तूमे सबी प्राणी माँएं चेतना रूपा माँएं बसे दे असो।

प्रभुः ददाति कार्यं न फलं तस्य कदापि च।
करोति प्रकृतिः सर्वं गोविन्दस्तु निरीक्षकः॥85॥

हिन्दी– भगवान् किसी को न तो कर्म देते हैं और न उसका फल। यह सब कुछ प्रकृति करती है, भगवान् कृष्ण तो केवल निरीक्षक हैं।

बघाटी हिमाचली– भगवान् ना तो कसके कर्म बांडदे अरो ना तेते रा फल। इ सब ठेंव तो प्रकृति करो, भगवान् तो केवल देखणि आले असो।

देहजीवात्मनो भेदः गुणानां सीम्नि वर्तते।
दिव्ये तु चिन्मये देहे भेदलेशो न दृष्यते।।86।।

हिन्दी– शरीर और आत्मा का भेद केवल गुणों के दायरे में होता है, चेतनामय अलौकिक शरीर में इन दोनों में कतई भी भेद नहीं है।

बघाटी हिमाचली– शरीरा रा अरो आत्मा रा फरक बस तिं गुणा रे दायरे माँएं ओ, चेतनामय अलौकिक शरीरा माँए ईना दोए माँएं कोई फरक नी आथि।

परमेशः सदा मुक्तः गुणानां हि प्रभावतः।
गोविन्दप्रेम विज्ञाय परानन्द स्तु जायते।।87।।

हिन्दी– भगवान् कृष्ण तीन गुणों के प्रभाव से सदा मुक्त रहते हैं। भगवान् कृष्ण के प्रेम के रहस्य को जानकर सर्वोत्तम आनन्द प्राप्त होता है।

बघाटी हिमाचली– भगवान् तिं गुणा रे असरा दे सदा मुक्त रौ। भगवान् कृष्णा रे प्रेमा रे रहस्य खे जाण रो सर्वोत्तम आनन्द मी लो।

कृष्णाज्ञाः वेदशास्त्रोक्ताः येनापि मस्तके धृताः।
पार्थगोप्यादिवल्लोके कृष्णलोकं शुभं गताः।।88।।

हिन्दी– भगवान् की वेद–शास्त्रों में दी गई अज्ञाएं जिन्होंने भी पालन की वे अर्जुन और गोपी आदि भक्तों की तरह बैकुण्ठ लोक को प्राप्त हुए हैं।

बघाटी हिमाचली– भगवाना री वेद–शास्त्रा माँएं दीती दी आज्ञा जीने बि पालन की से अर्जुन अरो गोपी बगैरा बगता री तरह बैकुण्ठ लोका खे प्राप्त ओय गोए।

जीवाः सर्वे गुणाधीनाः कार्यं कुर्वन्ति तद्वशाः।
कुर्वन्कार्यं हि कृष्णाय नित्यानन्देन मोदते।।89।।

हिन्दी– दुनियाँ के सारे जीव तीन गुणों के अधीन होकर काम करते हैं परन्तु जो कृष्ण के लिए काम करते हैं वे वैकुण्ठवत् आनन्द प्राप्त करते हैं।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ रे सारे जीव तिं गुणा रे अधीन काम

करो पेरि जो भगवाना रा काम करो तीना खे वैकुण्ठा जीशा जा आनन्द प्राप्तओ।

पापः जीवबलिः लोके जगत्पितुस्तु पूजने।
पिता खादति कस्येह स्वप्राणप्रियमात्मजम्॥90॥

हिन्दी– परमपिता परमेश्वर को पूजने में जो प्राणियों की बलि देते हैं वह पाप है। भला इस संसार में ऐसा कौन पिता है जो अपने प्रिय पुत्र की बलि देकर उसको खाता हो।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ रे बावा भगवाना रे पुजणा माँए जो जीव–जन्तु रि बलि देओ से पाप करो। दुनियाँ माँएं ईशा कुण बाव असो जो आपणे बगेरा रि बलि दे रो तेनी खाओ।

जीवात्मनस्तु कल्याणं कृष्णोपदेशतः ध्रुवम्।
तदनुसरणं कृत्वा को नैव मुक्तिभाग्भवेत्॥91॥

हिन्दी– कृष्ण जी के उपदेशों का पालन करने से मनुष्यों का अवश्य कल्याण होता है, उन उपदेशों का अनुसरण करने से भला कौन मुक्ति को प्राप्त नहीं कर सकता।

बघाटी हिमाचली– कृष्ण जी रे उपदेशा रा पालन कर रो आदमी रा जरूर कल्याण ओ, तेते रा पालन कर रो भला कसके मुक्ति नी मिल सकदि।

मायया दृश्यसे नैव नाटकेषु नटो यथा।
चित्तचौरं हि जीवानां नौमि त्वां प्रकृतेः परम्॥92॥

हिन्दी– भगवान् आप अपनी माया के अन्दर उसी प्रकार नहीं दिखाई देते जैसे नाटकों के अन्दर अभिनेता। आप मुनष्यों के मनों के चोर हैं। प्रकृति में अनासक्त रहने वाले आपको मैं प्रणाम करता हूँ।

बघाटी हिमाचली– भगवान्! तूमे माया दे बीतरे तीशे ई नी देखुदे जीशा नाटका माँएं स्वांगि। तूमे आदमी रे मना रे चोर असो। प्रकृति माँएं अनासक्त रौणि आले तूमा खे आऊँ डाल करू।

कर्मिकर्म स्वयं कृत्वा दयावान्भगवान्प्रभुः।
श्रेयस्तेभ्यः ददातीह तेषां सहजकर्मणाम्॥93॥

हिन्दी– अपने हर भक्त कर्मकर्ता का कर्म दयालु भगवान् स्वयं करके उसके सहज कर्म का श्रेय उन्हीं को प्रदान करते हैं।

बघाटी हिमाचली– आपणे काम करनि आले हर प्रेमी रा काम दयालु भगवान् आपि कर रो तेसरे सहज कामा रा श्रेय तीना खे ई प्रदान करो।

सेवा हि यत्नतः कार्या सुपात्राणां स्वसाधनैः।
ममत्वं विषयैः साकं येनेहैव विनश्यतु।।94।।

हिन्दी– अपने प्राप्त साधनों से सुपात्र लोगों की प्रयत्न से सेवा करनी चाहिए जिससे उन सांसारिक साधनों के प्रति हमारा मोह नष्ट हो जाए।

बघाटी हिमाचली– आपणे प्राप्त किए ओंदे साधना साए सुपात्र लोका रि सेवा करनि चैं जनी साए तीना सांसारिक सादना रे प्रति म्हारा मोह नष्ट ओय जाओ।

कृष्णप्रेमास्ति यस्येह ब्राह्मणः निश्चयेन सः।
नैव यस्य हरिप्रेम शूद्रस्तु निश्चयेन सः।।95।।

हिन्दी– जो भगवान् कृष्ण से प्रेम करता है वह निश्चय ही ब्राह्मण है। जिसको भगवान् कृष्ण से प्रेम नहीं है वही वास्तव में शूद्र है।

बघाटी हिमाचली– जो भगवाना कृष्णा साए प्यार करो से निश्चय ही ब्राह्मण असो। जो कृष्णा साए प्रेम नी करदा से निश्चय साए शूद्र असो।

राधादि शक्तिभिः साकं कृष्णः लोके प्रजायते।
क्रूरानधर्मिणो हत्वा धर्मं संस्थापयन्ति च।।96।।

हिन्दी– भगवान् अपनी राधा आदि शक्तियों को साथ लेकर संसार में अवतार लेते हैं और क्रूर अधर्मियों का नाश करके धर्म को सही स्व रुप में प्रदान करते हैं।

बघाटी हिमाचली– भगवान् आपणी राधा बगैरा शक्ति खे साथी लय रो दुनियाँ माँए अवतार लौ अरो क्रूर अदर्मी खे मार रो दर्मा खे सही स्वरुप प्रदान करो।

प्रभुप्रियतमा वृन्दा सनैवेद्यं निवेदिता।
गोवर्धनाय कृष्णेन येन हि सः प्रसीदति।।97।।

हिन्दी– भगवान् कृष्ण जी ने स्वयं भगवान् गोवर्धन की पूजा में भगवान् की प्रियतमा तुलसी को नैवेद्य के साथ चढ़ाया जिससे भगवान् गोवर्धन प्रसन्न होते हैं।

बघाटी हिमाचली– भगवान् कृष्णे आपि भगवान् गोवर्धना री पूजा माँएं भगवाना रि प्रियतमा तुलसि चड़ावि जनी साए गोवर्धन प्रसन्न ओय जाओ।

ब्रह्माण्डानि बहूनीह ब्रह्माणोऽपि तथैव हि।
पृथक् पृथक् यमास्तेषां गोविन्दस्त्वेक एव हि॥98॥

हिन्दी– इस संसार में असंख्य ब्रह्माण्ड हैं और क्रमशः उनके ब्रह्मा भी उन्हीं ब्रह्माण्डों की तरह ही हैं। उन सभी के अपने अपने यमराज भी हैं परन्तु उन सबके भगवान् कृष्ण जी एक ही हैं।

बघाटी हिमाचली– इयाँ दुनियाँ माँए नगिणत ब्रह्माण्ड असो। तीना रे ब्रह्मा बि तीना ब्रह्माण्डा री तरह अलग अलग असो। तीना सबी रे यमराज बि आपणे आपणे असो पेरि सबी रे भगवान् कृष्ण जी एक ही असो।

महाविष्णुः महालक्ष्मीः परमात्मस्वरूपिणौ।
ब्रह्माण्डानीह पुष्णन्ति कुर्वन्ति चैव रक्षणं॥99॥

हिन्दी– महाविष्णु जी और महालक्ष्मी जी परमात्मा के रूप हैं। ये ही ब्रह्माण्ड का पोषण और रक्षण करते हैं।

बघाटी हिमाचली– महाविष्णु जी अरो महालक्ष्मि जी परमात्मा रे रूप असो, ये ई ब्रह्माण्डा रा पोषण अरो रक्षण करया करो।

आनन्दसागरस्तत्र नित्यधाम्नि सदा परे।
गोविन्दो हि स्वयंज्योतिः सशक्तिकः प्रकाशते॥100॥

हिन्दी– भगवान् के परम धाम में आनन्द का सागर भरा है। वहाँ स्वयंप्रकाश भगवान् कृष्ण जी अपनी समस्त शक्तियों के साथ प्रकाशित हुए रहते हैं।

बघाटी हिमाचली– भगवाना रे परम धामा माँएं आनन्दा रा सागर बरा दा असो। तेती आफी प्रकाशित ओणि आले भगवान् कृष्ण आपणी

सबी शक्ति साय प्रकाशित ओए दे रौ।

मदीयं कृष्णकार्यं मत्वा श्रान्तिर्न जायते।
का भारं मन्यते लोके क्रोडस्थं जननी शिशुम्।।101।।

हिन्दी– भगवान् कृष्ण का काम मेरा है, ऐसा मानकर मैं कभी थकता नहीं हूँ। दुनियाँ मैं कौन माँ अपनी गोद में रखे बच्चे को भार मानती है।

बघाटी हिमाचली– भगवाना रा काम मेरा असो, ईशा मान रो आऊँ कबे थकदा नी आथि। दुनियाँ माँएं कुणजि मा आपणे फड़के दे राखे दे बच्चे खे बार मानो।

लालनं ताडनं मातुः स्वप्रिये बालके यथा।
तद्वदेव तु कृष्णस्य बालके मनुजे सदा।।102।।

हिन्दी– जिस प्रकार से एक माँ अपने प्यारे बच्चे से प्यार और पिटाई दोनों करती है उसी प्रकार भगवान् कृष्ण भी अपनी प्रिय प्रजा मनुष्य से वैसा ही व्यवहार करते रहते हैं।

बघाटी हिमाचली– जिशि एक मा आपणे प्यारे बच्चे साय प्यार अरो पटाइ दोनों ठेंव करो तीशा ई भगवान् कृष्ण जी बि आपणे प्यारे जाए ओंदे आदमी साए तीशा ई बर्ताव करो।

दूरेऽहंकारभावात्त्वं वयंकारे प्रतिष्ठसि।
अहंकारं जनः तेन त्यक्तुं त्वां समुपासते।।103।।

हिन्दी– भगवान्! आप अहङ्कार भाव से दूर वयंकार भाव में रहते हैं, इसीलिए लोग अपने अहङ्कार भाव के त्याग के लिए आपकी उपासना करते हैं।

बघाटी हिमाचली– तूमे अहङ्कार बावा दे दूर वयंकार बावा माँएं रौ। तबे ई लोक आपणे अहंकार बावा रे नाशा री खातर त्हारि उपासना करो।

सुखार्थं प्रेमिणां कृष्ण नम्रः सदैव जायसे।
सनपि स्वयमीशस्तुजातः चौरश्च याचकः।।104।।

हिन्दी– आप अपने प्रेमी भक्तों को सुख देने के लिए सदैव विनम्र

बने रहते हैं। उनको खुशी बान्टने के लिए आप स्वयं भगवान् होते हुए भी चोर और भिखारी तक बन गए।

बघाटी हिमाचली– तूमे आपणे प्रेमी बगता खे सुख देणि री खातर सदा विनम्र बणे रौ। तीना खे खुशि बान्डणि खे तूमे भगवान् ओय रो बि चोर अरो भिखारि तक बण गोए।

त्वं हिन्दी संस्कृतं चैव भारतीया च संस्कृतिः।
शाकाहारः मनुष्याणां राष्ट्रवादस् तथैव च॥105॥

हिन्दी– हिन्दी और संस्कृत आदि भाषाएं तथा भारतीय संस्कृति आपका ही रूप है। आप ही शाकाहार और राष्ट्रवाद हैं।

बघाटी हिमाचली– हिन्दी, संस्कृत, भारतीय संस्कृति, शाकाहार और राष्ट्रवाद आपका ही रूप है।

योनिचक्रं सदा लोके विषयकामनावतः।
प्राप्नोतीह महाभावं त्वन्नामार्थेन संयुतः॥106॥

हिन्दी– संसार में विविध योनियों में जन्म लेने का चक्र केवल सांसारिक विषयों की कामना करने वालों के लिए है। आपके नाम और अर्थ से जुड़ा हुआ मुनष्य आपके श्रेष्ठतम आनन्द भाव को प्राप्त करता है।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ माँएं अनेक योनी माँएं जन्म लणि रा चक्कर सिर्फ दुनिया री चीजा रि कामना करनि आले खे पड़ो। त्हारे नावाँ अरो अर्था साए जूड़ा ओंदा आदमि त्हारे सर्वोत्तम आनन्द बावा खे प्राप्त ओय जाओ।

गयावेदीषु गोविन्द श्राद्धदेवस्त्वमेव च।
पितृपक्षे त्वमायासि अन्त्य संस्कार एव च॥107॥

हिन्दी– पितृतीर्थ गया की वेदियों में आप ही श्राद्ध के देवता हैं। पितृपक्ष में आप ही घरों में आते हैं। मनुष्य के अन्तिम संस्कार में भी आप ही विद्यमान रहते हैं।

बघाटी हिमाचली– पितृतीर्थ गया री वेदी माँएं तूमे ई श्रादा रे देवता असो। पितृपक्षा माँएं तूमे ई सबी रे गरा खे आओ। आदमी रे अन्तिम संस्कारा माँएं बि तूममे ई असो।

जगच्चक्रं समुत्पाद्य पालनं संहृतिस्तथा।
मायायोगेन सर्वंहि वञ्च्यन्ते येन मोहिताः॥108॥

हिन्दी– आवागमनशील संसारचक्र को पैदा करके उसका पालन और संहार आदि सब कुछ आप ही अपनी माया के सहारे करते हैं जिससे मोहित होकर लोग ठगे जाते हैं।

बघाटी हिमाचली– आवणि जाणि आले संसार चक्रा खे पैदा कर रो तेसरा पालन और नाश बगैरा सब ठेंव तूमे ई आपणी माया साय करो जनी साय मोहित ओए रो लोक ठगे जाओ।

संसारतापनाशार्थं त्वं शूली मानसे तथा॥
अहंकारस्य दाता त्वं त्वमेव मोचकस्तथा॥109॥

हिन्दी– संसार के दु:ख के नाश के लिए आप ही शूल को धारण करते हैं और मानसरोवर के पास कैलाश में रहते हैं। आप ही आदमी में अहङ्कार पैदा करते हैं और आप ही उससे छुड़ाते हैं।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ आले रे दु:खा खे मटेवणि खे तूमे ई त्रिशूल दारण करो अरो मानसरोवरा काए कैलाश पर्वता पाँएं निवास करो। तू मे ई आदमी माँय अहङ्कार पैदा करो अरो तूमे ई तेते मटेओ।

नैव रेमे यदा एकः जातस्तदा स्वपत्न्यपि।
प्रेमीप्रेमवशः कृष्णः किं किं न सम्प्रजायते॥110॥

हिन्दी– जब भगवान् कृष्ण का इस सृष्टि में अकेले मन नहीं लगा तो वे प्रेम करने के लिए स्वयं अपनी प्यारी पत्नी बन गए। भगवान् संसार में अपने प्रेमी के प्रेम के वश में होकर उस पर कृपा करने के लिए किस किस रूप को ग्रहण नहीं करते।

बघाटी हिमाचली– जबे भगवाना रा केले दे मन नी लगा तो से आपी आपणि प्यारि ज्वानस बण गोए। कृष्ण दुनियाँ माँए आपणे प्रेमी रे प्रेमा रे अधीन ओय रो तेस पाँएं कृपा करनि खे का का रूप दारण नी करदे।

प्रकृतिः चेतनाधीना कृष्णश्चेतन एव हि।
जीवश्च चेतनाधीनः शरीरं तस्य चैव हि॥111॥

हिन्दी– तीन गुण या प्रकृति चेतना शक्ति के अधीन हैं और कृष्ण स्वयं चेतन हैं। जीवात्मा भी चेतना के अधीन है और शरीर जीवात्मा के अधीन है।

बघाटी हिमाचली– प्रकृति चेतना शक्ति रे अधीन असो और कृष्ण जी आपि चेतन असो। जीवात्मा बि चेतना रे अधीन असो अरो शरीर जीवात्मा रे अधीन असो।

भगवतो हि जीवेभ्यः सममस्ति निमन्त्रणम्।
लिङ्गं चैव हि कर्माणि प्रवेशे नास्ति भेदकम्॥112॥

हिन्दी– भगवान् सभी जीवों को स्वयं से मिलने के लिए बराबर का निमन्त्रण देते हैं। मनुष्यों में वहाँ प्रवेश करने के लिए लिङ्ग और कर्म का कोई भेद नहीं है।

बघाटी हिमाचली– भगवाना कृष्णा रा सबी जीवा खे आपि साए मिलनि रा बराबर निमन्त्रण असो। आदमी खे तेती प्रवेशा री खातर ज्वानसा, ठींडा अरो कामा रा कोई फरक नी आथि।

सुलक्ष्यं भगवत्प्रेम जीवानां सर्वसम्मतम्।
विस्मृत्येह नामरूपे परमानन्दमाप्नुयुः॥113॥

हिन्दी– विद्वानों के अनुसार भगवान् से प्रेम करना सब जीवों का श्रेष्ठतम लक्ष्य है जिससे वे अपने सांसारिक नामों और रूपों को भूलकर परमानन्द को प्राप्त करें।

बघाटी हिमाचली– इयां बाता माँएं सब विद्वान् एकमत असो जे सबी जीवा रा सबी दे सुन्दर लक्ष्य भगवाना साए प्रेम करना असो जनी साए से आपणे दुनियाँ रे नाँवां अरो शक्ला खे बुल रो भगवाना रे आनन्दा खे प्राप्त कर सको।

कृष्णे मधुरभावस्तु गोपीप्रेम्णा समागतः।
नैव हि ब्रह्मभावेन गोविन्दः कान्तया जितः॥114॥

हिन्दी– भगवान् कृष्ण में जो मधुर भाव आया है वह गोपियों के उनसे प्रेम करने से आया है। उन्होंने भगवान् कृष्ण पर जो विजय पाई है वह उनको परमात्मा मानकर नहीं बल्कि उनको प्रेम करने से पाई है।

बघाटी हिमाचली– भगवान् कृष्ण जी माँएं जो मधुर भाव आय रोआ से गोपी रे तीना साय प्रेम करनि साए आय रोआ। तीनिए जो कृष्णा रा मन जित राखा से तीना खे परमात्मा मान रो नी बल्के प्रेमा रे बावा साए जित राखा।

प्रेमानन्दे लयः रासः भक्तानां प्रभुणा सह।
प्रवेशः सम्भवः यत्र ये कामतो विनिर्वृताः।।115।।

हिन्दी– भगवान् के साथ भगवान् के प्रेमियों का प्रेम के आनन्द में लीन हो जाना ही रास है जहां केवल उन्हीं लोगों का प्रवेश हो सकता है जो सांसारिक चीजों की इच्छाओं से मुक्त हो चुके हैं।

बघाटी हिमाचली– भगवाना साए भगवाना रे प्रेमी रा प्रेमा रे आनन्दा माँएं लीन ओय जाणा ही रास ओ जेती केवल तीना रा ई प्रवेश ओए सको जो दुनियाँ री चीजा री इच्छा दे मुक्त ओए दे असो।

कर्मणा मुच्यते जीवः न केवलं स्वकर्मणा।
अहं भावं परित्यज्य तस्मात्तदा विमुच्यते।।116।।

हिन्दी– जीव कर्म से मुक्त हो जाता हे पर केवल स्वकर्म से नहीं। संसार में स्वकर्म में अहङ्कार को त्यागकर ही वह मुक्त होता है।

बघाटी हिमाचली– जीव कर्मा साए मुक्त होय जाओ पेरि केवल स्वकर्मा साय नी ओंदा। दुनियाँ माँएं स्वकर्मा माँएं गमान छाड रो ई से मुक्त ओ।

परमेशप्रसादार्थं सूते विश्वं प्रकृतिः सदा।
तदर्थमेव शक्तिः सा कृष्णेन रमते शुभा।।117।।

हिन्दी– परमेश्वर की प्रिया प्रकृति अपने प्रियतम भगवान् की प्रसन्नता के लिए विश्वप्रजा को उत्पन्न करती है। इसी के लिए वह शक्ति रूपा शुभ प्रकृति भगवान् के साथ रमण करती है।

बघाटी हिमाचली– भगवत्प्रिया प्रकृति भगवाना री खुशी री खातर विश्वप्रजा खे पैदा करो। एनी री खातर से शक्तिरूपा शुभ प्रकृति भगवाना साय रमण करो।

यानि प्रकृतिकर्माणि नियतानीह जीवशः।
तैरेव परमेशस्तु जीवतः सम्प्रसीदति॥118॥

हिन्दी– जीवों के लिए जो प्राकृतिक कर्तव्य नियत किए गए हैं जीवों के द्वारा उन्हीं कर्मों को किए जाने से भगवान् प्रसन्न होते हैं।

बघाटी हिमाचली– आदमी खे जो प्राकृतिक कर्तव्य निर्धारित किए दे असो तीना कर्तव्या खे कर रो ई भगवान् प्रसन्न ओ।

धारयति धरां कृष्णः पञ्च भूतेषु संविशन्।
भूत्वा चन्द्रे रसश्चैव पुष्णाति पादपादिकान्॥119॥

हिन्दी– भगवान् कृष्ण पृथ्वी आदि पांच भूतों में प्रवेश करके इस धरती को धारण किए हुए हैं। चन्द्रमा में वे रस बनकर पेड़-पौधों को पुष्ट करते हैं।

बघाटी हिमाचली– भगवान् कृष्णे पृथ्वी आदि पाञ्जा बूता माँएं प्रवेश कर रो इ दरति दारण कर राखि। जूणि माँएं से रस बण रो पेड़-पौदे खे ताकत देओ।

गोपीनाथो जगद्रूपः सर्वतोऽक्षिशिरोमुखः।
सर्वतः पाणिपादश्च बिभर्ति सकलं जगत्॥120॥

हिन्दी– संसाररूप श्री कृष्ण सभी ओर आँख, सिर और मुँह वाले हैं। अपने सभी ओर हाथ-पैर वाले होकर वे सारे संसार का पालन करते हैं।

बघाटी हिमाचली– संसार रूप भगवान् कृष्ण सबी कनारे खे आखि, मूंड, मूँ अरो हाथा-लाता आले ओय रो दुनियाँ रा पालन करो।

स्व सौन्दर्याभिमाननेन जीवे कामाभिवर्धनम्।
तद्धि तस्मात् परित्यज्य देहे देवं प्रकल्पयेत्॥121॥

हिन्दी– मुनष्य में अपने शारीरिक सौन्दर्य के अभिमान से काम की वृद्धि होती है इसलिए उस अभिमान को छोड़कर अपने शरीर को पवित्र देवता मानना चाहिए।

बघाटी हिमाचली– आदमी माँएं आपणी सुन्दरता रे गमण्डा साए काम ना रि बड़ोतरि ओ, एनी खे गमण्ड छाड रो आपणे शरीखे रा देवता मानणा चैं।

राधा शक्तिः मुरारेस्तु ब्रह्माण्डेष्विह चिन्मयी।
तयैव रमणात्कृष्ण राधारमण उच्यसे।।122।।

हिन्दी– हे कृष्ण! आप समस्त ब्रह्माण्डों में भगवान् की चेतना रूप शक्ति हैं। उसी शक्ति के साथ रमण करने के कारण आप राधारमण कहलाते हैं।

बघाटी हिमाचली– भगवन्! तूमा भगवाना रि राधा शक्ति सबी ब्रह्माण्डा माँएं चेतनारूप असो। तियाँ शक्ति साय रमण करनि साए तूमा खे राधा रमण बोलो।

गोविन्द वेदमूर्तिस्त्वं वृन्दावने हि नन्दसे।
युगलमूर्तिरूपेण कणे कणे विराजसे।।123।।

हिन्दी– हे गोविन्द! आप साक्षात वेदमूर्ति हैं तथा आनन्दपूर्वक वृन्दावन में रहते हैं। आप राधा-कृष्ण की युगल मूर्ति के रूप में कण कण में विराजते हैं।

बघाटी हिमाचली– हे कृष्ण! तूमे साक्षात् वेदा रि मुर्ति असो अरो वृन्दावना माँएं आनन्दा साय रौ! तूमे राधा-कृष्णा री युगलमूर्ति रे रूपा माँएं चणी चणी माँएं विराजित रौ।

भासा तव जगद्भाति हृदयस्थश्च पूरुषः।
सर्वान्तस्थं प्रपश्यन्ति सुखं तेषां हि शाश्वतम्।।124।।

हिन्दी– आपके उजाले से ही संसार और हृदयस्थ जीव प्रकाशित होते हैं। सबके हृदयों में रहने वाले उस परमात्मा को जो अनुभव करते हैं उन्हीं को नित्य सुख प्राप्त होता है।

बघाटी हिमाचली– त्हारे पेशे साय ई सारि दुनियाँ अरो सबी रे बीतरे रौणि आला जीव चमको। सबी रे बीतरे रौणि आले तेस परमात्मा खे जो महसूस करो तीना खे ई सदा रा सुख मीलो।

कणेऽपि तव गोविन्द विद्यते सकलं जगत्।
यशोदया पुरा दृष्टं तव बालमुखे जगत्।।125।।

हिन्दी– भगवन्! संसार के एक कण में भी सारा संसार समाया हुआ है। प्राचीन समय में माँ यशोदा ने आपके छोटे से मुँह में सारे संसार

को देखा था।

बघाटी हिमाचली– हे कृष्ण! दुनियाँ री एकी चणी माँएं बि सारि दुनियाँ समाइ ओंदि असो। पैलके जमाने माँएं माए यशोदे त्हारे छोटे जे मूंआँ माँएं सारि दुनियाँ देखि थि।

अभेरूप कृष्ण त्वं सर्वाङ्गेषु चितिर्यथा।
अनन्तरूपसंसारे तथैव हि विराजसे॥126॥

हिन्दी– हे कृष्ण! आप उसी प्रकार समस्त वस्तुओं में अभेद रूप से रहते हैं जैसे सारे शरीर के अन्दर चेतना शक्ति रहती है। इस अनन्त रूपों वाले संसार में भी आप उसी प्रकार से अभेद रूप से निवास करते हैं।

बघाटी हिमाचली– भगवन्! तूमे सबी चीजा माँएं तीशे ई अभेद रूप असो जिशि सारे शरीरा माँएं चेतना शक्ति रौ। इयां नगिणत रूपा आली दुनियाँ माँए बि तूमे तीशे ई अभेद रूपा माँएं निवास करो।

चलत्येकपदं प्रेमी कृष्णः सहस्रमेव हि।
प्रेम्णैव प्राप्यते प्रेम सङ्गच्छेत्शरणं परम्॥127॥

हिन्दी– भगवत्प्रेमी अगर एक पाँव आगे धरता है तो भगवान् कृष्ण हजार पाँव उसकी ओर बढ़ाते हैं। भगवान् के साथ प्रेम करने से प्रेम प्राप्त होता है इसलिए भगवान् कृष्ण की शरण में जाना चाहिए।

बघाटी हिमाचली– जे भगवाना रा बगत एक आगू कदम राखो तो भगवान् तेसरे कनारे खे हजार कदम बड़ाओ। भगवाना साए प्यार करनि साय प्रेम प्राप्त ओ, एनी री खातर भगवाना री शरणा माँएं जाणा चैं।

भगवान्शिवः महात्यागी महास्वार्थी च रावणः।
याचिते तेन सर्वं हि दत्तवान् याचितं यथा॥128॥

हिन्दी– भगवान् शिव महात्यागी थे और रावण महास्वार्थी। उसने भगवान् से सब कुछ माँगा तो उन्होंने उसकी लगभग सब माँगें पूरी कर दी थी।

बघाटी हिमाचली– भगवान् शिव महात्यागि थे अरो रावण महा मतलबि। तिणिए भगवाना दे सब ठेंव माँगा तो भगवाने तेसरि लगभग हर

माँग पुरि कि थि।

सहजं वर्णकर्म हि सर्वकाम प्रदायकम्।
जनः कुर्यादसङ्गस्तत् सादरं कृष्णमर्पयेत्।।129।।

हिन्दी– भगवान् वेद द्वारा निर्धारित वर्णकर्म सभी की इच्छाओं को पूरा करने वाले हैं। मनुष्य उसको आसक्ति के बिना निभाए तथा भगवान् को सादर अर्पण करे।

बघाटी हिमाचली– भगवाना वेदा रे द्वारा बान्डे ओंदे वर्णकर्म सबी री इच्छा खे पूरा करनि आले असो। आदमी खे से कर्म आसक्ति दे बीना पूरे करने चैं अरो भगवाना खे आदरा साय अर्पण करने चैं।

असंख्यशक्तिसम्पन्नः जीवानां परमेश्वरः।
स्वकीयं शरणं दातुं पुत्रायेवातुरः पिता।।130।।

हिन्दी– जीवों के परमेश्वर अनगिनत शक्तियों से सम्पन्न हैं, वे अपनी प्रजा को शरण देने के लिए वैसे ही आतुर रहते हैं जैसे अपने पुत्र को शरण देने के लिए सांसारिक पिता।

बघाटी हिमाचली– आदमी रे पणमेसर नगिणत शक्ति साय भरे ओंदे असो, से आपणे जाए ओंदे खे शरण देणि खे तीशे ई आतुर रौ जीशा आपणे बगेरा खे फड़के माँएं लणि खे तेसरा बाव।

जीवात्मनां हि विश्वेषां कृष्णार्थं सकलाः क्रियाः।
यस्मादुत्पद्यते यद्यत् तदर्थमेव तस्य जीवनम्।।131।।

हिन्दी– समस्त जीवों के द्वारा समस्त काम भगवान् कृष्ण के लिए होते हैं। जो वस्तु जिससे पैदा होती है उसका जीवन उसी के लिए होता है।

बघाटी हिमाचली– सबी जीवा रे सब काम भगवान् कृष्णा री खातर ओ। जो चीज जनी दे पैदा ओ तेनी रा जीवन तेसरी ई खातर ओ।

संसारनाटकं कृष्ण विचित्रमस्ति सर्वथा।
सज्जानिर्देशकैर्नटैः सह त्वमेव दर्शकः।।132।।

हिन्दी– हे भगवन्! आपका यह संसार रूप नाटक हर प्रकार से अनोखा है। इसमें आप स्वयं ही सज्जा, पात्र, निर्देशक, नट और दर्शक

सब कुछ बने हैं।

बघाटी हिमाचली– हे कृष्ण! त्हारा इ संसाररूप नाटक हर तरीके साए अनोखा असो। ईंदे तूमे स्वाङि्ग, निर्देशक, नट अरो दर्शक सब ठेंव आफी बण रोए।

स्वार्थरूपेण मृत्युस्त्वं परमार्थेन चामृतम्।
स्वार्थरूपं परित्यज्य परमार्थं समभ्यसेत्॥133॥

हिन्दी– स्वार्थरूप से आप मृत्यु हैं और परमार्थ रूप से अमृत, इसलिए हमेशा स्वार्थरूप की उपेक्षा करके परोपकार करने का अभ्यास करते रहना चाहिए।

बघाटी हिमाचली– स्वार्थ रूपा माँएं तूमे मृत्यु असो अरो परोपकारा रे रूपा माँएं अमृत, एनी खे स्वार्थरुपा रि अनदेखि कर रो हमेशा परोपकार रूपा रा भ्यास करना चैं।

ईशः ब्रह्मेन्द्रयोरपि अजेयश्चैव शौर्यतः।
निर्वहन्ति स्वकर्तव्यं भयात्तव हि देवताः॥134॥

हिन्दी– संसारनिर्माता ब्रह्मा जी और महाराजा इन्द्र के भी आप स्वामी है। आप अपनी वीरता से अजेय हैं। यहाँ तक कि देवता भी आपके भय से ही अपना अपना कर्तव्य निभाते हैं।

बघाटी हिमाचली– संसारनिर्माता ब्रह्मा जी अरो देवराज इन्द्रा रे बि तूमे स्वामि असो। तूमे आपणी बादरी साए नजित असो। देवते बि त्हारे डरा साए आपणे आपणे जिम्मे रा काम नबाओ।

जीवात्मा चालकस्तत्र शरीरं चैव वाहनम्।
परितः चालिका बुद्धिः मनश्चैव नियामकम्॥135॥

हिन्दी– जीवात्मा चालक हैं, शरीर वाहन, बुद्धि परिचालक और मन गति नियामक है।

बघाटी हिमाचली– जीवात्मा ड्राइवर, शरीर गड्डि, बुद्धि कंडक्टर अरो मन ब्रेक असो।

विष्णुरूपमनाद्यन्तं सर्वलोक सुशासकम्।
जीवकर्मेक्षकं ज्ञात्वा परमानन्दमाप्नुयात्॥136॥

हिन्दी– समस्त जीवों के कर्मों के निरीक्षक समस्त लोकों के सुशासक, अनादि और अनन्त भगवान् विष्णु के रूप को जानकर परमानन्द प्राप्त करना चाहिए।

बघाटी हिमाचली– सबी जीवा रे कर्मा रे निरीक्षक, सबी लोका रे सुशासक, अनादि अरो अनन्त भगवान् विष्णु रे रूपा खे जाण रो परमानन्द प्राप्त करना चैं।

गोविन्दाज्ज्यायते शक्तिः जगदुत्पद्यते यया।
संहृत्य प्राणिनः सर्वान् तस्मिन्नेव विलीयते॥137॥

हिन्दी– भगवान् कृष्ण से शक्ति पैदा होती है और उससे संसार पैदा होता है। वह शक्ति सभी प्राणियों का प्राणहरण करके अन्त में भगवान् कृष्ण में ही मिल जाती है।

बघाटी हिमाचली– भगवान् कृष्णा दे शक्ति पैदा ओ अरो तेनी दे दुनियाँ पैदा ओ। से शक्ति सबी प्राणी रा अन्त कर रो आखरी माँएं भगवान् कृष्णा माँएं ही मिल जाओ।

जीवात्मा राधिका प्रोक्ता तयैव रमणादिह।
आत्मारामो हि सम्प्रोक्तः परमेशस्य सङ्गिभिः॥138॥

हिन्दी– समस्त जीवात्माएं राधा हैं, भगवान् अपने भक्तों के साथ उन्हीं में रमे रहने के कारण आत्माराम कहलाते हैं।

बघाटी हिमाचली– सब जीवात्मा राधा असो, भगवान् कृष्ण आपणे बगता साए तीनी माँएं रमे रौणि साए आत्माराम बोले जाओ।

सेतुबन्धे त्वमेवासि यतो लङ्काप्रवेशनम्।
पापनाशाय तत्रैव शिवः रामेण पूजितः॥139॥

हिन्दी– रामेश्वरं द्वीप में जहाँ से लङ्का में प्रवेश होता है वहाँ सेतुबन्ध में आप ही विराजमान हैं। अपने रावणवध जन्य पाप के नाश के लिए वहीं भगवान् रामचन्द्र ने भगवान् शिव की पूजा की थी।

बघाटी हिमाचली– लङ्का रे प्रवेशद्वार सेतुबन्ध रामेशरा माँएं तूमे ई विराजमान असो। आपणे रावणवधा रे पापा रे नाशा री खातर रामचन्द्र जीए तेथी भगवान् शिवजी रि पूजा कि थि।

वासुदेवो रसात्मा हि माधुर्यं सुप्रियं पिबन्।
स्वेष्वेव बहुरूपेषु असङ्गः रमते सदा।।140।।

हिन्दी– भगवान् वासुदेव सभी रसों के सारांश हैं, तथा अपने प्रियतम मधुर रस को पीते हुए अपने संसार के अनगित रूपों में अनासक्त होकर रमण करते रहते हैं।

बघाटी हिमाचली– भगवान् कृष्ण सबी रसा रे साररूप असो अरो आपणे प्यारे मधुर रसा खे पीन्दे आपणी दुनियाँ रे नगिणत रूपा माँएं आसक्ति दे बीना रमण करदे रौ।

प्रेमिप्रेमवशीभूतः विक्रीणीते हि सत्वरम्।
तुलस्या सह नैवेद्यं अल्पं तस्मै भवेद् बहु।।141।।

हिन्दी– अपने प्रेमी के प्रेमाधीन होकर भगवान् अपने आपको उनके हाथों में जल्दी ही बेच देते हैं। तुलसी के साथ थोड़ा सा नैवेद्य उनके लिए बहुत तृप्तिदायक हो जाता है।

बघाटी हिमाचली– अपणे बगता रे प्रेमाधीन ओय रो भगवान् आपणे आपा खे शीगे ई तीना रा हाथा माँएं बेच देओ। तुलसी साए थोड़ा जा बोग तीना खे रजणा ओय जाओ।

सृष्टं विश्वं त्वयैवेह पालयसि तथैव च।
कल्पान्ते च लयो यस्मिन् नमस्तुभ्यं त्रिमूर्तये।।142।।

हिन्दी– आपने ही इस संसार को पैदा भी किया है और पालते भी हो। कल्प के अन्त में जिसमें इस संसार का लय हो जाता है उन आप त्रिमूर्ति भगवान् को प्रणाम है।

बघाटी हिमाचली– तूमे ई संसार पैदा कर राखा अरो तूमे ई एसके पालो। कल्पा रे आखरी माँएं जींदा एते रा लय ओय जाओ तेस तूमा त्रिमूर्ति भगवाना खे आऊँ माथा टेकू।

अवतारोत्तमं वन्दे कंसाद्यसुरमर्दनम्।
वेदोपदेशसारं त्वां वन्दे कृष्णं जगद्गुरुम्।।143।।

हिन्दी– मैं उत्तम अवतार, कंसादि राक्षसों को मारने वाले और वेदों के उपदेशों के सारांश रूप आप जगद्गुरु भगवान् को मैं प्रणाम करता हूँ।

बघाटी हिमाचली– उत्तम अवतार, कंसा बगैरा राक्षा खे घाणि आले अरो वेदा रे उपदेशा रे नचोड़ तूमा जगद्गुरु भगवाना खे आऊँ डाल करू।

यथा जलस्य नामानि वाच्यन्ते हि जनैर्बहु।
तथैव नामरूपाणि कृष्णस्य परमात्मनः।।144।।

हिन्दी– जैसे लोगों के द्वारा पानी के अनेक नाम बोले जाते हैं वैसे ही आप भगवान् कृष्ण के भी अनेक नाम और रूप हैं।

बघाटी हिमाचली– जीशे लोक चीशा रे नाँव भौत सारे बताओ तीशे ई भगवान् कृष्णा रे बि भौत सारे नाँव अरो शक्ला असो।

सर्वजीवात्मनां सारः परमात्मा हरिः शिवः।
जीवहिताय गोविन्दः देहं गृह्णाति मायया।।145।।

हिन्दी– भगवान् विष्णु और शिव समस्त जीवात्माओं के साररूप हैं। भगवान् कृष्ण ये रूप जीवों के हित के लिए ग्रहण करते हैं।

बघाटी हिमाचली– भगवान् विष्णु अरो शिव सबी जीवात्मा रे साररूप असो। भगवान् कृष्ण इ रूप सबी जीवा री बलाई री खातर ग्रहण करो।

विपदस्तस्य नायान्ति गोविन्दनाम यन्मुखे।
स्मरति नैव तं योऽपि तस्यायान्ति पदे पदे।।146।।

हिन्दी– जो आदमी हमेशा भगवान् कृष्णा का नाम जपता रहता है उसके समीप विपत्तियाँ नहीं आती। जो उनका नाम याद नहीं करता उसके लिए कदम कदम पर विपत्तियाँ आती हैं।

बघाटी हिमाचली– जो आदमि भगवाना रा नाँव जपदा रौ तेस के कबे औगण नी आँवदे। जो कृष्णा रा नाँव नी लन्दा तेसके बीखा बीखा पाँए औगण आओ।

प्रियाय नन्दगोपस्य वसुदेवसुताय च।
व्याप्ताय अन्तर्बहिश्च जगत्प्रियाय ते नमः।।147।।

हिन्दी– नन्द गोप के प्रिय वसुदेव के पुत्र, सबके अन्दर और बाहर व्याप्त और विश्वप्रिय आप भगवान् कृष्ण को मेरा प्रणाम है।

बघाटी हिमाचली– नन्द ग्वाले रे प्यारे, वसुदेवा रे बगेरा, सबी रे

बीतरे अरो बारे रोणि आले अरो दुनियाँ रे प्यारे भगवान् कृष्णा खे आऊँ डाल करू।

करोति सहजं कर्म वेदेषु नियतं हि यः।
असङ्गेन हि तत् कृत्वा लभते शाश्वतं सुखम्॥148॥

हिन्दी– जो आदमी वेदों द्वारा निर्धारित सहज कर्म अनासक्त होकर करता है वह नित्य सुख को प्राप्त होता है।

बघाटी हिमाचली– जो आदमि बेदा माँएं बतावा दा आपणा स्वाभाविक काम करो से सदा सुख प्राप्त करो।

दानवोत्था यदा बाधा यत्रकुत्रापि जायते।
दुर्गारूपेण भूभारस् त्वयैवेह निवार्यते॥149॥

हिन्दी– मनुष्यों के मार्ग में जहाँ कहीं भी राक्षसों द्वारा बाधा पैदा की जाती है वह बाधा दुर्गा का रूप धारण करके आप कृष्ण के द्वारा ही दूर की जाती है।

बघाटी हिमाचली– आदमी री बाटा दे जेती बि राक्ष रूकावट पैदा करो तेती दुर्गा रा रूप दारण कर रो तूमे भगवान् कृष्ण ही तेते दूर करो।

गोविन्द नाम संस्मृत्य चित्रं नमन्ति ये जनाः।
ज्ञाताज्ञातानि पापानि दह्यन्ते शुष्कपत्रवत्॥150॥

हिन्दी– कृष्ण जी का नाम लेकर उनके चित्र के सामने जो झुकता है उसके जाने अनजाने समस्त पाप सूखे पत्ते की तरह जल जाते हैं।

बघाटी हिमाचली– भगवाना रा नाँव लय रो जो आदमि कृष्ण जी री तश्वीरा खे डाल करो तेसरे जाणे नजाणे सब पाप शूके पाचा री तरह फुक जाउओ।

राधाकृष्णैकरूपाय राधोपास्याय ते नमः।
परमानन्दरूपाय विश्वरूपाय ते नमः॥151॥

हिन्दी– राधा और कृष्ण के एक रूप, राधा के उपास्य देव रूप, परमानन्दरूप और जगद्रूप आपको प्रणाम है, प्रणाम है।

बघाटी हिमाचली– राधा अरो कृष्णा रे एक रूप, राधा रे उपास्यदेवता, परमानन्दरूप अरो संसाररूप तूमा खे मेरा प्रणाम, तूमा खे मेरा प्रणाम।

स्मरति एकचित्तो यः संसारे त्वां हि सर्वदा।
नित्यं त्वं सुलभस्तस्मै नित्ययुक्ताय योगिने।।152।।

हिन्दी– संसार में जो आदमी आपको एक मन होकर सदा याद करता है उस आप में नित्य युक्त हुए योगी को आप सदा सुलभ रहते हो।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ माँएं जो आदमि तूमा खे एकी मना साए सदा याद करया करो तेस तूमा माँएं नित्य जुड़े ओंदे योगी खे तूमे सदा प्राप्त करनि खे सूखे रौ।

गोविन्दः चेतनोऽसङ्गः जीवः लिप्तो हि सर्वथा।
जीवः गोविन्दसङ्गेन आत्मानं हि समुद्धरेत्।।153।।

हिन्दी– भगवान् कृष्ण चेतन रूप और अनासक्त हैं परन्तु जीवात्मा विषयों में आसक्त हो जाता है, इसलिए मनुष्य को चाहिए कि वह अनासक्त कृष्ण में आसक्ति करके अनासक्ति को प्राप्त होकर अपना कल्याण करे।

बघाटी हिमाचली– भगवान् कृष्ण चेतन रूप अरो अनासक्त असो पेरि जीवात्मा चीजा माँएं आसक्त ओय जाओ, एनी खे आदमी खे अनासक्त कृष्णा साए लगाव राख रो अनासक्ति पाय रो आपणा कल्याण करना चैं।

मर्यादया हि रामस्य देहोऽहं दुःखकारणम्।
सुखकामी शरीरेऽस्मिनहंकारं परित्यजेत्।।154।।

हिन्दी– आपके ही एक रूप भगवान् श्री राम जी की मर्यादानुसार अपने शरीर में अभिमान करना दुःख का कारण है। सुख को चाहने वाला आदमी इस शरीर में अहङ्कार का त्याग कर दे।

बघाटी हिमाचली– त्हारे एकी रूपा भगवान् श्री राम जी री मर्यादा रे अनुसार आपणे शरीरा माँएं अभिमान करनि साय दुःख ओ। जो सुख चाओ तेसके एस शरीरा माँएं अभिमान करना छाड देणा चैं।

कृष्णमानवयोर्भेदः एतावन्मात्रमेव हि।
मानवस्तु शरीरोऽहं कृष्णो हि चेतनामयम्।।155।।

हिन्दी– भगवान् कृष्ण और आदमी में बस अन्तर इतना ही है कि मनुष्य अपने शरीर को अपना मानता है परन्तु भगवान् अपने को शरीर न मानकर अपने को चेतना शक्ति मानते हैं।

बघाटी हिमाचली– भगवाना कृष्णा अरो आदमी माँएं बस फरक एतणा ई असो जे आदमि आपि खे शरीर मानो पेरि भगवान् आपि खे शरीर ना मान रो चेतना शक्ति मानो।

गोविन्दः नवनीतार्थं गोप्यानन्दाय नृत्यति।
कार्याणि हि कारयन्ति प्रेम्याधीनात् परात्मना॥156॥

हिन्दी– भगवान् कृष्णा मक्खन पाने की चाह से गोपियों को आनन्दित करने के लिए उनके कहने पर नाचने लगते हैं। गोपियाँ अपने प्रेमी के अधीन रहने वाले त्रिलोकीनाथ से अपने घर के काम भी करवाती हैं।

बघाटी हिमाचली– भगवान् कृष्ण नौणी रे लालचा माँएं गोपी खे आनन्द देणि खे नाचो। गोपी आपणे प्रेमी रे अधीन रौणि आले भगवाना दे आपणे गरा रे काम बि कराओ।

राधा न लौकिकी पत्नी अलौकिकी हि सर्वथा।
दाम्पत्यं चिन्मये लोके चिन्मयमतिसुन्दरम्॥157॥

हिन्दी– भगवान् कृष्ण जी की राधा शक्ति उनकी कोई लौकिक धर्मपत्नी नहीं हैं, वे सर्वथा अलौकिक हैं। उनका दाम्पत्य सम्बन्ध अति सुन्दर चेतनामय लोक का सम्बन्ध है।

बघाटी हिमाचली– भगवती राधा जी इयाँ दुनियाँ री तरह भगवाना रि लाड़ि नी आथि, से बिल्कुल अलौकिक असो। चेतनामय लोका रे लाड़ा-लाड़ि भौत सौणे अरो चेतनामय असो।

मानवे सहजं कर्म चेतनापोषकः गुरौ।
पंचायतनदेवस्त्वं समत्वं देशवासिषु॥158॥

हिन्दी– हे कृष्ण! आप मनुष्य में सहज कर्मरूप हैं। गुरु के अन्दर आप शिष्यं की चेतना के पोषक हैं। आप ही पञ्चायतन देवता हैं। देशवासियों के अन्दर आप समत्व की भावना के रूप में हैं।

बघाटी हिमाचली– हे कृष्ण! तूमे आदमी माँएं स्वाभाविक कर्मा रे

रूपा मांएं असो। गुरू रूपा माँएं तूमे चेले री चेतना रे पोषक असो। तूमे ई ठावकर असो। देशवासी माँएं तूमे बराबरी रि भावना रे रूपा माँएं असो।

प्रेमरूपः स्वयं कृष्णः पतीनां पतिरेव च।
तरङ्गाः प्रेमिणः तस्य कृष्णस्तु प्रेमसागरः॥159॥

हिन्दी– भगवान् कृष्ण स्वयं प्रेमरूप हैं और सबके पतियों के भी पति हैं। भगवान् के प्रेमी उन्हीं की तरङ्गें हैं। भगवान् कृष्ण प्रेम रस के सागर हैं।

बघाटी हिमाचली– भगवान् कृष्ण प्रेमरूप असो। से सबी रे पति रे बि पति असो। भगवाना रे प्रेमि तीना री ही तरङ्गा असो। भगवान् प्यारा रे सागर असो।

त्वन्मायाजन्यवस्तूनि गुणतो मोहकानि हि।
मोहाच्च ममता लोके ममत्वेन च बध्यते॥160॥

हिन्दी– आपकी माया शक्ति से उत्पन्न वस्तुएं तीन गुणों के द्वारा मोहने वाली हैं। मोह से मेरापन पैदा होता है। मेरेपन से मनुष्य दुःख में पड़ जाता है।

बघाटी हिमाचली– त्हारी माया शक्ति साय पैदा ओई दी चीजा तिं गुणा साय मोह पैदा करो। चीजा माँएं मोहा साय मेरापन पैदा ओ अरो तींदे मेरेपणा साय आदमि दुःखा माँएं पड़ जाओ।

धर्माविरूद्धकामस्त्वं भवत् प्रेम हि दुर्लभम्।
धर्मः सर्वोत्तमः लोके श्रीकृष्ण प्रेम पावनम्॥161॥

हिन्दी– धर्मानुकूल इच्छा आपका रूप है। आपका प्रेम प्राप्त करना दुर्लभ वस्तु है। संसार में सर्वोत्तम धर्म श्रीकृष्ण के प्रति निःस्वार्थ पवित्र प्रेम है।

बघाटी हिमाचली– तूमे दर्मा रे अनुकूल इच्छारूप असो। त्हारा प्रेम पाणा दुर्लभ चीज असो। दुनियाँ माँएं सर्वोत्तम दर्म भगवाना साय बीना स्वार्था रा प्रेम करना असो।

देयवस्तुनि शक्तिर्न भवेत् भावे समर्पणे।
स्वीयानीह तु वस्तूनि सद्भावेन समर्पयेत्॥162॥

हिन्दी– देने की चीजों में ताकत नहीं होती दान की भावना में होती है। अपनी चीजें अच्छी भावना के साथ दान करनी चाहिए।

बघाटी हिमाचली– दाणा री चीजा माँएं ताकत नी ओंदि, दाणा री भावना माँएं ओ। आपणी चीजा अच्छी भावना साय दाणा माँएं देणी चैं।

मोहेन आवृतो जीवः कृष्णचिन्नैव सर्वथा।
गोविन्दः योगमायातः कामेशस्यापि मोहकः॥163॥

हिन्दी– हमारी जीवात्मा अज्ञान से घिरी हुई है। भगवदात्मा वैसी नहीं है। निर्मल परमज्ञानी भगवान् अपनी माया से कामदेव को भी अज्ञान में डाल देते हैं।

बघाटी हिमाचली– आदमि अज्ञाना साय गीरा ओंदा असो, परमात्मा तीशे नी आथि। निमले परमज्ञानि भगवान् आपणी माया साय कामदेवा खे बि अज्ञाना माँएं पाय देओ।

महामन्त्रे तु गायत्र्यां व्यवहारे च निश्छले।
दाता त्वं याचकस्त्वं च किंकिं न त्वं हि भूतले॥164॥

हिन्दी– आप महामन्त्र गायत्री में रहते हैं। निष्कपट व्यवहार में आपका निवास है। आप ही दाता हैं और आप ही भिखारी हैं। इस धरती पर आप क्या क्या रूप धारण नहीं करते।

बघाटी हिमाचली– तूमे गायत्री मन्त्रा माँएं रौ। बीना छल कपटा रे व्यवहारा माँएं बि तूमे। तूमे ई देणि आले अरो तूमे ई भिखारि असो। ईयाँ धरती पाँएं तूमे का का रूप दारण नी करदे।

हृद्रोगः वस्तुकामेन कृष्णकामेन विनश्यति।
कामजयकथा तस्य हृद्रोगं हरति त्वरम्॥165॥

हिन्दी– सांसारिक वस्तुओं के प्रति कामना से हृदयरोग होता है और भगवान् को पाने की इच्छा से वह नष्ट हो जाता है। भगवान् कृष्ण द्वारा कामदेव पर विजय की कथा का श्रवण हृदयरोग को जल्दी ही हर लेता है।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ री चीजा रि कामना करनि साय हृदय रोग ओय जाओ अरो भगवाना रि कामना करनि साय से नष्ट ओय

जाओ। भगवाना कृष्णा रि कामदेवा पाँए विजय रि कथा शुण रो से रोग शीगा नठो।

कामबाणो हि गोविन्दे शितः कामेन पातितः।
तेन न विकृतं किञ्चित् कामदेवः पराजितः।।66।।

हिन्दी– कामदेव ने भगवान् कृष्ण पर एक अचूक पैना काम बाण मारा था। उससे भगवान् का तो कुछ बिगड़ा नहीं पर कामदेव जरूर हार गया।

बघाटी हिमाचली– कामदेवे भगवान् कृष्णा पाँएं एक अचूक पैना कामबाण चलावा था। तेते साय भगवाना रा तो कुछ बिगड़ा नी पेरि कामदेव जरूर आर गोआ।

कृष्णभावः परः प्रोक्तः द्वितीयः जीवनामकः।
अविद्या कर्म वा सम्प्रोक्तं भावत्रयं प्रधानतः।।67।।

हिन्दी– कृष्णभाव बहुत व्यापक भाव है। दूसरा भाव जीवात्मा कहलाता है। तीसरा भाव अविद्या या कर्म है। इस प्रकार विश्व में तीन ही प्रधान भाव हैं।

बघाटी हिमाचली– कृष्ण भाव परमात्मीय भाव असो। दूजा भाव जीवात्मा अरो तीजा अविद्या या कर्म असो। दुनियाँ माँएं इ तीन ही प्रदान भाव असो।

ज्ञानेन नैव गम्यस्त्वं योगेनापि न सर्वथा।
स्वाध्यायेनापि गम्यो न प्रेम्णा सर्वैस्तु गम्यसे।।68।।

हिन्दी– आप कृष्ण को न तो ज्ञान से पाया जा सकता है और न योग से। स्वाध्याय से भी आप अप्राप्य हैं। प्रेम से आपको सब पा सकते हैं।

बघाटी हिमाचली– तूमे ज्ञाना, योगा अरो स्वाध्याया साय नी पाय सकुदे। प्रेमा साय तूमा खे सब पाय सको।

गुणेषु पश्यति कृष्णं रूपेण वर्णकर्मणः।
करोति तच्च कृष्णार्थं लभते शरणं परम्।।69।।

हिन्दी– जो आदमी गुणों में वर्ण कर्म रूप में कृष्ण को देखता है

और उसको कृष्णार्थ करता है वह कृष्णशरण को प्राप्त करता है।

बघाटी हिमाचली– जो आदमि गुणा माँएं वर्णकर्मा रे रूपा माँए कृष्णा खे देखो से कृष्णा रि शरण प्राप्त करो।

कृष्णस्त्वं भगवानेकः ब्रह्माविष्णु शिवात्मकः।
एवं स्मरति लोके यः नित्यं सुखमवाप्नुयात्॥70॥

हिन्दी– ब्रह्मा, विष्णु और शिव रूप में आप भगवान् कृष्ण ही हैं। संसार में जो इस तरह ध्यान करता है वह नित्य सुख को पाता है।

बघाटी हिमाचली– ब्रह्मा, विष्णु अरो शिव रूपा माँएं तूमे कृष्ण भगवान् ही असो। दुनियाँ माँएं जो ईशा द्यान करो से सदा खे सुख प्राप्त करो।

कृष्णस्य चरितं दिव्यमाचरितुं न शक्यते।
तस्य यद्वचनं युक्तं बुद्धिमांस्तत्समाचरेत्॥71॥

हिन्दी– भगवान् के अलौकिक आचरणों पर आचरण करना कठिन है। बुद्धिमान आदमी को भगवान् के केवल श्रेष्ठ वचनों का ही पालन करना चाहिए।

बघाटी हिमाचली– भगवाना रे अलौकिक चरित्रा पाँएं आचरण करना चायता असो। समजदार आदमी खे भगवाना रे सौणे वचना रा पालन करना चैं।

त्वमेव कारणं कृष्ण कर्ता कार्यं तथैव च।
शङ्खचक्रगदायुक्तं शरणं देहि सुप्रियम्॥72॥

हिन्दी– भगवन्! आप ही कर्ता और कार्य हैं। शङ्ख, चक्र और गदा से युक्त अपनी विजयपूर्ण प्रिय शरण प्रदान करो।

बघाटी हिमाचली– भगवन्! करम बि तूमे ई अरो तेते करनि आले बि तूमे ई असो। शङ्ख चक्र गदा आले तूमे माखे आपणि विजयपूर्ण प्यारि शरण प्रदान करो।

कृष्णरूपस्य विष्णोस्तु सुपत्नी भूमिरूपिणी।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै हिन्दुभूम्यै नमो नमः॥73॥

हिन्दी– भगवान् कृष्ण या विष्णु की भूमि रूपा श्रेष्ठ धर्मपत्नी हैं।

उस हिन्दू भूमि भारत माँ को बार बार प्रणाम।

बघाटी हिमाचली– भगवान् कृष्ण या विष्णु रि भूमिरूपा श्रेष्ठ धर्मपत्नि असो। हिन्दु भूमि तींया भारत माता खे बार बार डाल।

करणीयं स्वकर्तव्यं नेतृभिः प्रभुमिच्छता।
तेषां कार्यं प्रजारक्षा विधेयं तद्विधानतः।।74।।

हिन्दी– राजनेताओं को भगवत्प्राप्ति की इच्छा से अपना राजधर्म रूप कर्तव्य निभाना चाहिए। अपनी प्रजा की रक्षा और पालना उनका परम कर्तव्य है उसको विधिपूर्वक निभाना चाहिए।

बघाटी हिमाचली– राजनेते खे भगवाना खे प्राप्त करनि री इच्छा साय आपणा राजदर्म नबावणा चैं। आपणी प्रजा रि रक्षा अरो पालन करना तीना रा कर्तव्य असो, से विधाना रे अनुसार नबावणा चैं।

सहजकार्यरूपाय नमस्तुभ्यं पुनः पुनः।
जयतु सहजं कर्म विपरीतो विनश्यतु।।75।।

हिन्दी– मनुष्य के स्वाभाविक कर्मरूप आप भगवान् को बार बार प्रणाम। स्वाभाविक कर्तव्य की जय हो और अस्वाभाविक कर्म का विनाश हो।

बघाटी हिमाचली– स्वाभाविक कर्म रूप तूमा भगवाना खे बार–बार ढाल। स्वाभाविक कर्तव्या रि जय हो अरो अस्वाभाविक कर्तव्या रा नाश ओ।

धनं प्राप्तुं कृष्णप्रेमी विद्यामपि तथैव च।
प्राप्तुं किमपि गोविन्दात् आश्रयं नित्यमाप्नुयात्।।76।।

हिन्दी– भगवान् का प्रेमी कृष्ण से धन, विद्या और सर्वस्व को प्राप्त करने के लिए उनकी स्थायी शरण ग्रहण करे।

बघाटी हिमाचली– भगवाना रे प्रेमी खे कृष्णा दे दन, विद्या अरो सब ठेंव प्राप्त करनि खे तीना रि पक्कि शरण ग्रहण करनि चैं।

मानवानां गुरूस्त्वं हि वन्द्यं च भारतं त्वया।
परित्राणाय भक्तानां समायासि पुनः पुनः।।77।।

हिन्दी– आप कृष्ण मानव मात्र के गुरु हैं और आपके कारण ही

भारत विश्वबन्द्य है। आप अपने प्रेमी भक्तों की रक्षा के लिए यहाँ बार बार अवतार लेते हैं।

बघाटी हिमाचली– तूमे कृष्ण दुनियाँ बरि रे आदमी रे गुरू असो। त्हारी बजा साय बारता खे दुनियाँ डाल करो। तूमे आपणे प्रेमी री रक्षा री खातर एती बार बार जन्म लया करो।

नाडी दोषो हि गोविन्द मेलापकस्त्वमेव च।
लग्नग्रन्थिश्च ते रूपं विवाहस्तव एव च॥78॥

हिन्दी– हे कृष्ण! विवाह के मिलान में आप ही नाडी दोष हो और आप ही मिलान भी हो। लग्नग्रन्थि भी आप का ही रूप है और विवाह भी विष्णु रूप में आपका ही होता है।

बघाटी हिमाचली– हे कृष्ण! ब्या रे मलाना माँए तूमे ई नाड़ीदोष अरो मलान बि तूमे ही असो। तूमे ई लग्नग्रन्थि अरो ब्या बि विष्णु रूपा माँएं त्हारा ई ओ।

कृष्णो वै रसरूपस्तु कृष्णलोकश्च चिन्मयः।
लीला चित्प्रत्ययस्तस्य दर्शितो योगमाया॥79॥

हिन्दी– भगवान् कृष्ण रसमय और उनका वैकुण्ठ लोक चेतनामय है। आप अपनी चेतनामयी लीला अपनी योगमाया की शक्ति से दिखाते हैं।

बघाटी हिमाचली– भगवान् कृष्ण अरो तीना रा वैकुण्ठ लोक क्रमशः रसमय अरो चेतनामय असो। तूमे आपणि चेतनामय लीला आपणी योगमाया री शक्ति साय दखाओ।

मूढस्य कर्म सङ्गेन नैवामूढस्य सर्वथा।
सङ्गो हि आसुरो भावः असङ्गो दैव एव च॥80॥

हिन्दी– अज्ञानी के काम आसक्ति से होते हैं, ज्ञानी के वैसे नहीं होते। आसक्ति आसुरी भावना है और अनासक्ति दैवी भावना है।

बघाटी हिमाचली– अज्ञानी रे काम आसक्ति साय ओ अरो ज्ञानी रे अनासक्ति साय। आसक्ति आसुरि भावना असो अरो अनासक्ति दैवी भावना असो।

कृष्ण भावस्य सम्प्राप्तिः गोपीनामभिवाञ्छितम्।
क्रीडनकानि गोप्यस्तु कृष्णश्चैव तु क्रीडकः॥81॥

हिन्दी– गोपियों की कामना कृष्ण भाव को प्राप्त करना है। गोपियाँ कृष्ण के खिलौने हैं और भगवान् खिलाड़ी है।

बघाटी हिमाचली– गोपी रि इच्छा कृष्ण भावा रि प्राप्ति करना असो। गोपी भगवाना रे खिलौने असो अरो भगवान् खिलाड़ी असो।

गोविन्दश्चेतनारूपः कामहीनस्तु सर्वथा।
तदावास्यमिदं सर्वं भोक्ता भोजनमेव च॥82॥

हिन्दी– भगवान् कृष्ण सर्व कामना रहित चेतना रूप हैं। वे इस संसार के कण कण में बसे हैं। वे स्वयं ही भोजन बने हैं और भोक्ता भी।

बघाटी हिमाचली– भगवान् कृष्ण सर्व कामनारहित और चेतना रूप असो। से इयाँ दुनियाँ री चणी चणी माँएं बसे दे असो। से आपी भोजन असो अरो आपी तेते खे खाणि आले।

वटबीजाद्यथा लोके महावृक्षो हि जायते।
गोविन्दकामनाबीजात् विश्वमिदं प्रजायते॥83॥

हिन्दी– संसार में वट वृक्ष के बीज से जैसे महावृक्ष बन जाता है वैसे ही भगवान् कृष्ण की बहुत होने की कामना से यह विशाल संसार बनता है।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ माँएं जीशा बड़ा रे बीजा दे भौत बड़ा डाल बण जाओ तीशा ई भगवाना री भौत सारे बणनि री इच्छा साय इ बड़ा संसार पैदा ओय जाओ।

परमचेतना सर्वं तु जानाति प्राणिनामिह।
अदृष्टं नैव किञ्चिद्धि जीवपित्रा परात्मना॥84॥

हिन्दी– भगवान् परमेश्वर समस्त प्राणियों के बारे में सब कुछ जानते हैं। जीवों के पिता परमात्मा से यहाँ कुछ भी छिपा नहीं है।

बघाटी हिमाचली– भगवान् सबी जीवा रे बारे माँएं सब ठेंव जाणो। जीवा रे बावा भगवाना दे कें बि छिपा दा नी आथि।

शक्तिरेषा महामाया जगत्सम्मोहितं यया।
भवन्ति वञ्चिता नैव जगन्मातुर्हि पाशतः॥85॥

हिन्दी– यह भगवान् की शक्ति महामाया है जिसने संसारियों को भ्रम में डाला है। माँ जगन्माता के पाश से कोई बच नहीं सकता।

बघाटी हिमाचली– भगवाना री शक्तिए महामाये दुनियाँ रे आदमि मोहा माँएं पाय राखे। जगदम्बा माता रे जाला दे कोएं नी बच सकदा।

अस्ति धर्मः स्वकर्तव्यं लोके जगत्पतिं प्रति।
तस्माद्विश्वजनः नित्यं तद्वचः प्रतिपालयेत्॥86॥

हिन्दी– भगवान् विश्वेश्वर के प्रति अपने शास्त्र द्वारा निर्धारित कर्तव्य को निभाना जीवों का सबसे बड़ा धर्म है इसलिए हर मनुष्य को भगवान् के शास्त्रोक्त कर्तव्यों का पालन करना चाहिए।

बघाटी हिमाचली– भगवान् रे प्रति आपणा कर्तब नबावणा आदमी रा सबी दे बड़ा दर्म असो एनी खे हर आदमी खे शास्त्रा माँएं बतावे ओंदे आपणे कर्तबा रा पालन करना चैं।

नेदं शरीरमस्माकं वस्तून्यपि तथैव हि।
जगत्पतेरिदं सर्वं सर्वस्तमभिसंश्रयेत्॥87॥

हिन्दी– न तो यह शरीर हमारा अपना है और न सांसारिक चीजें हमारी हैं। यह सब कुछ सर्वेश्वर भगवान् का है इसलिए सभी को भगवान् की शरण ग्रहण करनी चाहिए।

बघाटी हिमाचली– इ शरीर बि म्हारा आपणा नी आथि। दुनियाँ री चीजा बि म्हारी नी आथि। इ सब ठेंव भगवाना रा असो एनी खे सबी खे भगवाना रि शरण ग्रहण करनि चैं।

गोविन्द एव सल्लक्ष्यं ऋषिभिः निश्चितं पुरा।
तदर्थमेव तद्दत्तं स्वजीवनं समर्पयेत्॥88॥

हिन्दी– प्राचीन ऋषियों ने भगवान् को प्राप्त करना सबका लक्ष्य बताया है। उन्हीं भगवान् को उनका दिया हुआ यह जीवन भी समर्पित कर देना चाहिए।

बघाटी हिमाचली– ऋषि मुनिए सबीरि मंजल भगवाना खे प्राप्त

करना बताय राखि। तीना भगवाना खे ई तीना रा दीता दा इ जिउण तीना खे ई सौंपणा चैं।

उग्रस्त्वमेव संभूय हन्सि राष्ट्रविरोधिनः।
यथाकालस्तथा कृत्वा राष्ट्रधर्मं हि रक्षसि॥89॥

हिन्दी– आप ही उग्र स्वरूप धारण करके देश के विरोधियों का संहार करते हैं। जिस समय जैसी जरूरत पड़े उस समय आप वैसा काम करके भारत के राष्ट्र धर्म को बचाते हैं।

बघाटी हिमाचली– तूमे ई उग्र रूप दारण कर रो देशविरोधी रा नाश करो। जबे जिशि जरूरत पड़ो तबे तीशा काम कर रो बारता रे राष्ट्र दर्मा खे बचाओ।

प्राप्तव्यं ते न गोविन्द त्रिषु लोकेषु किञ्चन।
कर्मपरम्परार्थं त्वं नित्यं व्यस्तोऽसि कर्मसु॥90॥

हिन्दी– भगवन्! तीनों लोकों में आपके लिए पाने के लिए कुछ भी शेष नहीं है फिर भी सनातन कर्म परम्परा की रक्षा करने के लिए आप अपने कर्मों को करने में व्यस्त रहते हैं।

बघाटी हिमाचली– हे कृष्ण! तिं लोका माँएं तूमा खे पाणि खे कें बि बाकी नी आथि तबे बि सनातन कर्मपरम्परा री रक्षा री खातर तूमे आपणे कामा माँएं व्यस्त रौ।

प्रत्यक्षं वस्तु संसारे यदपीहावलोक्यते।
यदिच्छातोहि तत्सर्वं तस्मै त्वांतु नमो नमः॥91॥

हिन्दी– इस संसार में जो वस्तु दिखाई देती है वह जिसकी इच्छा से पैदा होती है उस आप भगवान् को बार-बार प्रणाम।

बघाटी हिमाचली– इयाँ दुनियाँ माँएं जो बि चीज देखुओ से जसरी इच्छा से पैदा ओ तेस तूमा भगवाना खे बार बार डाल।

अर्थस्त्वं ब्रह्मसूत्राणां भारतार्थोऽसि सर्वशः।
गायत्र्याः मूर्तरूपश्च वेदार्थश्च सुनिश्चितः॥92॥

हिन्दी– आप ब्रह्म सूत्रों के अर्थ रूप हैं। आप सभी प्रकार से भारत रूप हैं। आप ही गायत्री के प्रत्यक्ष रूप और वेदों के अर्थ रूप हैं।

बघाटी हिमाचली– तूमे वेदान्त दर्शना रे अर्थ रूप अरो हर तरह साय भारत देशा रे रूप असो। तूमे ई गायत्री माता रे प्रत्यक्ष रूप अरो वेदा रे अर्थ रूप असो।

त्वमेव सात्त्विकी सृष्टिः राजसी तामसी तथा।
वर्णाश्च ब्राह्मणाद्यास्त्वं पंचभूतमयस्तथा।।93।।

हिन्दी– आप ही सत्त्वगुणी, रजोमयी और तमोगुणी सृष्टि हैं। ब्राह्मणादि वर्ण और पृथिव्यादि पञ्चभूतमय भी आप ही हैं।

बघाटी हिमाचली– तूमे ई सत्त्व गुणि, रजोमयि अरो तमोगुणि सृष्टि असो। ब्राह्मण आदि वर्ण अरो जमीन बगैरा पाञ्जा तत्त्वा आली चीजा बि तूमे ई असो।

जातः पार्थः नृसिंहस्तु ग्रहणात् शरणागतेः।
गुरुर्नारायणो यस्य वासुदेवो जगत्पतिः।।94।।

हिन्दी– भगवान् की शरण ग्रहण करके अर्जुन परमवीर बन गए थे, साक्षात् परमात्मा कृष्ण जिसके गुरु थे।

बघाटी हिमाचली– भगवाना रि शरण ग्रहण करनि साय अर्जुन परमवीर बण गोआ था, साक्षात् नारायण कृष्ण जसरे गुरु थे।

को न जानाति गोपीनां गोपालप्रेमविश्रुतम्।
गायन्ति चैव नृत्यन्ति कृष्णदर्शनलालसाः।।95।।

हिन्दी– कृष्ण की भक्त गोपियों के विख्यात कृष्णप्रेम को कौन नहीं जानता जो कृष्ण को प्राप्त करने की इच्छा से गाती और नाचती थी।

बघाटी हिमाचली– कृष्णा री भक्त गोपी रे मशूर कृष्ण प्रेमा खे कुण नी जाणदा जो कृष्णा खे पाणि री इच्छा साय गाओ अरो नाचो थी।

असंख्यनामधेयाय सकलाकारधारिणे।
समस्त मन्त्रदेवाय विश्वैकपतये नमः।।96।।

हिन्दी– अनगिनत नाम वाले, समस्त प्रकार के रूपों को धारण करने वाले और समस्त मन्त्रों के देवता एक मात्र विश्वेश कृष्ण को मैं प्रणाम करता हूँ।

बघाटी हिमाचली– नगिणत नाँवां आले, सबी किश्मा रे रूप दारण

करनि आले अरो सबी मन्त्रा रे देवते एकमात्र भगवान् कृष्ण खे आऊँ डाल करू।

ब्रह्मारूद्रश्च देवेन्द्रः सर्वे च ऋषयस्तथा।
समर्चयन्ति गोविन्दं कृष्णं नारायणं हरिम्।।97।।

हिन्दी– ब्रह्माजी, रूद्र, देवराज इन्द्र और समस्त ऋषि भगवान् कृष्ण की पूजा करते हैं।

बघाटी हिमाचली– ब्रह्माजी, रूद्र, देवराज इन्द्र अरो सब ऋषि भगवान् कृष्णा रि पूजा करो।

अङ्गवशाद्धि कृष्णस्य शक्तिरानन्दरूपिणी।
उत्पत्तिस्थितिसंहारकारिणी सा शरीरिणाम्।।98।।

हिन्दी– भगवान् कृष्ण की अङ्ग रूप होने से उनकी आनन्दरूप शक्ति शरीरधारियों की उत्पत्ति, पालन और संहार करती है।

बघाटी हिमाचली– भगवान् कृष्णा रि अङ्गरूप होणि री बजा साय तीना रि आनन्द रूप शक्ति प्राणी रि उत्पत्ति, पालन अरो नाश करो।

अर्चयन्तीह देवान्ये स्वपितॄन् ब्राह्मणान् तथा।
सर्वजीवान्तरात्मानं कृष्णं शिवं यजन्ति ते।।99।।

हिन्दी– इस संसार में जो आदमी देवताओं, पितरों और ब्राह्मणों की पूजा करते हैं वे वस्तुतः सभी जीवों के अन्दर के आत्मा परमात्मा कृष्ण या शिव का ही पूजन करते हैं।

बघाटी हिमाचली– इयाँ दुनियाँ माँएं जो आदमि देवते, पितरा अरो ब्राह्मणा रा पुजण करो से असली माँएं सबी जीवा रे बीतरे रौणि आले आत्मा रूप परमात्मा कृष्णा या शिवा रा ई पुजण करो।

ग्रन्थेषु त्वं हि वाङ्मूर्तिः पुस्तके लक्ष्यदर्शकः।
व्यवहारश्च वार्तासु सत्साहित्ये गुरुस्तथा।।100।।

हिन्दी– ग्रन्थों में आप शब्दमूर्ति हैं और पुस्तक में जीवनाद्देश्य के दर्शक। समाचारों में आप व्यवहाररूप और अच्छे साहित्य में आप गुरु स्वरूप हैं।

बघाटी हिमाचली– ग्रन्था माँएं तूमे शब्दमूर्ति अरो कताबा माँएं

जीवना रा उद्देश्य बतावणि आले। खबरा माँएं तूमे व्यवहार रूप अरो अच्छे साहित्य माँएं गुरु रे रूपा माँएं रौ।

कृष्णः हरति पापानि भ्रष्टजनैरपि स्मृतः।
अनिच्छयापि संस्पृष्ट अग्निर्दहति मानवम्॥101॥

हिन्दी– भगवान् कृष्ण भ्रष्ट लोगों द्वारा भी याद किए जाने पर उनके पापों का नाश करते हैं। बिना चाहे भी अग्नि का स्पर्श मनुष्य को जला देता है।

बघाटी हिमाचली– भगवान् कृष्णा खे याद करनि आले भ्रष्ट आदमी रा बि से पाप नष्ट कर देओ। बीना चाए बि छुइं दि आग आदमी खे फुक देओ।

जीवात्मा हि गवाक्षस्ते यस्मात् कर्म निरीक्षसे।
मनुष्यश्चैव यस्मात्त्वां समीक्ष्य संप्रमोदते॥102॥

हिन्दी– जीवात्मा आप भगवान् का रोशनदान है जहाँ से आप मनुष्य के कर्मों को देखते हैं और मनुष्य जिसमें से आपको झांककर खुश होता रहता है।

बघाटी हिमाचली– जीवात्मा त्हारा कृष्णा रा रोशनदान असो जेनी माईं तूमें आदमी रे काम देखो और आदमि जेनी माँएं दे तूमा खे जांक रो खुश ओया करो।

निजप्रयोजनं नास्ति जीवानुग्रहकाङ्क्षया।
अनुग्रहाय सर्वेषां क्रियास्तु परमात्मनः॥103॥

हिन्दी– जीवों पर कृपा करने की आकाङ्क्षा से आप भगवान् का अपना कोई प्रयोजन नहीं है। भगवान् के सभी काम सब पर कृपा करने के लिए ही होते हैं।

बघाटी हिमाचली– सबी प्राणी पाँएं कृपा करनि री इच्छा साय भगवाना रे सब काम सबी पाँएं कृपा करनि री खातर ओया करो।

वचनं मधुरं ते कृष्ण वसनं भूषणं तथा।
चलितं भ्रमितं चैव किं नास्ति मधुरं तव॥104॥

हिन्दी– हे कृष्ण! आपके शब्द, वस्त्र, आभूषण, चाल और भ्रमण

सब कुछ मधुर है। भला आपकी कौन सी वस्तु मधुर नहीं है।

बघाटी हिमाचली– हे कृष्ण! त्हारे शब्द, टाले, जेवर, चाल अरो भ्रमण सब ठेंव मीठा असो। बला त्हारि कुणजि चीज मधुर नी आथि।

पितृणां यजनं लोके गुरुभक्तिस्तथैव च।
सर्वं श्रीकृष्णसेवायाः न षोडशीकलासमम्॥105॥

हिन्दी– संसार में श्राद्ध और गुरु भक्ति आदि सब साधन कृष्ण की सेवा की सोलहवें हिस्से के बराबर भी नहीं हैं।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ माँएं श्राद्ध अरो गुरु रि बगति बगैरा सादन कृष्णा री सेवा रे सोलवें हिस्से रे बराबर बिनी आथि।

जीवो नृत्यति मायातः आत्मज्ञानेन शुध्यति।
कृत्वेह कृष्णकार्यं हि जीवनं सफलं भवेत्॥106॥

हिन्दी– मनुष्य माया नामक शक्ति के वश में होकर नाचता है और वह आत्मज्ञान से शुद्ध होता है। संसार में भगवान् का काम करने से ही जीवन सफल होता है।

बघाटी हिमाचली– आदमि माया रे वशा माँएं ओय रो नाच्या करो अरो आत्मज्ञाना साय से शुद्ध ओय जाओ। दुनियाँ माँएं भगवाना रा काम कर रो ई जीवन सफल ओ।

प्रेतकष्टं तवैवास्ति अखण्डदीप एव च।
नदी वैतरणी चैव लक्ष्मीनारायणस्तथा॥107॥

हिन्दी– प्रेत योनि को होने वाला कष्ट भी आपका ही कष्ट है। आप ही अखण्ड दीप, वैतरणी नदी और साक्षात् लक्ष्मीनारायण हैं।

बघाटी हिमाचली– प्रेता रा कष्ट बि त्हारा ई कष्ट असो। तूमे ई अखण्ड दिउआ, वैतरणि नदि अरो भगवान् लक्ष्मीनारायण असो।

शवः त्वमेव शैवश्च यमो धर्मस्तथैव च।
मृतकस्य गतिस्त्वं हि गतिदाता च सर्वदा॥108॥

हिन्दी– आप ही शव, शैव, यम, धर्म, मृतक की गति और गतिदाता हैं।

बघाटी हिमाचली– तूमे ई शव, शैव, यम, धर्म मृतका रि गति

अरो गति देणि आले असो।

ग्रहाणां च पतिः सूर्यः तेषां ज्योतिर्गतिस्तथा।
त्वं ग्रहगणितं चैव कर्मफलस्य सूचकः॥109॥

हिन्दी– आप ही ग्रहों के स्वामी सूर्य, उनकी ज्योति, गति, ग्रह गणित और कर्मफल के सूचक हैं।

बघाटी हिमाचली– तूमे ई ग्रोआ रे मालक सुरज, तीना रा पेशा, चाल, ग्रहगणित अरो कर्मफला रे सूचक असो।

अच्युतश्चैव रामेशः वासुदेवश्च माधवः।
कृष्णरूपाणि सर्वाणि सीताप्रियश्च गोपिकाः॥110॥

हिन्दी– भगवान् विष्णु, भगवान् शिव, वासुदेव, माधव, राम और गोपियाँ आदि ये सभी एक कृष्ण के ही विविध रूप हैं।

बघाटी हिमाचली– भगवान् विष्णु, शिव जी, वासुदेव, माधव, रामचन्द्र अरो गोपी बगैरा सब एकी कृष्णा रे ई रूप असो।

मातृशक्तिस्तु संसारे राधैव हि समादृता।
तया सहैव कृष्णेन व्याप्तं जगच्चराचरम्॥111॥

हिन्दी– संसार में मातृशक्ति राधा जी का ही आदर होता है। उन्हीं के साथ कृष्ण जी ने जड़ और चेतन संसार को व्यापत कर रखा है।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ माँएं मातृशक्ति राधा जी रा आदर ओ। तीनी रे साथे कृष्ण जीए चेतन अरो अचेतन संसार व्याप्त कर राखा।

धारयति बलिष्ठस्तु नागोऽनन्तः प्रतापवान्।
पूर्णां वसुन्धरामेकः कृष्ण तव सुशासनात्॥112॥

हिन्दी– भगवन्! आपके सुशासन में बलवान् प्रतापी नागराज अनन्त ने अकेले ही पूरी धरती को उठा रखा है।

बघाटी हिमाचली– हे कृष्ण! त्हारे सुन्दर शासना माँएं रय रो ताकतवर प्रतापि नागराज अनन्ते केल्या सारि धरति थाग राखि।

कृष्णनाम महाशक्तिः कलिभावविनाशकम्।
रहस्यं यस्य विज्ञाय शरणं लभते प्रियम्॥113॥

हिन्दी– कृष्ण जी का नाम महाशक्ति है जो कलियुग के बुरे

विचारों का नाश करती है तथा जिनके नाम के रहस्य को जानकर परमात्मा की शरण प्राप्त होती है।

बघाटी हिमाचली– कृष्ण जी रा नाँव महाशक्ति असो जो कलियुगा रे बुरे विचार नष्ट करो अरो जस नाँवां रा रहस्य जाण रो भगवाना रि शरण प्राप्त ओय जाओ।

शिला ताम्रं तथा तोयं शङ्खः पुरुषसूक्तकम्।
गन्धो घण्टा तथा वृन्दा तुभ्यमतीव रोचते॥114॥

हिन्दी– प्रिय भगवन् शालिग्राम शिला, ताम्बा, जल, शङ्ख, पुरुषसूक्त, कुङ्कुम, घण्टी और तुलसी आपको बहुत पसन्द है।

बघाटी हिमाचली– प्रभु जी! तूमे सालीग्राम, ताम्बा, पाणि, शङ्ख, पुरुषसूक्त, कुंगु, गण्टि अरो तुलसि भौत पसन्द करो।

शरीर मपि याः गोप्यः गोविन्दस्येति सेवते।
तासां प्रेम तु दृष्ट्वैव लभन्ते शरणं तव॥115॥

हिन्दी– जो गोपियाँ अपने शरीर को भी आप भगवान् का शरीर मानकर उसकी सेवा करती हैं उनके प्रेम को देखकर ही भक्त लोग आपकी शरण ग्रहण करते हैं।

बघाटी हिमाचली– जो गोपी आपणे शरीरा खे बि तूमा भगवाना रा मान रो तेते रि सेवा करो तीनी रा प्रेम देख रो ई बगत त्हारि शरण ग्रहण करो।

भगवानेव सर्वं हि इति ज्ञानं सुदुर्लभम्।
ज्ञात्वा तु बहु जन्मान्ते इदमाप्नोति मानवः॥116॥

हिन्दी– यह सारा संसार भगवान् ही है, यह ज्ञान पाना बहुत कठिन है। मनुष्य अनेक जन्मों के बाद इस ज्ञान को प्राप्त करता है।

बघाटी हिमाचली– इ सारि दुनियाँ भगवान् ही असो, इ ज्ञान प्राप्त करना बहुत कठिन असो। आदमि भौत जन्मा दे बाद एते खे पाओ।

कृष्ण भावं न जानन्ति संसारेऽसुर बुद्धयः।
प्रेम्णा स्मरन्ति ये त्वां हि त्वद्भावं प्राप्नुवन्ति ते॥117॥

हिन्दी– संसार में असुर बुद्धि के लोग कृष्ण भाव को नहीं जानते।

जो आप भगवान् का प्रेम से ध्यान करते हैं वे आपके परम भाव को प्राप्त होते हैं।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ माँएं असुर बुद्धि रे आदमि कृष्णा रे भावा खे नी जाणदे। जो तूमा भगवाना रा प्यारा साय द्यान करो से त्हारे परम भावा खे प्राप्त ओय जाओ।

बद्धो मुक्तश्च भावौ द्वौ गुणतो स्तः न वस्तुतः।
पिता द्वयोः गुणाः प्रोक्ताः न मोक्षो न च बन्धनम्॥118॥

हिन्दी– बन्धन और मोक्ष दो भाव तीन गुणों से उत्पन्न हैं वस्तुतः नहीं। इन दोनों भावों के पिता तीन गुण ही हैं। वास्तव में न बन्धन है और न मोक्ष।

बघाटी हिमाचली– बन्धन अरो मोक्ष इ दो भाव तिं गुणा रे बच्चे असो, सचके नी आथि। ईना दोइ भावा रे बाव तीन गुण असो। असल माँएं न बन्धन आथि अरो न मोक्ष।

यत्र सत्यं च धर्मश्च नित्यमार्जवमेव च।
तत्र तत्र परो भावः गोविन्दः स्वयमेव च॥119॥

हिन्दी– जहाँ सत्य, धर्म और ईमानदारी रहते हैं वहाँ कृष्णभाव और कृष्ण दोनों रहते हैं।

बघाटी हिमाचली– जेती सच, दर्म अरो ईमानदारि रौ तेती कृष्णभाव अरो कृष्ण दोनों विराजमान रौ।

प्रेम्णा येऽपि समागत्य तवाहमिति याचते।
अभयं सर्वचिन्ताभ्यो दानस्य वचनं तव॥120॥

हिन्दी– जो आपके पास प्यार से आकर आपका होने की मांग करता है, उसको आपने सभी चिन्ताओं से मुक्त करने का वचन दिया है।

बघाटी हिमाचली– जो आदमि तूमा काय प्यारा साए बोलो जे आऊँ त्हारा असू, तेसके तूमे सबी किश्मा रे डरा दे छड़ोणि रा वचन दे राखा।

आत्मा त्वं सर्वयज्ञानां तत्सहभागिनां तथा।
यज्ञकर्ता त्वमेवासि भोक्ता च फलदस्तथा॥121॥

हिन्दी– आप समस्त यज्ञों और उनमें भाग लेने वालों के सारांश हैं। आप ही यज्ञकर्ता हैं और उसके खाने वाले और फल देने वाले भी आप ही हैं।

बघाटी हिमाचली– तूमे सबी किश्मा रे जगा और तीना माँएं बाग लाणि आले रे निचोड़ असो। तूमे ई जग करनि आले, तेते खाणि आले अरो तेते रा फल देणि आले असो।

ब्रह्मादयो नियन्तारः सर्वसंसारिणां सदा।
सूर्यादयः प्रवर्तन्ते तवाज्ञया स्वकर्मसु।।122।।

हिन्दी– संसार वासियों के नियामक ब्रह्मादि देवता और सूर्यादि नव ग्रह आपकी आज्ञा से अपने अपने कामों में लगते हैं।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ रे नियामक ब्रह्मादि देवता अरो सुरज बगैरा नौ ग्रौ त्हारी आज्ञा साय आपणे आपणे कामा माँएं लगे दे रौ।

सर्वप्रकाशकं ते हि चैतन्यं क्व न भासते।
भासमानो हि सर्वत्र जगदिदं प्रकाशसे।।123।।

हिन्दी– आपका सर्वप्रकाशक चैतन्य स्वरूप कहाँ प्रकाशित नहीं होता। आप सर्वत्र प्रकाशमान होकर इस संसार को प्रकाशित करते हो।

बघाटी हिमाचली– त्हारा सबी खे पेशा करनि आला चैतन्य स्वरूप केई नी चमकदा। तूमे सारे प्रकाशनमान ओए रो इयाँ दुनियाँ खे पेशा करो।

त्वदधीनं जगत्सर्वं प्रेमाधीनस्त्वमेव च।
दृष्ट्वा त्वां गोप्यधीनं तु पादयोरूद्धवः पपात्।।124।।

हिन्दी– सारा संसार आपके अधीन है और आप प्रेम के अधीन हैं। आपको आपकी प्रेमिका गोपियों के प्रेम के अधीन देखकर भक्त उद्धव जी उनके चरणों में झुक गए थे।

बघाटी हिमाचली– सारि दुनियाँ त्हारे अधीन असो अरो तूमे प्रेमा रे अधीन असो। तूमा खे गोपी प्रेमा रे अधीन देख रो बगत उद्धव तीनी रे चरण माँएं जुक गोए थे।

हृदयमन्दिरे कृष्णः सर्वजीवेषु सर्वदा।
लोके प्रेमावतारस्तु भारतव्रजपूजितः।।125।।

हिन्दी– भगवान् कृष्ण सभी जीवों के हृदय मन्दिर में निवास करते हैं। संसार में प्रेम के अवतार भगवान् कृष्ण भारतदेशरूप व्रज में पूजित होते हैं।

बघाटी हिमाचली– भगवान् कृष्ण सबी जीउआ रे हृदय मन्दरा माँएं निवास करो। दुनियाँ माँएं प्रेमा रे अवतार भगवान् कृष्ण बारतदेश रूप व्रजा माँएं पूजे जाओ।

राधाकृष्णौ जगत्यां हि प्रेमशिक्षाप्रदौ सदा।
उभयानन्द एकस्तु अभिन्नौ स्तः परस्परम्।।126।।

हिन्दी– भगवान् राधाकृष्ण इस संसार में प्रेम की शिक्षा प्रदान करते हैं। दोनों का आनन्द एक ही आनन्द है। दोनों आपस में एकरूप हैं।

बघाटी हिमाचली– राधा और कृष्ण इयाँ दुनियाँ माँएं प्रेमा रि शिक्षा प्रदान करो। दोइ रा आनन्द एक ही आनन्द असो। दोए आपि माँएं एकरूप असो।

राधाहृदि त्वमेवेह कृष्णहृदि तथैव च।
कामवशं गताः ये तु कामयन्ते त्वकामदम्।।127।।

हिन्दी– आप ही यहाँ राधा के हृदय में रहते हैं और कृष्ण के हृदय में भी। जो लोग काम के अधीन रहते हैं वे निष्कामता को प्रदान करने वाले आपकी कामना करते हैं।

बघाटी हिमाचली– तुमे रादा अरो कृष्ण दोय रे हृदया में निवास करो। इच्छा रे गुलाम आदमि निष्कामता देणि आले तूमा खे पाणा चाओ।

त्वमेव सर्वमूर्तिषु पतीनां च पतिस्तथा।
लक्ष्मीशः रमते लोके स्वप्रेमिभिः वशीकृतः।।128।।

हिन्दी– आप सभी मूर्तियों के अन्दर निवास करते हैं और आप स्वामियों के भी स्वामी हैं। भगवान् लक्ष्मीपति संसार में अपने प्रेमियों के वश में होकर उनसे रमण करते हैं।

बघाटी हिमाचली– तूमे सबी मूर्ति माँएं निवास करो अरो तूमे

मालका रे बि मालक असो। भगवान् लक्ष्मीपति दुनियाँ माँएं आपणे प्रेमी रे बसा माँएं ओय रो तीना साय रमण करया करो।

यद्यदाचरितं लोके कृष्णेन परमात्मना।
सर्वं विश्वहितायैव सर्वं केन हि शक्यते॥129॥

हिन्दी– भगवान् कृष्ण ने दुनियाँ में जो जो चरित्र अपनाए हैं, वे सब दुनियाँ की भलाई के लिए अपनाए हैं। उन सबको कौन अपना सकता है।

बघाटी हिमाचली– भगवान् कृष्णे दुनियाँ माँएं जो जो आचरण अपनावे, से सब दुनियाँ री बलाई री खातर अपनावे। तीना सबी खे कुण कपनाय सको।

दृश्यन्ते याः हि संसारे विकसितास्तु योनयः।
परमचेतनातस्ताः न्यूनाधिकादि संयुताः॥130॥

हिन्दी– संसार में जितनी भी विकसित योनियां दिखाई देती हैं वे सब परमात्मा की चेतना से अल्पाधिक रूप से पैदा होती हैं।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ माँएं जेतणी बि विकसित योनी देखुओ से सब परमात्मा री चेतना दे कम जादे कर रो पैदा ओ।

चिन्तनं चेतनाकार्यं चेतनयैव तु संभवम्।
ब्रह्माण्डघटितं सर्वं चिन्तनं ब्रह्मणो हि तत्॥131॥

हिन्दी– विचार करना चेतना का काम है, वह केवल चैतन्य से होना सम्भव है। ब्रह्माण्ड में घटित सारी घटनाएं परमात्मचेतना की प्रेरणा से होती हैं।

बघाटी हिमाचली– सोचणि रा काम चेतना रा काम असो, से बस चेतना ई साए ओ। ब्रह्माण्डा माँएं गटणि आली सारी गटना परमात्म चेतना री प्रेरणा साय ओ।

गुणशक्त्या तु भूतानि उद्भवन्तीश्वरेच्छया।
जगति सर्वरूपस्त्वं भोक्ता भोग्यं भवान् तथा॥132॥

हिन्दी– आप भगवान् की इच्छा से त्रिगुण शक्ति से भूमि आदि पाञ्च तत्त्व पैदा होते हैं। आप संसार में सर्ववस्तु रूप हैं, भोक्ता भी और

भोग्य भी।

बघाटी हिमाचली– तूमा भगवाना री इच्छा साय त्रिगुणशक्ति साय जमीन बगैरा पाञ्च तत्त्व पैदा ओ। तूमे दुनियाँ माँएं सबी चीजा रे रूपा माँए विद्यमान असो, खाणि आले बि अरो खाणि जोगे बि।

त्वमोंकारध्वनि स्रोतः यक्षो देवपरीक्षकः।
निमीलकः चितेः चक्षोः उन्मीलकस्त्वमेव च॥133॥

हिन्दी– आप ओंकार ध्वनि के स्रोत, देवताओं के परीक्षक यक्ष और जीवात्मा की आँख खोलने और बन्द करने वाले हैं।

बघाटी हिमाचली– तूमे ओंकार ध्वनि रे कारण, देवपरीक्षक यक्ष अरो जीवात्मा रि आख खोलणि रो बन्द करनि आले असो।

यदा यदा हि विश्वेशः समायाति धृतावतारः।
तदा तदा सदा लक्ष्मी जायते तत्सहायिका॥134॥

हिन्दी– जब जब भगवान् अवतार धारण करते हैं तब तब लक्ष्मी जी उनकी सहायिका बन कर उनके साथ में आती हैं।

बघाटी हिमाचली– जबे जबे भगवान् अवतार लय रो आओ तबे तबे माता लक्ष्मि तीना रि सहायक बण रो साथी आओ।

एक एव महाविष्णुः सर्वेषां हृत्सु संस्थितः।
कर्मेक्षकः महासाक्षी अनासक्तः गुणेषु च॥135॥

हिन्दी– एक ही विष्णु भगवान् सब जीवों के हृदयों में विराजमान हैं। वे जीवों के कर्मेक्षक, गवाह और तीन गुण में अनासक्त हैं।

बघाटी हिमाचली– एक ही भगवान् विष्णु सबी जीवा रे हृदया माँएं विराजमान असो से सबी जीवा रे कर्मेक्षक, गवाह अरो तिं गुणा माँएं अनासक्त असो।

वासुदेवोन्मुखाः यज्ञाः वेदाश्चैव हि तत्पराः।
नैवेह तद्विना काचित् लोके या दृश्यते क्रिया॥136॥

हिन्दी– समस्त यज्ञ भगवान् कृष्ण की प्रसन्नता के लिए होते हैं। चारों वेद भी कृष्ण के लिए हैं। संसार में ऐसा कोई काम नहीं है जो भगवान् कृष्ण की सेवा के लिए न हो।

बघाटी हिमाचली– सब जग भगवान् कृष्णा री खातर हो। चार वेद बि तेसरी खातर असो। दुनियाँ रा कोंएं काम ईशा नी आथि जो कृष्णा री खातर नी किया जाँदा।

नारा पुरा जलं प्रोक्तं विष्णोर्हि यद्गृहं स्मृतम्।
स्थितत्वात् सर्वजीवेषु सर्वेषां हितकारकः॥137॥

हिन्दी– परम्परानुसार नारा जल को बताया गया है जो कि भगवान् विष्णु का घर है। वे नारायण समस्त जीवों में रहने से सबके लिए हितकारी हैं।

बघाटी हिमाचली– पराणिए नारा रा मतलब चीश बताय राखा जो भगवान् विष्णु रा गौर असो। से सबी जीवा माँएं रौणि साए सबी रा बला करो।

वक्ता निष्पक्षधर्मस्य कर्ता चैवानुमोदकः।
धर्मशिक्षां प्रदातुं सः देहं गृह्णात्ययोनिजम्॥138॥

हिन्दी– भगवान् निष्पक्ष धर्म के उपदेशक हैं। वे उस धर्म के कर्ता और समर्थक हैं। संसारवासियों को धर्म की शिक्षा देने के लिए वे अभौतिक चेतन शरीर के रूप में जन्म लेते हैं।

बघाटी हिमाचली– भगवान् कृष्ण निष्पक्ष दर्मा रे उपदेशक, कर्ता अरो समर्थक असो। दुनियाँ रे आदमी खे शिक्षा देणि री खातर से अभौतिक चेतन शरीरा रे रूपा माँएं जन्म लौ।

यथा गङ्गादि नद्यो हि सेवन्ते रत्नसागरम्।
श्रेष्ठ पुस्तक वाक्यानि सेवन्ते विश्वरूपिणम्॥139॥

हिन्दी– जिस प्रकार से गङ्गादि नदियाँ रत्नों से भरे सागर की सेवा करती हैं उसी प्रकार श्रेष्ठ पुस्तकों के वाक्य विश्वरूप भगवान् कृष्ण की सेवा करते हैं।

बघाटी हिमाचली– जिशी गङ्गा बगैरा नदी रत्ना साय बरे ओंदे समुद्रा रि सेवा करो तीशी ई सौणी कताबा रे वचन विश्वरूप भगवान् कृष्णा रि सेवा करया करो।

यथा पुरा तु गोपीनां संलक्ष्योऽभूज्जगत्पतिः।
लक्ष्यस्तथा जनानां तु भवेल्लोके जगत्पतिः॥140॥

हिन्दी– जैसे पुराने समय में गोपियों ने विश्वस्वामी भगवान् कृष्ण की प्राप्ति को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया था वैसे ही मनुष्यों को भी उन्हीं को लक्ष्य बनाना चाहिए।

बघाटी हिमाचली– जीशे प्राणे टैमा माँएं गोपिए दुनियाँ रे मालक भगवान् कृष्णा खे पाणि रा आपणे जीवना रा लक्ष्य बणावा था तीशा ई लोका खे बि इ आपणे जीवना रा लक्ष्य बणावणा चैं।

प्रभुभक्तं हि यो द्वेष्टि सः त्वां द्वेष्टि तु निश्चितम्।
त्वयैव रक्षितास्तस्मात् प्रभुप्रियाः हि पाण्डवाः॥141॥

हिन्दी– जो आप कृष्ण के प्रेमी से द्वेष करता है वह आपसे ही द्वेष करता है, इसीलिए आपने अपने प्रेमी पाण्डवों की शत्रुओं से रक्षा की थी।

बघाटी हिमाचली– जो तूमा कृष्णा रे प्रेमी बगता साय जलन करो से तूमा भगवाना साय जलन करो, एनी री खात ही तूमे आपणे प्रेमि बगत पाण्डव तीना रे दुश्मणा दे बचावे थे।

न तवार्पितबुद्धीनां कामः कामाय जायते।
तापे हि भर्जितं बीजं नैव वृक्षाय कल्पते॥142॥

हिन्दी– जो लोग अपनी बुद्धि आपको अर्पित कर देते हैं उनकी कामना अपनी कामना नहीं रह जाती। ताप में भुना हुआ बीज कभी वृक्ष नहीं बन सकता।

बघाटी हिमाचली– जो आदमि आपणा ज्ञान तूमा खे अर्पित कर देओ तेस रि इच्छा आपणि इच्छा नी रय जांदि। तावा माँएं बूजा दा बीज कबे डाल नी बण सकदा।

नमामि व्रजगोपीनां पदरेणून्पुनः पुनः।
कृष्णकथामृतं यासां पुनाति भुवनत्रयम्॥143॥

हिन्दी– मैं व्रज की उन गोपियों की चरणधूलि को बार–बार नमन करता हूँ जिनकी कृष्णकथा का अमृत सारे संसार को पवित्र करता है।

बघाटी हिमाचली– आऊँ व्रजा री तीनी गोपी रे लाता री धूड़ा खे बार बार डाल करू जीनी रा कृष्णकथारूप अमृत सारी दुनियाँ खे पवित्र करो।

एतावन्नैव देहार्थः खाद पिब च नृत्यतु।
देहात्परे हि तद्दातुः नैव ध्यानं हि विस्मरेत्॥144॥

हिन्दी– हमारे शरीर का केवल इतना ही प्रयोजन नहीं है कि खाओ, पीओ और नाचो बल्कि शरीर से परे रहने वाले इस शरीर को देने वाले का ध्यान करना भी नहीं भूलना चाहिए।

बघाटी हिमाचली– म्हारे शरीरा रा बस एतणा ई मतलब नी आथि जे खाओ, पीओ अरो नाचो बल्के शरीरा दे कनारे रौणि आले एस शरीरा खे देणि आले रा द्यान करना कबे नी बुलणा चैं।

मरणं वासनादास्यममृतं हि निवर्तनम्।
सम्प्राप्यकृष्णसंश्रयं नित्यममृतमाप्नुयात्॥145॥

हिन्दी– अपनी वासना या इच्छा की गुलामी मृत्यु है जबकि उससे अलग स्वतन्त्र रहना अमृत है। भगवान् कृष्ण की शरण लेकर नित्य अमृत प्राप्त कर करना चाहिए।

बघाटी हिमाचली– आपणी इच्छा रे गुलाम रौणा मौत असो जबकि तेनी दे आजाद रौणा अमृत असो। भगवान् कृष्णा रि शरण लय रो सदा अमृत प्राप्त कर दे रौणा चैं।

स्वकर्मी लभते मानं हिंसार्थं न कदाचन।
पालनार्थं स्वधर्मस्य संपूज्यते हि सैनिकः॥146॥

हिन्दी– अपना शास्त्रोक्त नियत कर्म करने वाला आदमी हिंसा करने के कारण सम्मान को प्राप्त नहीं करता। एक सैनिक अपने युद्धरूप धर्म का पालन करने से ही पूज्य माना जाता है, हिंसा से नहीं।

बघाटी हिमाचली– शास्त्रा माँएं बतावे दे आपणे कर्मा खे करनि आला आदमि कसके मारनि साए आदर नी पांदा बल्के एक फौजि आपणे युद्धरूप दर्मा रा पालन करनि साय पूज्य माना जाओ, हिंसा साय नी।

कृष्णप्रेममयः नित्यं गोलोकः दुर्लभः व्रजः।
रमेशः रमते यत्र माया मध्येऽप्यमायिकः॥147॥

हिन्दी– नित्य कृष्णप्रेममय वैकुण्ठरूप व्रज दुर्लभ है जहाँ माया के बीच में मायारहित होकर भगवान् विष्णु स्वयं गोपियों से रमण करते हैं।

बघाटी हिमाचली– नित्य कृष्णप्रेममाय वैकुण्ठ व्रज दुर्लभ असो जेती माया रे बीचा माँएं माया रहित ओए रो भगवान् विष्णु आपि गोपी साय रमण करो।

कृष्णलोके शरीरं न नेन्द्रियतृप्तिरेव च।
रमणं शुद्धचित्ताभिः जगत्पतेरदेहिनः॥148॥

हिन्दी– भगवान् कृष्ण के लोक में न यह भौतिक शरीर है और न इन्द्रियों का तर्पण। वहाँ तो शरीर रहित जगत्स्वामी कृष्ण शुद्ध चित्त वाली गोपियों के साथ रमण करते हैं।

बघाटी हिमाचली– भगवान् कृष्णा रे लोका माँएं ना तो इ शरीर आथि अरो ना इनी इन्द्री रा तर्पण। तेती तो शरीर रहित जगत्स्वामि कृष्णा रा शुद्ध चित्ता आली गोपी साय रमण ओंदा रौ।

निजानन्दाय कृष्णेन जीवास्तु रचिताः वयम्।
अस्माकमपि कर्तव्यं दातव्यमपि तत् तथा॥149॥

हिन्दी– भगवान् कृष्ण ने अपने आनन्द के लिए हम लोगों की रचना की है, हम लोगों का भी कर्तव्य बनता है कि हम भी उन्हें आनन्द के बदले में आनन्द प्रदान करें।

बघाटी हिमाचली– भगवाने हामे आपणे आनन्दा री खातर रच राखे, म्हारा बि फर्ज बणो जे हामे बि तीना खे आनन्द प्रदान करू।

अलौकिकं तु दाम्पत्यं राधागोविन्दयोरिदम्।
राधिका रागमुक्ता हि जपाद्या कृष्णलाभदा॥150॥

हिन्दी– राधा और कृष्ण का यह दाम्पत्य सम्बन्ध अलौकिक है। राधा जी रागमुक्त हैं जिनका नाम जपने से कृष्ण भाव की प्राप्ति होती है।

बघाटी हिमाचली– राधा अरो कृष्णा रा इ पति–पत्नी सम्बन्ध एस लोका जीशा जा नी आथि। राधा जी रागा दे मुक्त असो जीयाँ रा नाँव जपणि साए कृष्ण भावा रि प्राप्ति ओ।

नमस्तेऽनन्तरूपाय अनन्तमुखबाहवे।
अनन्तनामधेयाय ब्रह्माण्डधारिणे नमः॥151॥

हिन्दी– आप अगणित रूप, मुख, बाहु और नाम वाले ब्रह्माण्डधारी भगवान् को मेरा प्रणाम है।

बघाटी हिमाचली– तूमा नगिणत शकलि, मुँआं, बाईं, अरो नाँवां आले ब्रह्माण्डदारी खे मेरि डाल असो।

सर्वशक्तिमयः कृष्णः संयुतः जननादिभिः।
गुण रसायनेनेह नानारूपेण भासते॥152॥

हिन्दी– उत्पत्त्यादि कार्यों से युक्त भगवान् कृष्ण सर्वशक्तिमान हैं। गुणों से बने रसायनों से वे इस संसार में अनेक रूपों में दिखाई देते हैं।

बघाटी हिमाचली– उत्पादनादि कामा साय भगवान् कृष्ण सर्वशक्तिमय असो। गुणा रे रसायना साय से इयाँ दुनियाँ में भौत सारे रूपा माँएं देखुओ।

ग्रामे ग्रामे हि देशस्य गृहे गृहे च मन्दिरे।
पूजास्थलेषु यज्ञेषु विष्णोः कृष्णस्य संस्थितिः॥153॥

हिन्दी– हमारे देश के हर गाँव, हर घर, हर मन्दिर, हर पूजा स्थान और हर यज्ञ में भगवान् विष्णुरूप कृष्ण का निवास है।

बघाटी हिमाचली– म्हारे देशा रे हर गाँवां, गरा, मन्दरा, पूजा स्थाना अरो जगा माँएं भगवान् विष्णुरूप कृष्णा रा निवास असो।

वेदे रामायणे चैव महाकाव्ये यद्वर्णितम्।
यत्र कुत्रापि शास्त्रेषु कृष्णः सर्वत्र गीयते॥154॥

हिन्दी– वेदों, रामायण, महाकाव्य और जहाँ तहाँ शास्त्रों में जो वर्णन है वहाँ सभी जगह भगवान् कृष्ण का ही गुणगान है।

बघाटी हिमाचली– वेदा, रामयण, महाकाव्य अरो जेती तेती शास्त्रा माँएं जो वर्णन असो तेती सबी ठें भगवाना कृष्णा रा ई गुणगान असो।

रसान्गृह्णासि वर्षार्थं स्वप्रेमिणां शुभङ्करः।
भोजनं चैव भोक्ता त्वं त्रिगुणाच्च सदा परः॥155॥

हिन्दी– आप पृथ्वी से जो रसों को खींचते हैं वह बरसाने के लिए ही है। आप अपने प्रेमियों का शुभ करते हैं। आप ही भोजन और आप

ही उसको खाने वाले हैं। आप तीन गुणों से अलग अनासक्त होकर रहते हैं।

बघाटी हिमाचली– तूमे बरसावणि री खातर दरती दे रस ग्रहण करो। तूमे आपणे प्रेमी रा शुभ करो। तूमे ई रोटी अरो तूमे ई तेते खाणि आले असो। तूमे तिं गुणा माँएं अनासक्त ओय रो रौ।

नश्वरजीवदेहेषु जीवात्मानो ह्यनश्वराः।
संयोगादुभयोः सृष्टिः वियोगात्प्रलयस्तथा॥156॥

हिन्दी– प्राणियों के नश्वर शरीरों में जीवात्माएं अमर हैं। जीवों और आत्माओं दोनों के संयोग का नाम संसार है और इनके परस्पर वियोग का नाम प्रलय है।

बघाटी हिमाचली– प्राणी रे नश्वर शरीरा माँएं जीवात्मा अमर असो। शरीर अरो आत्मा रे संयोगा साय संसार असो अरो वियोगा साए प्रलय।

कृष्णः चैतन्यशक्तिश्च एक एव हि मूलतः।
भगवानेव शक्तिमान् शक्तिरपि स्वयं हि सः॥157॥

हिन्दी– भगवान् कृष्ण और उनकी चेतना शक्ति मूल रूप से दोनों एक ही तत्त्व है। भगवान् स्वयं ही शक्तिमान् और उनकी शक्ति भी वे स्वयं ही हैं।

बघाटी हिमाचली– भगवान् कृष्ण अरो तीना रि चेतना शक्ति मूल रूपा माँएं दोनों झणे एक ही असो। भगवान् आपी शक्तिमान् असो अरो आपी तीना रि शक्ति असो।

गुणासक्ताः न जानन्ति त्वामजमविनश्वरम्।
वासुदेवं सर्वं ज्ञात्वा गुणाधीनो न जायते।158॥

हिन्दी– गुणों में आसक्त लोग आपके अजन्मा और अनश्वर स्वरूप को नहीं जान सकते। सारा संसार भगवान् कृष्ण का ही रूप है, यह जानकर मनुष्य तीन गुणों के अधीन नहीं होता।

बघाटी हिमाचली– गुणा माँएं आसक्त आदमि त्हारे अजन्मा अरो अनश्वर रूपा खे नी जाणदे। सारि दुनियाँ भगवान् कृष्णा रा ई रूप असो,

ईशा जाण रो आदमि गुणा रे अधीन नी ओंदा।

शुद्धजीवास्तु गोप्यस्ताः चित्संगृहीत मानसाः।
देहकामो न तत्रासीत् कामः निष्कामतां गतः॥159॥

हिन्दी– पवित्रात्मा गोपियाँ कृष्णचेतना से आकर्षित हुई थी, कृष्णदेह से नहीं। गोपियों में कृष्ण शरीर की कामना नहीं रह गई थी। कृष्णचेतना की कामना करने से उनका काम निष्कामता में बदल गया था।

बघाटी हिमाचली– पवित्रात्मा गोपी कृष्णा री चेतना रे प्रति आकर्षित ओई थी, कृष्णशरीरा रे प्रति नी। गोपी माँएं कृष्णा रे शरीरा रि कामना नी रय गोइ थि। कृष्णा री चेतना रि कामना करनि साए तीनी रा काम निष्कामता माँएं बदल गोआ था।

वासनान्तं मनस्तत्र न जीवति ततः परम्।
नाशाय मनसस्तस्मात् कृष्णं हि शरणं व्रजेत्॥160॥

हिन्दी– मन केवल वासना के जिन्दा रहने तक जिन्दा रहता है, वासना के मरने के बाद नहीं। इसलिए मन के नाश के लिए निष्काम कृष्ण की शरण ग्रहण करनी चाहिए।

बघाटी हिमाचली– मन वासना रे जेंवदे रौणि तैं ही जेंवदा रौ, वासना रे मरनि दे बाद नी। एनी खे मना रा नाश करनि खे निष्काम भगवाना कृष्णा रि शरण ग्रहण करनि चैं।

वासनावरणेनेह अकामः प्रभुरावृतः।
तदावरणहर्तृत्वात् स्मृतः कृष्णः जगद्गुरु॥161॥

हिन्दी– इस संसार में निष्काम प्रभु जीवात्मा मनुष्य की वासना के परदे से ढके हुए हैं। उस वासना के परदे का हरण करने के कारण भगवान् कृष्ण को जगद्गुरु बताया गया है।

बघाटी हिमाचली– इयाँ दुनियाँ माँएं निष्काम भगवान् जीवात्मा री वासना रे परदे साय डके दे असो। तेस परदे रा हरण करनि रे कारण भगवान् कृष्णा खे दुनियाँ रा गुरु बताओ।

कृष्ण सुखाय दुःखं हि नरके न मनागपि।
सुखं कृष्णेन विश्वस्य तस्मात्कृष्णसुखं सुखम्॥162॥

हिन्दी– भगवान् कृष्ण को सुख प्राप्त हो, इस इच्छा से नरक में रहने पर थोड़ा भी दुख नहीं है। सुखी कृष्ण से ही संसार को सुख प्राप्त होता है इसलिए कृष्ण का सुख ही सच्चा सुख है।

बघाटी हिमाचली– भगवान् कृष्णा के सुख मीला चैं, इयाँ इच्छा साय नरका माँएं रौणि पाँएं थोड़ा बि दुख नी आथि। सुखी कृष्णा साय ई दुनियाँ खे सुख मीलो, एनिए कृष्णा रा सुख ही असलि सुख असो।

देहे पत्यधिकारो हि नैवात्मसु कदाचन।
गोप्यस्तस्मात्स्म मन्वन्ते पतिं कृष्णं जगत्पतिम्॥163॥

हिन्दी– शरीर पर पतियों का अधिकार होता है, आत्मा पर कदापि नहीं। इसीलिए गोपियाँ जगत्पति कृष्ण को अपना स्वामी मानती थी।

बघाटी हिमाचली– पति रा अधिकार शरीरा पांएं ओ, आत्मा पांएं नी। एनी खे ई गोपी दुनियाँ रे मालका खे आपणा मालक मानो थी।

जीवजन्म हि मायातः गोविन्दस्य तथा न हि।
यः कृष्णजन्म जानाति कृष्णं जानाति सर्वथा॥164॥

हिन्दी– प्राणियों के जन्म कृष्ण की शक्ति माया से होते हैं, कृष्ण जी का जन्म वैसा नहीं होता। जो भगवान् कृष्ण के जन्म को जानता है वह उन्हें पूर्णतया जानता है।

बघाटी हिमाचली– जीव-जन्तु रे जनम कृष्णा री शक्ति माया साय ओ। भगवाना रा जन्म तीशा नी ओंदा। जो भगवाना रे जन्मा खे जाणो से कृष्णा खे पूरी तरह जाणो।

कार्यं किमपि लोके स्यात् न तेषामशुभं भवेत्।
कृष्णः विराजितो येषां हृदयेषु सदा भवेत्॥165॥

हिन्दी– संसार का कोई भी काम हो, उनका कभी बुरा नहीं होता जिनके हृदयों में हमेशा भगवान् कृष्ण विराजमान रहते हैं।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ रा कोंएं जा काम ओ, तीना रा कबे बुरा नीं ओंदा जीना रे दिला माँएं हमेशा भगवान् कृष्ण विराजमान रौ।

दुस्तरा त्रिगुणी माया लोके ते स्मरणं विना।
विश्वं सकलं परमात्मैव ज्ञात्वा त्वां हि नन्दते॥166॥

हिन्दी– आपको याद किए बिना त्रिगुणमयी माया को पार करना कठिन है। यह सब कुछ परमात्मा ही है, आपको इस प्रकार जानकर मनुष्य आनन्द को प्राप्त होता है।

बघाटी हिमाचली– तूमा खे याद किए बिना तीन गुणी माया खे पार करना कठिन असो। इ सब ठेंव भगवान् ई असो, तूमा खे ईशा जाण रो आदमि आनन्दा खे प्राप्त ओ।

त्वत्प्रेमिणो जना लोके त्वत्कर्मार्थं समर्पिताः।
दीयमानं न गृह्णन्ति मुक्तिमपि सुदुर्लभाम्॥167॥

हिन्दी– संसार में आपके काम के लिए समर्पित आपके प्रेमी आपके द्वारा उनको दुर्लभ मोक्ष को दिए जाने पर भी वे उसको ग्रहण नहीं करते।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ माँएं त्हारे कामा खे समर्पित त्हारे बगत त्हारे तीना खे दुर्लभ मुक्ति देणि पाँए बि से तेनी लन्दे ई नी आथि।

जीवाः हि ब्रह्मपर्यन्तं प्रजायन्ते प्रयान्ति च।
कालाधीनास्तु जीवन्ति भवत्प्रेमी कदापि न॥168॥

हिन्दी– ब्रह्मा जी तक जितने भी जीव-जन्तु हैं, जन्मते हैं और मरते हैं। ये जीव काल के अधीन रहते हैं, आप कृष्ण के प्रेमी कालाधीन नहीं होते।

बघाटी हिमाचली– ब्रह्मा जी तैं जेतणे बि जीव-जन्तु असो से जाओ अरो मरो। इ सब काला रे अधीन रय रो जीओ। तूमा भगवाना रे बगत कालाधीन नी ओंदे।

नाभावो हि भवत्पार्श्वे कस्यचिदपि वस्तुनः।
पुनरपि सुशिक्षार्थं कर्मरतस्तु दृश्यसे॥169॥

हिन्दी– आप कृष्ण के पास किसी चीज की कमी नहीं है फिर भी आप संसारजनों को अच्छी शिक्षा देने के लिए सदा कर्मरत रहते हैं।

बघाटी हिमाचली– तूमा भगवाना काए कसि चीजा रि कमि नी आथि तबे बि तूमे दुनियाँ आले खे अच्छि शीख देणि खे आपणे कामा माँएं लगे ओं दे रौ।

आत्मा त्वं सर्वलोकानां ब्रह्मालोकात्परे स्थितः।
त्वदीयं सुन्दरं धाम नश्यत्सु न विनश्यति॥170॥

हिन्दी– आप सब लोकों के आत्मा होकर ब्रह्मा जी के लोक से परे निवास करते हैं। आपका सुन्दर चैतन्य धाम नश्वर संसार के नष्ट होने पर भी नष्ट नहीं होता।

बघाटी हिमाचली– तूमे सबी लोका रे आत्मा ओय रो ब्रह्मा जी रे लोका दे पोरड़े निवास करो। त्हारा सुन्दर चेतन धाम नश्वर दुनियाँ रे नष्ट ओणि पाँएं बि नष्ट नी ओंदा।

त्यक्तुं न प्रकृतिं शक्तः स्वीयं प्रज्ञानवानपि।
जीवाः त्रिगुणबद्धास्तु समाचरन्ति दासवत्॥171॥

हिन्दी– बुद्धिमान आदमी भी अपने स्वभाव को नहीं त्याग सकता। तीन गुणों से बन्धे लोग गुलाम की तरह व्यवहार करते हैं।

बघाटी हिमाचली– आदमि बुद्धिमान ओय रो बि आपणा स्वबाव नी छाड सकदा। तिं गुणा साए बन्दे दे आदमि गुलामा री तरह ब्वार करो।

नियतानि स्वकर्माणि कृष्णमेव समर्पयेत्।
तानि प्रति ममत्वं हि येन नाशं समाप्नुयात्॥172॥

हिन्दी– अपने अपने स्वाभाविक कर्मों को भगवान् कृष्ण को समर्पित करना चाहिए, जिससे उन कामों के प्रति ममता का नाश हो जाए।

बघाटी हिमाचली– आपणे आपणे स्वाभाविक काम भगवान् कृष्णा खे सौंप देणे चैं जनी साए तीना कामा रे प्रति ममता रा नाश ओय जाओ।

गङ्गा त्वमेव गायत्री अवताराः प्रभोस्तथा।
नटस्य तव रूपाणि लोके यत्किञ्च दृश्यते॥173॥

हिन्दी– आप ही गङ्गा जी, गायत्री माता और भगवान् के अवतार हैं। संसार में जो कुछ भी दिखाई देता है वह सब आपका ही अभिनय है।

बघाटी हिमाचली– तूमे ई गङ्गा जी, गायत्री माता अरो भगवाना रे अवतार असो। दुनियाँ माँएं जो कुछ बि देखुओ से सब ठेंव त्हारा ई

स्वाङ्ग असो।

परमांशो हि जीवात्मा विषयानिह सेवते।
मन आश्रृत्य तत्सर्वं तस्मात्तदेव नाशयेत्।।174।।

हिन्दी– परमात्मा का अंश जीवात्मा यहाँ विषयों का सेवन करता है। यह सब मन के कारण होता है इसलिए मन का नाश कर देना चाहिए।

बघाटी हिमाचली– भगवाना रा अंश जीवात्मा एती विषया रा सेवन करया करो। इ सब मना रे कारण ओ, एनी खे मना रा नाश कर देणा चैं।

शुद्धचेतनजीवस्तु संशुद्धचित्परात्मना।
रासं करोति संगम्य विश्वकल्याण हेतवे।।175।।

हिन्दी– शुद्ध चेतन जीवात्मा शुद्ध चित्त परमात्मा से मिलकर संसार के कल्याण के लिए रास नृत्य करती है।

बघाटी हिमाचली– शुद्ध चेतन जीवात्मा शुद्ध चित्त, परमात्मा साय मिल रो दुनियाँ री बलाई री खातर रास नृत्य करया करो।

शास्त्रोक्तं नियतं कर्म नैव त्यक्तुं हि शक्यते।
कृष्णाज्ञया तु कर्माणि कृष्णायैव समर्पयेत्।।176।।

हिन्दी– शास्त्रोक्त स्वाभाविक कर्मों को त्यागा नहीं जा सकता। कृष्णाज्ञा से प्राप्त कर्मों को उन्हीं को सौंपते रहना चाहिए।

बघाटी हिमाचली– शास्त्रा रे बतावे दे स्वाभाविक कामा रा त्याग नी किया जा सकदा। कृष्णाज्ञा साय मीले दे काम तीना खेई सौंप दे रौणा चैं।

कृष्ण एव जगत्सर्वं मधुरश्च मनोहरः।
करोति दृष्टिमात्रेण सः दिव्यामृतवर्षणम्।।177।।

हिन्दी– यह मधुर और सुन्दर संसार कृष्ण का ही रूप है। वे अपनी दृष्टि मात्र से ही दिव्य अमृत बरसाते हैं।

बघाटी हिमाचली– इ मिठि अरो सुन्दर दुनियाँ कृष्ण रा ही रूप असो। से आपणी दृष्टि मात्रा साय दिव्य अमृत बरषाय देओ।

सर्वभूतहितैषीह एकत्वं तु प्रपश्यति।
कृष्ण भावं च संयाति एकत्वं यो हि पश्यति॥178॥

हिन्दी– सभी प्राणियों का हितैषी आदमी सारे संसार में एकत्व देखता है। जो एकत्व के दर्शन करता है वह कृष्ण के परम भाव को प्राप्त होता है।

बघाटी हिमाचली– सबी प्राणी रा बला चाणि आला आदमि दुनियाँ माँएं एकत्व देखो। जो एकत्व रे दर्शन करो से कृष्णा रे परम भावा खे प्राप्त ओय जाओ।

रम्या कृष्णेच्छयोत्पन्ना प्रकृतिरति सुन्दरी।
आनन्दार्थं तु तस्यैव सेव्या नित्यमहर्निशम्॥179॥

हिन्दी– भगवान् कृष्ण की इच्छा से उत्पन्न हुई यह प्रकृति बहुत सुन्दर है। उन भगवान् को आनन्द देने के लिए सदैव भगवती प्रकृति की सेवा करनी चाहिए।

बघाटी हिमाचली– भगवाना कृष्णा री इच्छा से पैदा ओइ दि इ प्रकृति बहुत सुन्दर असो। तीना भगवाना रे आनन्दा री खातर माता प्रकृति रि सदा सेवा करनि चैं।

त्वमेव वेद माता हि सर्वैः वेदैश्च गीयसे।
श्वासेषु हंसरूपस्त्वं सर्वजीवैस्तु गीयसे॥180॥

हिन्दी– आप ही वेदमाता गायत्री हैं जो सभी वेदों द्वारा गायी जाती हैं। सब जीवों की सांसों में आप हंस रूप से गायी जाती हैं।

बघाटी हिमाचली– तूमे ई वेदमाता गायत्री असो जो सबी वेदा रे द्वारा गायि जाओ। सबी जीवा रे शाशा माँएं तूमे हंसा रे रूपा माँए गायि जाओ।

गुणमुक्तं न संसारे किमपि वस्तु गोचरम्।
त्यक्त्वेह गुणसङ्गं हि कृष्ण एवावशिष्यते॥181॥

हिन्दी– संसार में ऐसी कोई वस्तु नहीं दिखाई देती जो तीन गुणों के प्रभाव से मुक्त हो। गुणों के प्रति आसक्ति को त्यागने के बाद कृष्ण भगवान् ही शेष बचते हैं।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ माँएं कोएं इशि चीज नी आथि जो तिं गुणा रे असरा दे बचि दि ओ। गुणा साय आसक्ति छाडणि दे बाद बाकी एक कृष्ण भगवान् ही बाकी बचो।

तत्त्वमेकं जगत्यत्र यस्मिन् सर्वं हि संस्थितम्।
जीवश्चैव हि राधेशः गुणाः प्रकृतेरेव च॥182॥

हिन्दी– इस संसार में एक ही तत्त्व विद्यमान है जिसमें सब कुछ स्थित है, चाहे जीव हों, कृष्ण हों या फिर प्रकृति के गुण।

बघाटी हिमाचली– इयाँ दुनियाँ माँएं एक ई तत्त्व असो जेते माँएं जीव, कृष्ण, प्रकृति रे गुण अरो सब ठेंव विद्यमान असो।

गुणशक्त्या जगत्सर्वं उत्पद्यते विलीयते।
यच्छति जीवनं चैव हरति जीवनं तथा॥183॥

हिन्दी– भगवान् की त्रिगुणमयी शक्ति से सारा संसार पैदा होता है और फिर उसी में विलय हो जाता है। वही जीवन का दाता है और वही उसका हर्ता।

बघाटी हिमाचली– भगवाना री तिं गुणा आली शक्ति साय सारि दुनियाँ पैदा ओ अरो तींदी विलीन ओय जाओ। से ई जिन्दगी रा दाता असो अरो से ई हर्ता।

रागद्वेषौ गुणक्रीड़ा सुखदुःखे तथैव च।
परस्परं हि युध्यन्ति मैत्रीं कुर्वन्ति ते तथा॥184॥

हिन्दी– राग और द्वेष तीन गुणों का खेल है। सुख और दुःख भी वैसे ही हैं। तीन गुण ही आपस में लड़ते हैं और ये ही आपस में मैत्री कर लेते हैं।

बघाटी हिमाचली– राग, द्वेष, सुख और दुःख तिं गुणा रे खेल असो। ए ई आपि माँएं लड़्या करो अरो ए ई दोस्ति करया करो।

यद्यत् करोषि विष्णो त्वं मह्यं ददासि यत् प्रभो।
प्रसन्नस्तेन जीवामि तथैव च जगद् भवेत्॥185॥

हिन्दी– हे विष्णु आप जो कुछ करते हैं या मुझे देते हैं, मैं उससे प्रसन्न हूँ। संसार को भी ऐसी प्रसन्नता की प्रार्थना करना चाहिए।

बघाटी हिमाचली– हे भगवन्! तूमे जो कें करो या माखे देओ, तेनी माँएं आऊँ खुश असू। दुनियाँ खे बि तेनी माँएं खुश ओणि रि प्रार्थना करनि चैं।

कणे कणे त्वमेवासि राधाकृष्णमयं जगत्।
कृष्ण कामफलं गोप्यः कृष्णकाममयं जगत्॥186॥

हिन्दी– आप कण कण में विराजमान हैं। सारा संसार राधा और कृष्ण से युक्त है। कृष्ण जी की कामना करने का फल गोपियाँ हैं। सारा संसार कृष्ण की कामना करने वाला है।

बघाटी हिमाचली– तूमे कणा कणा माँएं विराजमान असो। सारी दुनियाँ माँएं राधा अरो कृष्ण रले मीले ओन्दे असो। कृष्णा रि कामना करनि रा फल गोपी असो। सारि दुनियाँ भगवाना रि कामना करो।

आलिङ्गनं हि गोपीनां आत्मरूपसमर्पणम्।
कस्मै न रोचते क्रीड़ा जीवेन परमात्मनः॥187॥

हिन्दी– गोपियों का भगवान् द्वारा आलिङ्गन करना उनको अपने अस्तित्व का समर्पण करना है। भला किस मनुष्य को जीवात्मा के साथ भगवान् का यह खेल पसन्द नहीं है।

बघाटी हिमाचली– गोपी साय भगवाना रा आलिङ्गन करना तीनी खे आपणे भगवद् भावा रा समर्पण करना असो। भला कस आदमी खे आपणे जीवात्मा साय भगवाना रा इ खेल पसन्द नी आथि।

प्रेमाधीनः यथा कृष्णः नृत्यति व्रजमण्डले।
प्रेमाधीनस्तथैवात्र कृष्णः जगति नृत्यति॥188॥

हिन्दी– प्रेम के अधीन होकर कृष्ण जी जैसे व्रजभूमि में नाचते हैं उसी प्रकार भक्तों के प्रेमाधीन होकर भगवान् संसार प्रांगण में नाचते हैं।

बघाटी हिमाचली– प्रेमा रे अधीन होय रो भगवान् कृष्ण जीशे व्रजा माँएं नाचो तीशे ई से बगता रे प्रेमाधीन ओय रो दुनियाँ रे आंगणा माँएं नाचो।

शरीरं पञ्चभूतान्वितं लयमन्ते प्रयास्यति।
भावं प्राप्तस्तु चिन्मात्रं लोके जीवति जीवति॥189॥

हिन्दी– पांच भूतों से युक्त यह शरीर अन्त में उन्हीं में लीन हो जाएगा लेकिन जो भक्त चिन्मात्र भाव को प्राप्त हो गया है संसार में उसी का जीवन जीवन है।

बघाटी हिमाचली– पाञ्जा तत्त्वा साय बणा ओन्दा इ शरीर आखरी माँएं तीना ई माँएं लीन ओय जाणा पेरि जो बगत चेतनामय बावा खे प्राप्त होय गोआ, दुनियाँ माँएं तेसरा ई जिवणा जिवणा असो।

क्रियाः यस्य शरीरार्थं सः कृष्णप्रेमवञ्चितः।
यश्च करोति कृष्णार्थं सः कृष्णप्रेमपूरितः॥190॥

हिन्दी– जिसके काम केवल अपने शरीर की सेवा के लिए होते हैं वह कृष्ण के प्रेम से वञ्चित रह जाता है लेकिन जो अपने सारे काम कृष्ण के लिए करता है वह सदा कृष्ण प्रेम से भरा रहता है।

बघाटी हिमाचली– जसरे काम केवल आपणे शरीरा री सेवा री खातर ओ से कृष्णा रे प्रेमा दे वञ्चित रय जाओ पेरि जो आपणे काम कृष्णा री खातर करो से कृष्णप्रेमा साय भर जाउओ।

ज्ञातुं प्रेषित उद्धवः गोपीनां कुशलं यदा।
तासां प्रेमाभिभूतः सः प्रणतः पादयोस्तदा॥191॥

हिन्दी– भगवान् कृष्ण ने जब अपने भक्त उद्धव को गोपियों का कुशल समाचार लाने के लिए भेजा, उस समय वे गोपियों के कृष्ण प्रेम से अभिभूत होकर उनके चरणों में झुक गए।

बघाटी हिमाचली– भगवान् कृष्णे जबे आपणा बगत उद्धव गोपी रा कुशल समाचार लेवणि खे बेजा तबे से गोपी रे कृष्णप्रेमा दे प्रभावित होय रो तीनी रे चरणा माँएं जुक गोआ था।

दुर्योधनः यथा दासः गुणानां मनुजो हि यः।
न लोके सुखमाप्नोति पदे पदे तिरस्कृतः॥192॥

हिन्दी– जो व्यक्ति दुर्योधन के समान तीन गुणों का दास होता है वह संसार में सुख नहीं पाता और कदम कदम पर अपमानित होता है।

बघाटी हिमाचली– जो आदमि दुर्योधना री तरह तिं गुणा रा गुलाम ओ से दुनियाँ माँएं सुख नी पाँदा अरो बीखा बीखा पाँएं अपमानित ओंदा रौ।

कर्णवत्तु महावीरः परतो धर्ममीहते।
स्वीयं धर्मं तिरस्कृत्य प्रियः यमाय जायते॥193॥

हिन्दी– जो आदमी महावीर कर्ण के समान स्वयं धर्म रहित होकर दूसरों से धर्म की उमीद रखता है वह अपने धर्म का अपमान करके यमराज को प्रिय हो जाता है।

बघाटी हिमाचली– जो आदमि महावीर कर्णा री तरह आपि धर्म रहित ओय रो रेके दे दर्मा रि उमीद करो से आपणे दर्मा रा अपमान कर रो यमराजा खे प्यारा ओय जाओ।

विस्मरेन्नैव जीवो हि प्रयोजनं स्वजन्मनः।
कृष्ण प्राप्तिस्तु सर्वेषां वेदोक्तं सु प्रयोजनम्॥194॥

हिन्दी– मनुष्य को अपने जन्म लेने का प्रयोजन नहीं भूलना चाहिए, भगवान् कृष्ण को प्राप्त करना ही वेदों में बताया गया श्रेष्ठ प्रयोजन है।

बघाटी हिमाचली– आदमी खे आपणे जमणि रा प्रयोजन नी बुलणा चैं, भगवान् कृष्णा खे प्राप्त करना ई वेदा माँएं बतावा दा श्रेष्ठ प्रयोजन असो।

कर्तव्यानीह सर्वैस्तु सकलानि हि विष्णवे।
सर्वेषां शरणं कृष्णः तस्मै तानि समर्पयेत्॥195॥

हिन्दी– इस संसार में सबको अपने काम भगवान् विष्णु को समर्पित करने चाहिए, सबकी एकमात्र शरण कृष्ण हैं उनको अपने कार्य सौंप देने चाहिए।

बघाटी हिमाचली– इयाँ दुनियाँ माँएं आपणे काम सबी खे भगवान् विष्णु खे सौंप देणे चैं, सबी रे एकमात्र शरण से ई असो तीनाखे आपणे काम सौंप देणे चैं।

नैव त्याज्यं हि कृष्णोक्तं स्वीयं कर्म कदाचन।
त्यागात्तत्कर्मणः मोहात् दुःखमेव हि जायते॥196॥

हिन्दी– भगवान् कृष्ण जी के द्वारा बताया गया अपना निज विशेष कर्म कभी नहीं त्यागना चाहिए। मोह से त्यागे गए उस कर्म से दुःख ही पैदा होता है।

बघाटी हिमाचली– भगवान् कृष्ण जी रा बतावा दा आपणा व्यक्तिगत कर्तव्य कबे नी छाडणा चैं। अज्ञाना साय त्यागे दे तेस कामा साय दुःख ही पैदा ओ।

आसक्त्या जायते पापः अनासक्त्या कदापि न।
अनासक्त्या सदा कुर्यात् स्वीयं कर्म स्वभावजम्।।197।।

हिन्दी– वस्तु के प्रति आसक्ति से पाप होता है, अनासक्ति से कदापि नहीं। इसलिए अपना स्वाभाविक काम अनासक्ति के साथ करना चाहिए।

बघाटी हिमाचली– चीजा साय मोह करनि साए पाप लगो, अनासक्ति साय कबी नी लगदा एनी खे आपणा निर्धारित कर्तव्य अनासक्ति साय करना चैं।

ईश्वरे नास्ति भेदो हि प्रकृत्यां बहवस्तथा।
जन्म भेदः प्रकृत्यां तु नेश्वरे तु कदाचन।।198।।

हिन्दी– ईश्वर में जीवों में भेद नहीं है, प्रकृति में जीवों में बहुत भेद हैं। जन्म से भेद प्रकृति में हैं, ईश्वर में कोई भेद नहीं है।

बघाटी हिमाचली– भगवाना माँएं जीवभेद नी आथि, प्रकृति माँएं जीवा रे भौत भेद असो। जमणि साय फरक प्रकृति माँएं असो प्रकृति माँएं नी।

यथा पतिप्रसादार्थं पतिव्रता तपस्विनी।
विश्वपतिप्रसादार्थं कर्माचरेत्प्रयत्नतः।।199।।

हिन्दी– जिस प्रकार से तपस्विनी पतिव्रता धर्मपत्नी अपने पति की प्रसन्नता लिए कर्म करती है उसी प्रकार भगवान् की प्रसन्नता के लिए हर व्यक्ति को अपना काम करना चाहिए।

बघाटी हिमाचली– जीशा तपस्विनि पतिव्रता लाड़ि आपणे गरा आले री खुशी री खातर काम करो तीशा ई सबी आदमी खे भगवाना री खुशी री खातर आपणा काम करना चैं।

दुःखदं गुणसङ्गो हि सुखं च तदसङ्गतः।
गुणसङ्गं परित्यज्य असङ्गं कृष्णमाश्रयेत्।।200।।

हिन्दी– तीन गुणों में मोह रखना दु:ख देता है। उनको अपना न समझने से सुख होता है। इसलिए गुणों को अपना न मानकर केवल असङ्ग भगवान् कृष्ण का आश्रय लेना चाहिए।

बघाटी हिमाचली–

तिं गुणा खे आपणा समझणा दु:ख दायक ओ। तीना गुणा खे आपणा ना समजणा सुखदायक हो। एनी खे गुणा खे आपणे ना मान रो आसक्ति रहित भगवान् कृष्णा रि शरण लणि चैं।

चेतना ह्यवतारस्य मुक्ता विश्वप्रभावतः।
तस्मै विघ्नानि नायान्ति यथा कृष्णाय नागताः।।201।।

हिन्दी– भगवान् के अवतार की चेतना संसार के प्रभाव से मुक्त होती है। उस चेतना को कभी विघ्न नहीं आते जैसे कि भगवान् कृष्ण की चेतना को नहीं आए।

बघाटी हिमाचली– भगवाना रे अवतारा रि चेतना दुनियाँ रे असरा दे मुक्त रौ। तियाँ चेतना खे कबे रूकावटा नी आँवदी जीशी भगवान् कृष्णा री चेतना खे नी आई।

फलसिन्धुस्तु गोविन्दः अनन्तफलधारकः।
यस्य जीवस्य यत्कर्म लभ्यते तेन तत्तथा।।202।।

हिन्दी– भगवान् कृष्ण कर्मों के फलों के सागर हैं, उनमें अगणित कर्म फल हैं। जिस मनुष्य के जैसे कर्म हैं उसको वैसे ही फल मिलते हैं।

बघाटी हिमाचली– भगवान् कृष्ण कर्मफला रे समुद्र असो, तीना माँएं नगिणत कर्म फल असो। जेस आदमी रे जीशे कर्म ओ तेसके तीशे ई फल मीलो।

अकृष्णज्ञस्तु वेदज्ञः वृथा तस्य हि जीवनम्।
अवेदज्ञस्तु कृष्णज्ञः सफलं तस्य जीवनम्।।203।।

हिन्दी– जो वेदज्ञाता भगवान् कृष्ण को नहीं जानता उसका यह जीवन व्यर्थ है लेकिन वेद को न जानने पर भी भगवान् कृष्ण के ज्ञाता का यह जन्म सफल है।

बघाटी हिमाचली– जो वेदज्ञाता कृष्ण भगवाना खे नी जाणदा

तेसरा इ जीवन व्यर्थ असो पेरि वेदा खे ना जाणदे बि कृष्ण भगवाना खे जाणनि आले रा इ जन्म सफल सफल असो।

वासुदेव इदं सर्वं सर्वलोकेषु विस्तृतम्।
स एव भुञ्जते विश्वं भोक्ता भोज्यं स एव हि।।204।।

हिन्दी– भगवान् कृष्ण का समस्त लोकों में विस्तार है। वे संसार का भोग करते हैं, वही इसे खाने वाले हैं खाने की वस्तु भी वही हैं।

बघाटी हिमाचली– भगवान् कृष्णा रा समस्त लोका माँएं विस्तार असो। से ई संसारा रा बोग करो, सेई खाणि आले अरो सेई खाणि रि चीजा असो।

कृष्णकार्यं विना नैव विदुषा लभ्यते सुखम्।
कृष्णस्य गुणगानेन शान्तिं व्यासो हि लब्धवान्।।205।।

हिन्दी– भगवान् कृष्ण का काम किए बिना विद्वान् भी सुख नहीं पा सकते। भगवान् के गुणगान से ही व्यास जी ने शान्ति का लाभ प्राप्त किया था।

बघाटी हिमाचली– भगवान् कृष्णा रा काम किए विना विद्वान् आदमि बि सुख नी पाय सकदे। भगवाना रे गुणगाना साय ही व्यास जी ए शान्ति प्राप्त कि थि।

सर्वैरसङ्गिना भाव्यं कदाचिन्नैव सङ्गिना।
असङ्गेन हि कृष्णाज्ञा परत्रेह च शर्मणे।।206।।

हिन्दी– सभी मनुष्यों को विषयों में कभी आसक्ति नहीं करनी चाहिए। अनासक्तिपूर्वक कृष्ण जी की आज्ञा का पालन इस लोक और परलोक दोनों में कल्याणकारी है।

बघाटी हिमाचली– सबी आदमी खे दुनियाँ री चीजा माँए कबे आसक्ति नी करनि चैं। अनासक्ति साय कृष्ण जी री आज्ञा रा पालन इयाँ दुनियाँ अरो पोरली दुनियाँ दोनों माँएं कल्याणकारी असो।

अहंता ममता चैव बन्धनायेह रज्जवः।
मायामपेक्ष्य कृष्णस्य कृष्णशरणमाप्नुयात्।।207।।

हिन्दी– मैंपन और अपने से मोह करना इस संसार में बन्धनकारी

रस्सियाँ हैं। तीन गुणों की शरण की अपेक्षा भगवान् कृष्ण की शरण लेनी चाहिए।

बघाटी हिमाचली– आऊँपण अरो मेरापण इयाँ दुनियाँ माँए बन्धनकारी रशी असो। तिं गुणा री शरणा री बजाए भगवान् कृष्णा रि शरण लणि चैं।

लोके पूर्वं नवं वस्तु भगवन्तं निवेदयेत्।
निवेदितं विषं तस्मै प्रह्लादायामृतायितम्।।208।।

हिन्दी– हमको नई वस्तु के उपयोग से पूर्व वह भगवान् को निवेदित करनी चाहिए। भक्त प्रह्लाद के द्वारा उसके पिता द्वारा दिए गए विषयुक्त पदार्थ को भगवान् को निवेदित करने से वह अमृतस्वरूप हो गया था।

बघाटी हिमाचली– नई चीजा रा उपयोग करनि दे पैले से भगवाना खे चढ़ाव लणि चैं। भक्त प्रह्लादे जबे तेसरे बावा रा दीता दा जहरीला पदार्थ भगवाना खे चढ़ावा तो से अमृत बण गोआ था।

मानं गुरोस्तु कर्तव्यं विद्याया उपलब्धये।
लेभे सम्प्रभुतां कृष्णः गुरोरेव सदाशिषा।।209।।

हिन्दी– विद्या की प्राप्ति के लिए गुरु का सम्मान करना चाहिए। भगवान् कृष्ण जी ने अपने गुरु जी के आशीर्वाद से ही भगवत्ता प्राप्त की थी।

बघाटी हिमाचली– विद्या री प्राप्ति खे गुरु रा सम्मान करना चैं। भगवान् कृष्णे आपणे गुरु रा आदर कर रो ई भगवत्ता प्राप्त कि थि।

विषयाः विषसंयुक्ताः आसक्तिं तेषु संत्यज।
रावणीं दुर्गतिं पश्य सौन्दर्यमोहतो हतः।।210।।

हिन्दी– सांसारिक वस्तुएं त्रिगुणरूप विष से संयुक्त होती हैं, उनमें आसक्ति न करो। रावण की दुर्गति को ही देखो, सीता जी की सुन्दरता के मोह से मारा गया।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ री चीजा तिं गुणा रे जैरा आली ओ, तीनी माँएं आसक्ति ना करो। रावणा रि ई दुर्गति देखो, सुन्दरता पाँएं मुग्ध ओय रो मारा गोआ था।

पितरः पितरो नैव साक्षाद् गोविन्द एव ते।
तस्माद् गोविन्द एवेह पूज्यः पितृजनार्दनः।।211।।

हिन्दी– हमारे पितर पितर नहीं, वे साक्षात्कृष्ण हैं। इसीलिए भगवान् कृष्ण ही परम पितर के रूप में पूजे जाते हैं।

बघाटी हिमाचली– म्हारे पितर पितर नी आथि, से साक्षात् कृष्ण ही असो। एनी खे ई भगवान् कृष्ण परम पितरा रे रूपा माँएं पूजे जाओ।

कृष्णप्रेम भवेद्येन तथा क्रीडाः करोति सः।
तेनैव भगवत्प्रेम्णा विश्वजनो हि मोदते।।212।।

हिन्दी– भगवान् ऐसी लीला करते हैं कि जिससे मनुष्यों में उनके प्रति प्रेम जागे। उसी ईश्वर प्रेम से दुनियाँ के लोग प्रसन्न रहते हैं।

बघाटी हिमाचली– कृष्ण जी ईशे खेल खेलो जनी साय आदमी माँएं तीना रे प्रति प्रेम जागो। तेस ही ईश्वरप्रेमा साय आदमि खुश रौ।

आज्ञां ये पालयन्तीह तेषां रोगाः न शत्रवः।
तस्माच्छरणमायान्ति त्वां योगक्षेमवाहकम्।।213।।

हिन्दी– भगवन्! जो लोग भगवान् की आज्ञा का पालन करते हैं उनको न रोग होते हैं और न शत्रु बाधा पहुंचाते हैं इसीलिए वे योग और क्षेम को वहन करने वाले आपकी शरण में आते हैं।

बघाटी हिमाचली– हे कृष्ण! जो आदमि भगवाना री आज्ञा रा पालन करो तीना खे ना रोग ओन्दे अरो ना शत्रु रूकावट पाँ दे। एनी खे ई से योग-क्षेम सम्हालनि आले त्हारि शरणा माँएं आओ।

ईश्वरं ये न मन्यन्ते मन्यन्ते स्वं महेश्वरम्।
सुगतिं तानपि क्रूरान् यच्छति परमेश्वरः।।214।।

हिन्दी– जो लोग भगवान् को नहीं मानते, अपने आपको ही भगवान् मानते हैं भगवान् उन क्रूर लोगों को सजा देकर भी अच्छा स्थान प्रदान करते हैं।

बघाटी हिमाचली– जो आदमि भगवाना खे नी मान्दे, आपि खेई भगवान् समजो भगवान् तीना क्रूरा खे सजा दे रो बि अच्छि जगा देओ।

कर्तव्यरूप धर्मेण हिंसा नैव हि जायते।
सेना वहति कर्तव्यं नैव हिंसां कदाचन॥215॥

हिन्दी– अपने कर्तव्य रूप धर्म को निभाने से कभी हिंसा नहीं होती। सेना अपने कर्तव्य को निभाती है हिंसा नहीं करती।

बघाटी हिमाचली– आपणे कर्तब नबावणि साय कबे हिंसा नी ओन्दि। सेना आपणा कर्तब नबाओ हिंसा नी करदि।

कृष्णस्याहं मदीयः सः कृष्णस्यैव तथा जगत्।
कृष्ण एव हि सर्वेषां सर्वे कृष्णस्य एव च॥216॥

हिन्दी– मैं कृष्ण जी का हूँ, वे मेरे हैं। उसी प्रकार संसार भगवान् का है। कृष्ण ही सबके हैं और सब कृष्ण के हैं।

बघाटी हिमाचली– आऊँ कृष्ण जी रा असू अरो से मेरे असो। तीशा ई संसार भगवाना रा असो। कृष्ण सबी रे असो अरो सब कृष्णा रे असो।

जीवनं प्राणिनां कालः महाकालः परस्तथा।
कालस्तस्मात्प्रणम्यस्तु कृष्णकालस्य लब्धये॥217॥

हिन्दी– प्राणियों का जीवन उनका काल है और महाकाल परमात्मा कृष्ण हैं। इसलिए काल या जीवन प्रणम्य है जिससे भगवान् कृष्ण की प्राप्ति हो।

बघाटी हिमाचली– जीवा रा जीवन तीना रा काल असो। महाकाल भगवान् कृष्ण असो। एनी री बजा साय काला या जीवना खे प्रणाम करना चैं जनी साय भगवान् कृष्णा रि प्राप्ति ओ।

कृष्ण नाम न हि त्याज्यं तेन दत्तं तु कर्म हि।
सर्वं तस्मै प्रदातव्यं सर्वं तदर्थमेव हि॥218॥

हिन्दी– कृष्ण का नाम जपना नहीं त्यागना चाहिए। सब कुछ उन्हीं को अर्पण करना चाहिए क्योंकि यह सब उन्हीं के लिए है।

बघाटी हिमाचली– कृष्णा रे नावाँ रा जप करना नी छाडणा चैं। सब ठेंव तीना खे ई देणा चैं क्योंकि इ सब ठेंव तीना री खातर ही असो।

गुणास्तु कृष्णमाया हि स्वभावोऽपि यदुच्यते।
नास्ति कृष्णः गुणाधीनः जीवोऽपि न भवेत्तथा।।219।।

हिन्दी– गुण कृष्ण की माया है, उसको स्वभाव भी कहते हैं। कृष्ण गुणों के अधीन नहीं हैं, मनुष्यों को भी वैसे बनना चाहिए।

बघाटी हिमाचली– तीन गुण कृष्णा रि माया असो, तेते खे सबाव बि बोली। कृष्ण गुणा रे गुलाम नी आथि, आदमी खे बि तीशे ओणा चैं।

गुणाधीनस्य दुःखं तु गुणजेतुः सदा सुखम्।
कृष्ण प्रेमी गुणान्मुक्तः कृष्णानन्दं लभेद्धि सः।।220।।

हिन्दी– गुणों के गुलाम आदमी को दुःख व्यापता है। गुणजेता सदासुखी रहता है। कृष्ण का प्रेमी गुणों से मुक्त होकर कृष्णानन्द को प्राप्त होता है।

बघाटी हिमाचली– गुणा रा गुलाम आदमि दुःख पाओ। गुणजेता सदा सुख पाओ। कृष्णा रा प्रेमि गुणा दे छुट रो कृष्णानन्द प्राप्त करो।

कृष्णः पूर्णः जगत्पूर्णं पूर्णात्पूर्णं वियोज्य हि।
संयोज्य वा तथा तत्र कृष्ण एवावशिष्यते।।221।।

हिन्दी– भगवान् कृष्ण पूर्ण हैं, संसार पूर्ण है। अगर पूर्ण में से पूर्ण घटाया जाए अथवा पूर्ण में पूर्ण जोड़ा जाए तो शेष कृष्ण ही रहता है।

बघाटी हिमाचली– भगवान् कृष्ण पूरे असो, संसार बि पूरा असो। जे पूरे माँएं दे पूरा गटावी या पूरे माँएं पूरा जोड़ी तो फल कृष्ण ही रौ।

न करोति नरः किञ्चित् कर्ता कृष्णो हि सर्वथा।
निमित्तं सः नरं कृत्वा सर्वं स्वयं करोति तत्।।222।।

हिन्दी– मनुष्य स्वयं कुछ नहीं करता, करने वाले तो भगवान् हैं। भगवान् आदमी को माध्यम बनाकर उसके सारे काम स्वयं करते हैं।

बघाटी हिमाचली– आदमि आपि कुछ नी करदा, काम करनि आले तो भगवान् असो। भगवान् आदमी खे बहाना बणाय रो तेसरे सब काम आपि करो।

निजस्यैवास्दनार्थं तु कृष्णेनैव हि राधिका।
अद्वितीयाद्द्वितीया या प्रेमार्थमिह भाविता।।223।।

हिन्दी– भगवान् कृष्ण ने अपने ही प्रेम के आस्वादन के लिए एक से दो बनकर राधाभाव की रचना की।

बघाटी हिमाचली– भगवान् कृष्णे आपणे प्रेमा रा स्वाद लणि री खातर एकी दे दो झणे ओय रो रादा बावा रि रचना कि।

नाशः विषयकामेन कृष्णकामनया सुखम्।
देहायेह परित्यज्य कुर्यात्कृष्णाय कामनाम्।।224।।

हिन्दी– विषयों की कामना से नाश होता है और कृष्ण की कामना से सुख। यहाँ शरीर के लिए कामना त्याग कर कृष्ण के लिए कामना करनी चाहिए।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ री चीजा खे चाहणि साय नाश ओ अरो कृष्णा रि कामना करनि साय सुख। एती शरीरा री तैं कामना छाड रो कृष्णा री तैं कामना करनि चैं।

जल सिन्धुर्यथा लोके प्रभुप्रेम तथैव हि।
यस्यापि यावती वाञ्छा गृह्णातीह तथैव सः।।225।।

हिन्दी– दुनियाँ में जैसे पानी का समुद्र होता है कृष्ण प्रेम का समुद्र भी वैसा ही है। जल हो या कृष्ण प्रेम जिसको जितनी प्यास होती है उतना भर लेता है।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ माँएं जीशा पाणी रा समुद्र ओ कृष्ण प्रेमा रा समुद्र बि तीशा ई ओ। जसके जेतणि जरूरत हो से तेतणा तीना माँएं दे भर लौ।

आज्ञास्तु सर्वशास्त्राणां कृष्णे सन्ति समाहिताः।
प्रेम्णैव प्राप्यते कृष्णः तस्मात्तत्तु समभ्यसेत्।।226।।

हिन्दी– सभी शास्त्रों की आज्ञाएं भगवान् कृष्ण में समाहित हैं। भगवान् कृष्ण प्रेम से प्राप्त होते हैं इसलिए उसका अभ्यास करना चाहिए।

बघाटी हिमाचली– सबी शास्त्रा रि आज्ञा भगवान् कृष्णा री ई आज्ञा असो। भगवान् प्रेमा साए प्राप्त ओ, एनी खे तेते रा भ्यास करना चैं।

प्राप्तेरिच्छा सदा मोक्षे प्रेम्णि दानस्य केवलम्।
स्यात्प्र भोरिच्छया मोक्षः स्वेच्छया प्रेम सर्वदा।।227।।

हिन्दी– मोक्ष की इच्छा में कुछ पाने की इच्छा रहती है। प्रेम में केवल देने की इच्छा रहती है। मोक्ष भगवान् की इच्छा पर निर्भर है लेकिन प्रेम हमारी अपनी इच्छा पर निर्भर है।

बघाटी हिमाचली– मोक्षा री इच्छा माँएं कें पाणि रि इच्छा रौ। प्रेमा माँए बस देणि रि इच्छा रौ। मोक्ष भगवाना री इच्छा पाँएं निर्भर असो जब कि प्रेम आपणी इच्छा साय ओ।

संस्थितो सर्वजीवेषु प्रेमिषु तु विशेषतः।
त्यजसि नैव गोविन्द कदापि शरणागतान्।।228।।

हिन्दी– आप भगवान् समस्त जीवों के अन्दर हैं, कृष्ण प्रेमियों में तो विशेष रूप से हैं। हे कृष्ण, आप अपनी शरण में आए हुए लोगों का कभी त्याग नहीं करते।

बघाटी हिमाचली– तूमे भगवान् सबी प्राणी माँएं रौ, खास कर रौ आपणे प्रेमी माँएं। भगवन् तूमे आपणी शरणा माँएं आए ओंदे लोका खे कबे छाडदे नी आथि।

सनातनो हि रूपस्ते धर्मरूपस्त्वमेव हि।
तस्मात्संपूज्यसे लोके सनातनस्य संज्ञया।।229।।

हिन्दी– आपका रूप सनातन है, धर्मरूप भी आप हैं। इसी कारण संसारी लोग सनातन धर्म नाम से आपको पूजते हैं।

बघाटी हिमाचली– त्हारा रूप सनातन अरो धर्म असो। एते री बजा साय दुनियाँ रे आदमि तूमा खे सनातन धर्मा रे नावाँ साय पूजो।

कर्मकाण्डं मुहूर्तं च पर्वतीर्थव्रतानि च।
कृष्णाज्ञया प्रवर्तन्ते शान्ति र्हि यस्य पालनात्।।230।।

हिन्दी– कर्मकाण्ड, मुहूर्त, पर्व, तीर्थ और व्रत आदि सब कृष्ण की आज्ञा से मनाए जाते हैं, जिनका पालन करने से शान्ति प्राप्त होती है।

बघाटी हिमाचली– कर्मकाण्ड, मुर्त, त्वार, तिर्थ अरो बर्त बगैरा सब कृष्णा री आज्ञा साय मनाए जाओ जेते रा पालन करनि साय शान्ति मीलो।

वेदवेद्यं न जानाति वृथा तस्यहि जीवनम्।
जानाति वेदवेद्यं यः राधाकृष्णमयो हि सः।।231।।

हिन्दी– जो आदमी वेदों से जानने योग्य को नहीं जानता उसका जीवन व्यर्थ है। जो उसको जानता है वह राधाकृष्णमय हो जाता है।

बघाटी हिमाचली– जो आदमि वेदा साय जाणनि जोगे खे नी जाणदा तेसरि इ जिन्दगि बेकार असो पेरि जो तेसके जाणो से राधाकृष्णमय ओय जाओ।

कृष्णस्य प्रेमिणां लोके मरणं नैव जायते।
कृष्णप्रेमामृतं पीत्वा कृष्ण भावे प्रमोदते।।232।।

हिन्दी– दुनियाँ में कृष्ण प्रेमियों का कभी मरण नहीं होता। कृष्ण प्रेमामृत को पीकर मनुष्य कृष्ण भाव से आनन्दित रहता है।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ माँएं कृष्ण प्रेमी रा कबे मरण नी ओंदा। कृष्ण प्रेमामृत पि रो आदमि कृष्ण बावा साय आनन्दित रौ।

यथा हि सहजं बाल्यं वृन्दावनेऽपि तत्तथा।
न देहकामलेशोऽपि दृश्यते प्रेमयोगिनाम्।।233।।

हिन्दी– जैसे बचपन स्वाभाविक होता है वृन्दावन में भी सब कुछ वैसा ही स्वाभाविक है। प्रेम योगियों में ''मैं शरीर हूँ'' यह विचार बिल्कुल नहीं होता।

बघाटी हिमाचली– जीशा बचपण स्वाभाविक ओ वृन्दाबणा माँएं बि सब कुछ तीशा ई असो। प्रेमयोगी माँएं ''आऊँ शरीर असू'' इ विचार बिल्कुल नी ओंदा।

भावमयं जगत्सर्वं यत्किञ्चिदपि दृश्यते।
भावमयो हि गोविन्दः तस्यांशोऽपि भावजः।।234।।

हिन्दी– जो कुछ भी दिखाई देता है, यह संसार एक विचार है। कृष्ण भी एक विचार है तथा उनका अंश जीवात्मा भी एक विचार है।

बघाटी हिमाचली– जो कें बि दुनियाँ माँएं देखुओ से सब एक विचार असो। कृष्ण भगवान् बि एक विचार असो अरो तीना रा अंश जीवात्मा बि एक विचार असो।

इदं सर्वं हि कृष्णस्य इति सततचिन्तनात्।
सङ्गो न जायते तस्मिन् कृष्णसङ्गं प्रयाति च॥235॥

हिन्दी– यह सारा संसार कृष्ण का है, ऐसा निरन्तर ध्यान करने से उसमें आसक्ति नहीं होती और भगवान् कृष्ण की सङ्गति प्राप्त होती है।

बघाटी हिमाचली– इ सारि दुनियाँ कृष्ण भगवान् जी रि असो, ईशा लगातार द्यान करनि साय तिंदि आसक्ति नी ओंदि अरो भगवान् कृष्णा रि सङ्गति प्राप्त ओ।

जीवात्मना हि लोके तु यत्किञ्चाप्यानुभूयते।
समलमीश्वरस्तद्धि अमलमिह तत्परम्॥236॥

हिन्दी– संसार में मुनष्य द्वारा जो कुछ भी अनुभव किया जाता है, वह मलयुक्त ईश्वर है निर्मल परमात्मा उस मल से परे है।

बघाटी हिमाचली– आदमि दुनियाँ माँएं जो कें अनुभव करो, से मौला आला ईश्वर असो। निमला भगवान् तेईदे पोर्ड़ा असो।

सेवन्ते विश्वराज्यं ये पञ्चभूताधिदेवताः।
तेषु सर्वेषु सम्पूज्यः एक एव हि विश्वराट्॥237॥

हिन्दी– इस दुनियाँ के राज्य को पञ्चमहाभूतों के अधिदेवता सुशासित करते हैं। उन पाञ्चों अधिदेवताओं के अन्दर एक ही भगवान् कृष्ण पूजे जाते हैं।

बघाटी हिमाचली– इयाँ दुनियाँ रे राज्य माँएं पाञ्जा तत्त्वा रे देवते सौणा शासन करो। तीना पाञ्जा देवते माँएं एक कृष्ण भगवान् ही पूजे जाओ।

कुलेष्टेषु हि देवेषु इतरेषु तथैव च।
सुनेतृषु च सर्वेषां कृष्ण एव विराजते॥238॥

हिन्दी– हमारे कुलेष्ट देवताओं, अन्य देवताओं और अच्छे राजनेताओं में भगवान् कृष्ण ही विराजमान रहते हैं।

बघाटी हिमाचली– म्हारे कुलेष्ट देवते, ओरी देवते अरो अच्छे राजनेते माँएं भगवान् कृष्ण ही विराजमान रौ।

प्रेमपिपासया कृष्ण द्वितीयं भावितं त्वया।
पिपासा सैव संसारे जनेष्वद्यापि दृश्यते।।239।।

हिन्दी– अपनी प्रेम की प्यास के कारण स्वयं आप एक से दो बन गए। आज भी दुनियाँ में आपकी प्रजा में वह प्यास देखी जाती है।

बघाटी हिमाचली– आपणी प्रेमा री चीशा साय तूमे एकी दे दो ओय गोए। आज बि त्हारी दुनियाँ रे लोका माँएं से चीश देखुओ।

कणे कणे हि विश्वात्मा जगति क्व न राजते।
सर्वजीवेन्द्रियैः युक्तः सर्वं करोति सर्वतः।।240।।

हिन्दी– इस संसार में कण कण में रहने वाले भगवान् कहाँ कहाँ नहीं विराजते हैं, समस्त इन्द्रियों वाले वे सभी ओर से सब काम करते हैं।

बघाटी हिमाचली– कणा कणा में रौणि आले भगवान् इयाँ दुनियाँ माँएं केई केई नी रौंदे, सबी इन्द्री आले से सबी कनारे दे सब ठेंव करो।

शक्तिमानिह शक्तिश्च क्वचिन्नेह तु विद्यते।
गोविन्दः शक्तिमान् तत्र राधा चैव हि शक्तिका।।241।।

हिन्दी– शक्तिमान् प्रभु और उनकी शक्ति इस दुनियाँ में कहाँ नहीं रहते। भगवान् कृष्ण शक्तिमान् हैं और राधा जी उनकी शक्ति हैं।

बघाटी हिमाचली– शक्तिमान् भगवान् अरो तीना रि शक्ति इयाँ दुनियाँ माँएं केई नी रौंदे। कृष्ण जी शक्तिमान् असो अरो राधा जी तीना रि शक्ति असो।

गुणेषु कृष्णचैतन्यं कृष्णे नैव गुणत्रयम्।
चैतन्यं गुणाश्चैव सुशोभन्ते कणे कणे।।242।।

हिन्दी– गुणों में कृष्ण जी की चेतना रहती है और उनको तीन गुण प्रभावित नहीं करते। चेतना और गुण दोनों कण कण में रहते हैं।

बघाटी हिमाचली– तिं गुणा माँएं भगवाना रि चेतना असो पेरि तीना पाँएं तीन गुण असर नी करदे। चेतना अरो गुण दोए कणा कणा माँएं रौ।

शरीरमेव सर्वस्वं सर्वं देहार्थमेव च।
खाद पिब च मोदस्व मोहोऽयमज्ञता महा।।243।।

हिन्दी– शरीर ही सब कुछ है, सब कुछ इस शरीर के लिए है। अतः खाओ, पीओ और मौज करो, इस प्रकार का ज्ञान महा अज्ञान है।

बघाटी हिमाचली– शरीर ही सब ठेंव असो, सब ठेंव शरीरा री खातर असो। खाओ पीओ अरो मौज करो, ईशा ज्ञान महा अज्ञान असो।

यत्रापि प्रेम लोके हि मानवेष्विह दृश्यते।
तत्र तत्र तु वैकुण्ठः गोविन्दोऽद्वैतमेव च।।244।।

हिन्दी– दुनियाँ में जहाँ भी मनुष्यों में प्रेम देखा जाता है वहाँ वहाँ वैकुण्ठ, कृष्ण और अद्वैत है।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ माँएं जेती बि आदमी माँएं प्रेमदेखु ओ तेती तेती वैकुण्ठ, कृष्ण अरो अद्वैत असो।

कार्यं किमपि लोके स्यात् स्मर्तव्याःह्यधिदेवताः।
दृष्ट्वा तेषु जगन्नाथं संपूजयेद्यथा विधिः।।245।।

हिन्दी– दुनियाँ में कोई सा काम हो उन उन कामों के अधिष्ठाता देवताओं का ध्यान करना चाहिए। उन सबमें भगवान् को देखना चाहिए और उनका यथाशास्त्रविधि पूजन करना चाहिए।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ माँएं कोंएं जा काम ओ तीना सबी रे अधिष्ठातृ देवते रा ध्यान करना चैं। तीना सबी माँएं भगवान् देखणे चैं अरो शास्त्रविधि रे अनुसार तीना रा पुजण करना चैं।

यद्गोविन्दे तदन्यत्र यन्न तस्मिन् न तत्क्वचित्।
सर्वरूपं हि गोविन्दं सर्वः सर्वत्र चिन्तयेत्।।246।।

हिन्दी– जो कुछ भगवान् कृष्ण में है वह सब कुछ सारी दुनियाँ में है, जो उनमें नहीं है वह सारी दुनियाँ में भी नहीं है। सभी लोगों को सब जगह सर्वरूप भगवान् का चिन्तन करना चाहिए।

बघाटी हिमाचली– जो कुछ भगवान् कृष्णा माँएं असो से सब ठेंव सारी दुनियाँ माँएं असो। जो कुछ तीना माँएं नी आथि से सारी दुनियाँ माँएं केई बिनी आथि। सबी आदमी खे सारे सर्वरूप कृष्णा रा चिन्तन

करना चैं।

कुर्यान्मम हि गोविन्दः स्वेच्छया किमपीह सः।
चिन्ता मनसि नैवास्ति कुर्यात्सो हि यथोचितम्।।247।।

हिन्दी– भगवान् कृष्ण इस संसार में मेरा कुछ भी करें, अपनी इच्छा से करें। मेरे मन में कोई चिन्ता नहीं है, उनको जो सही लगे वह करें।

बघाटी हिमाचली– भगवान् कृष्ण इयाँ दुनियाँ माँएं मेरा कुछ बि करो, आपणी इच्छा साय करो। मेरे मना माँएं कोई चिन्ता नी आथि, तीना खे जो ठीक लगला से कर ले।

ईहते यः शुभं नित्यं प्राप्नोतीह सदा शुभम्।
यो कृष्णमीहते नित्यं तस्य किं न भवेत्शुभम्।।248।।

हिन्दी– जो आदमी हर रोज शुभ चाहता है वह सदा शुभ फल ही पाता है, जो हर रोज भगवान् कृष्ण को चाहता है उसका सभी कुछ शुभ ही होता है।

बघाटी हिमाचली– जो आदमि रोज शुभ चाओ तेसरा सदा ई शुभ ओ। जो सदा भगवान् कृष्णा खे चाओ तेसरा सब ठेंव शुभ ओ।

प्राणैस्तु ब्रह्मकाले त्वं देहं करोषि पावनम्।
अमृतं जगते दत्त्वा पिबसि च विषं स्वयम्।।249।।

हिन्दी– भगवन्! आप प्रातः ब्रह्ममुहूर्त्त में शरीरों को प्राणशक्ति से पवित्र करते हैं। दुनियाँ को अमृत बाँटकर स्वयं विषपान करते हैं।

बघाटी हिमाचली– हे कृष्ण! तूमे भल्खि ब्रह्ममुहूर्ता माँएं शरीरा खे प्राणशक्ति दे रो पवित्र करो। दुनियाँ खे अमृत बान्ड रो जैर आपि पि जाओ।

यो विषयविषाद् भीतः रूद्रं हि त्वामुपासते।
भयं सर्वमपाकृत्य शिवाय तस्य जायसे।।250।।

हिन्दी– जो आदमी सांसारिक विषयों के विष से डर कर आपके रूद्र रूप की उपासना करता है, उसके सारे भयों को दूर कर आप उसके लिए कल्याणकारी बन जाते हो।

बघाटी हिमाचली– जो आदमि दुनियाँ री चीजा रे जैरा दे डर रो त्हारे रूद्ररूपा खे पूजो, तूमे तेसरे सारे डौर दूर कर रो तेसके कल्याणकारि बण जाओ।

महामायापि गोविन्दः शक्तिर्या हि जगत्पतेः।
कृष्णरूपेण तत्पूजा प्रापयति तमेव हि।।251।।

हिन्दी– विश्वस्वामी श्रीकृष्ण की शक्ति महामाया भी वे स्वयं ही हैं, कृष्ण रूप मानकर उस शक्ति की पूजा से भी वे स्वयं ही प्राप्त होते हैं।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ रे मालक कृष्णा रि शक्ति महामाया बि से आपी असो, तियां रि कृष्णरूपा माँएं पूजा बि तीना खे ई प्राप्त कराओ।

राष्ट्रधर्मो हि सर्वेषां सुखदं राष्ट्रवासिनाम्।
सर्वः जीवति सर्वस्मै न कोऽपि दुःखभाग्भवेत्।।252।।

हिन्दी– हमारे समस्त देशवासियों के लिए राष्ट्रधर्म सुखदायक है। यहाँ सभी सबके लिए जीते हैं, जिससे कोई दुःखी नहीं होता।

बघाटी हिमाचली– म्हारे सबी देशवासी खे राष्ट्र धर्म सुखदायक असो। एती सब सबी री खातर जीओ, जेनी साय कोएं दुःखि नी ओंदा।

आसनमेव योगः न प्राणायामो हि नैव च।
येनैव प्राप्यते कृष्णः योगः लोके तदेव तु।।253।।

हिन्दी– केवल आसन लगाना ही योग नहीं है, केवल प्राणायाम करना भी योग नहीं है। संसार में योग तो केवल वह है जिससे भगवान् कृष्ण प्राप्त होते हैं।

बघाटी हिमाचली– केवल आसन करना या प्राणायाम करना ई योग नी ओन्दा। दुनियाँ माँएं योग तो बस से ओ जनी साय भगवान् प्राप्त ओय जाओ।

भक्तो हि प्रभुकार्येण भगवद्वद्धि जायते।
कार्यं कृत्वा हि रामस्य हनुमान्भगवान्स्मृतः।।254।।

हिन्दी– भक्त भगवान् का काम करने से भगवान् की तरह ही हो

जाते हैं। भक्त हनुमान जी भगवान् राम जी का काम करने से भगवान् कहलाते हैं।

बघाटी हिमाचली– बगत भगवाना रा काम करनि साय भगवाना जीशे जे ओय जाओ। बगत अणुमान् जी भगवान् राम जी रा काम करो से भगवान् ओय गोए।

कल्याणाय हि सर्वेषां विषं पिबसि सर्वदा।
सागरमथने पूर्वं त्वयैव रक्षितं जगत्।।255।।

हिन्दी– भगवन्! आप विश्वजनकल्याण के लिए हमेशा विषपान करते हैं। प्राचीन काल में समुद्र मन्थन के समय आपने विषपान करके संसार की रक्षा की थी।

बघाटी हिमाचली– भगवन्! तूमे दुनियाँ रे सबी आदमी री रक्षा खे हमेशा विषपान करो। प्राणे जमाने माँएं समुद्रमन्थना रे बक्ता विषपान कर रो तूमे ई दुनियाँ रि रक्षा कि थि।

हितभावो हि जीवानां सर्वेषां कृष्ण उच्यते।
तस्योपासनया लोके सर्वहितं तु जायते।।256।।

हिन्दी– सभी जीवों के प्रति भलाई करने की भावना का नाम कृष्ण है। उनकी उपासना करने से संसार में सबका हित होता है।

बघाटी हिमाचली– सबी प्राणी री बलाई करनि रि बावना खे कृष्ण बोली। तीनारि उपासना करनि साय दुनियाँ माँएं सबी रा बला ओ।

जीवनं कर्मणैवेह ज्ञानाश्रितं हि कर्म च।
कुर्यादिह तस्मान्नित्यं ज्ञानेन कर्म सर्वथा।।257।।

हिन्दी– संसार में जीवन केवल कर्म से चलता है। ज्ञान के विना कर्म नहीं होता। इसलिए हमेशा कर्म ज्ञानपूर्वक करना चाहिए।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ माँएं जिंदगि केवल कर्मा साय ही चलो। ज्ञाना दे बिना काम नी ओंदा। एनी खे काम हमेशा ज्ञान लय रो करना चैं।

कृष्ण कृष्ण समागच्छ मे चित्ते वसतिं कुरू।
विधर्मिणो हि मे कामान् विद्रावय त्वरं त्वरम्।।258।।

हिन्दी– हे कृष्ण! आओ और मेरे मन में वास करो। मेरे मन में से स्वभाव के विपरीत इच्छाओं को भगा दो।

बघाटी हिमाचली– हे कृष्ण! आओ अरो मेरे मना माँएं वास करो। मेरे मना माँए दे मेरे स्वभावा दे विपरीत इच्छा खे बगाय देओ।

बुद्धिः शक्तिः शरीरे ते विश्वसारा मता हि या।
तद्रूपां त्वामहं पादौ प्रणमामि पुनः पुनः।।259।।

हिन्दी– शरीर में आप बुद्धिशक्ति रूप हैं जो कि संसार का सारांश है। मैं बुद्धि रूप आप के चरणों में बार बार प्रणाम करता हूँ।

बघाटी हिमाचली– शरीरा माँएं तूमे बुद्धिशक्तिरूप असो जो दुनियाँ रा निचोड़ असो। तेस त्हारे रूपा रे चरणा माँएं आऊँ बार बार डाल करू।

प्रकृतिस्तु गुणा एव स्वभावोऽपि तदेव च।
मृत्युमेति गुणाधीनः गुणमुक्तः सदामृतम्।।260।।

हिन्दी– तीन गुणों को ही प्रकृति कहते हैं और स्वभाव भी वही है। गुणों के अधीन रहने वाला मृत्यु को प्राप्त होता है और गुणमुक्त अमृत को प्राप्त करता है।

बघाटी हिमाचली– तिं गुणा खे प्रकृति बोली अरो स्वभाव बि सेई असो। गुणा रे गुलामा खे मौत मीलो अरो गुणा दे आजादा खे अमृत या भगवान्।

चिन्मयानि शरीराणि कृष्णलोके भवन्ति हि।
नियम्यन्ते यतो लोकाः सर्वे ब्रह्माण्डवर्तिनः।।261।।

हिन्दी– भगवान् कृष्ण के लोक में शरीर चेतनामय होते हैं, जहाँ से ब्रह्माण्ड के सभी लोक सञ्चालित होते हैं।

बघाटी हिमाचली– भगवान् कृष्णा रे लोका माँएं शरीर चेतना आले ओ, जेती दे ब्रह्माण्डा रे सब लोक शासित ओ।

पीडितानां प्रति त्वं तु करूण इह जायसे।
विशेषतः तव प्रेमी कष्टमनुभवेन्नहि।।262।।

हिन्दी– हे भगवान्! आप दुनियाँ में पीड़ितों के प्रति दयावान रहते

हैं, विशेषकर आपके भक्तों को कष्ट नहीं होता।

बघाटी हिमाचली– भगवन्! तूमे दुनियाँ माँएं दुःखी पाँएं दयावान् रौ, खासकर रो त्हारे बगता खे कष्ट नी ओंदा।

निर्दोषान् हन्ति येऽपीह आतंकिनो हि दानवाः।
रक्षन्ति ये च निर्दोषान् ते सन्तीहातिमानवाः॥263॥

हिन्दी– दुनियाँ में जो बेकसूर लोगों को कष्ट देते हैं वे सब आतङ्की होते हैं। जो यहाँ बेकसूरों की रक्षा करते हैं वे विशेष प्रकार के मनुष्य होते हैं।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ माँएं जो बेकसूर आदमी खे कष्ट देओ से आतङ्कि ओ। जो बेकशूरा रि रक्षा करो से खास किशमा रे आदमि ओ।

समानाः मनुजाः सर्वे लोके जीवन्ति ये ननु।
विधानं हि समं तेभ्यः धर्मनाम्ना प्रशस्यते॥264॥

हिन्दी– संसार में जी रहे सब लोग समान हैं। उनके लिए जो समानता का कानून है वह धर्म कहलाता है।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ माँएं जिवणि आले सब आदमि बराबर असो। तीना खे जो बराबरी रा कानून असो तेते खे दर्म बोलो।

शक्तः साधून्हि रक्षितुं गोविन्दः परमः प्रभुः।
तदर्थं प्रार्थनीयः सः नित्यमेव धरातले॥265॥

हिन्दी– सज्जन लोगों की रक्षा परमेश्वर कृष्ण करते हैं इसलिए उनकी रक्षा के लिए धरती पर सदा उनकी प्रार्थना करनी चाहिए।

बघाटी हिमाचली– बले आदमी रि रक्षा परमेश्वर कृष्ण करो, एनी खे तीना रे बचावा री खातर धरती पाँएं सदा कृष्णा रि प्रार्थना करनि चैं।

सत्यनारायणः कृष्णः साक्षाद्यः सत्यरक्षकः।
सत्यनिष्ठः सदा पाति विरुद्धं न कदाचन॥266॥

हिन्दी– भगवान् सत्यनारायण रूप कृष्ण साक्षात् सत्य के रक्षक हैं। वे सत्यधारक व्यक्ति की रक्षा करते हैं, असत्य धारक की नहीं।

बघाटी हिमाचली– भगवान् सत्यनारायण रूप कृष्ण जी साक्षात्

सत्य रक्षक असो। से सत्यपालका रि रक्षा करो, असत्यपालका रि नी।

वदन्ति मनुजाः लोके वैकुण्ठोऽत्रैव संस्थितः।
प्रपश्यन्तु व्रजं गत्वा धूल्यामद्यापि लुण्ठति॥267॥

हिन्दी– लोगों का कहना है कि वैकुण्ठ इसी दुनियाँ में है, व्रज में जाकर देखो वह आज भी वहाँ धूल में लोटता है।

बघाटी हिमाचली– लोक बोलो जे बेकुण्ठ इयाँ ई दरती पाँएं असो, व्रजा माँएं जाय रो देखो से आज बि तेती दूड़ा माँएं लकेदुओ।

जगद्रूपाय कृष्णाय किञ्चित् कष्टं भवेन्नहि।
शीतातपादिकं तस्मै यथा ऋतुः समर्पयेत्॥268॥

हिन्दी– विश्वरूप कृष्ण जी को कोई कष्ट नहीं होना चाहिए, मौसम के अनुसार उनको आग सिकाना और पंखा करना आदि सेवाएं देनी चाहिए।

बघाटी हिमाचली– विश्वरूप भगवाना खे कोई कष्ट नी ओणा चैं, मौसमा रे साबे तीना खे आग सकेवणा अरो पंखा करना बगैरा सेवा देणि चैं।

भगवान्सर्वतश्चक्षुः कणे कणे विराजते।
पराजेतुं न तं शक्तः चतुरश्चतुरादपि॥269॥

हिन्दी– सभी ओर से आंखों वाले भगवान् कृष्ण कण कण में विराजमान हैं। दुनियां का होशियार से भी होशियार आदमी भी उनकी शक्ति पर विजय नहीं पा सकता।

बघाटी हिमाचली– सबी कनोर खे आखि आले कृष्ण जी चणी चणी माँएं विराजमान असो। दुनियाँ रा होशियारा दे बि होशियार आदमि तीना री ताकता खे नी जित सकदा।

सत्यं बलं हि सर्वेषां प्राणिनां चैव रक्षकम्।
प्रोक्तं यद् भगवान्लोके तस्मै सत्याय नमो नमः॥270॥

हिन्दी– सत्य सबकी ताकत है और वह सबका रक्षक है। दुनियाँ में जिस सत्य को भगवान् कहते हैं उस सत्य को बार बार नमन है।

बघाटी हिमाचली– सच सबी रि ताकत असो अरो सबी रा रक्षक।

जेस सचा खे सब भगवान् बोलो तेस सचा खे बार बार डाल।

शब्दो हि भगवान्प्रोक्तः सर्ववेदमयो हि सः।

पुस्तकं हि वेदाश्रृतं अध्येतव्यं गृहे गृहे।।271।।

हिन्दी– शब्द भगवान् है और सब वेदों से युक्त है। वेदों का अनुसरण करने वाली पुस्तकें हर घर में पढ़ी जानी चाहिए।

बघाटी हिमाचली– शाद भगवान् असो अरो सबी बेदा आला असो। वेदा रे अनुसार रची ओंदी कताबा हर गरा माँएं पड़ी जाणी चैं।

नत्वा ज्येष्ठान् हि देवान् च लोके गृह्णाति नाशिषः।

त्यजन्ति विपदस्तं न लभते नैव सः सुखम्।।272।।

हिन्दी– जो आदमी अपने से बड़ों और देवताओं को प्रणाम करके उनसे आशीष प्राप्त नहीं करता, न तो उसको कभी विपत्तियां छोड़ती हैं और न वह सुख को प्राप्त करता है।

बघाटी हिमाचली– जो आदमि आपि दे बड़े खे अरो देवते खे डाल कर रो आशीर्वाद प्राप्त नी करदा, ना तो तेसके कबे मुसीबता छाड दी अरो ना से सुख पान्दा।

देहोऽहमिति चिन्ता हि जीवानां मोह उच्यते।

आदिकालाद्धि सर्वेषां दु:खमनेन जायते।।273।।

हिन्दी– मैं शरीर हूँ, आदमी की यह सोच मोह है। प्राचीनतम समय से यही सोच आदमी को दु:ख देने वाली है।

बघाटी हिमाचली– आऊँ शरीर असू, आदमी रि इ सोच मोह असो। शुरू रे टैमा दे एई सोच आदमी खे दु:ख देणि आलि असो।

वेदाः त्वयैव संसृष्टाः साक्षाद्धि ब्रह्मणा पुरा।

त्वन्नामोङ्कारमूलत्वात् शब्दब्रह्म सदोच्यते।।274।।

हिन्दी– भगवन् ब्रह्म पुराने समय में वेद आपने ही रचे हैं। ओंकार मूलक आपका नाम सदा शब्दब्रह्म कहा जाता है।

बघाटी हिमाचली– हे परमात्मन्! प्राणे टैमा माँएं वेद तूमे ई रचे। ओंकार मूलक त्हारा नाँव शाद ब्रह्म कहलाओ।

कृष्ण एव स्वभावस्तु अस्वभावः स एव च।
कृष्णरूपमिदं सर्वं ज्ञात्वा विद्वान्हि जायते।।275।।

हिन्दी– भगवान् कृष्ण ही स्वभाव हैं, अस्वभाव भी वही हैं। सारा संसार कृष्णरूप है, यह जानकर मनुष्य विद्वान् बनता है।

बघाटी हिमाचली– भगवान् कृष्ण ही सबाव अरो असबाव असो। सारि दुनियाँ कृष्णरूप असो, ईशा जाण रो आदमि विद्वान् बणो।

बुद्धिरूपा हि शक्तिस्त्वं आत्माश्रृता तु सर्वदा।
सर्वान् तयैव रक्षसि हन्सि चैव तया तथा।।276।।

हिन्दी– बुद्धिरूपा शक्ति के रूप में आप आत्मा के आश्रय में रहते हैं, उसी से आप सबकी रक्षा करते हैं और उसी से अन्त।

बघाटी हिमाचली– बुद्धिरूप शक्ति ओय रो तूमे आत्मा रे स्हारे रौ, तेतेई साय सबी रि रक्षा करो और तेतेई साय कनारा।

ब्रह्माण्डस्यैव भागो हि देहः लोके तु दृश्यते।
ब्रह्माण्डस्येह देहे तु प्रभावोऽधीयते ग्रहैः।।277।।

हिन्दी– यह सांसारिक शरीर ब्रह्माण्ड का ही एक भाग है। ब्रह्माण्ड में होने वाली घटनाओं का इस शरीर पर जो प्रभाव पड़ता है उसका अध्ययन ग्रहों की स्थितियों से किया जाता है।

बघाटी हिमाचली– इ शरीर ब्रह्माण्डा रा ई एक टुकड़ा असो। ब्रह्माण्डा माँएं गटणि आली गटना रा जो असर एते पाँएं पड़ो। तेते रा अध्ययन ग्रोआ री स्थिति साय करूओ।

शब्दाः प्रणवजातास्तु प्रणवस्तत्र हीश्वरः
अपशब्दो न वाच्यं तु न कृष्णः निन्दितो भवेत्।।278।।

हिन्दी– संसार के सब शब्द ओंकार ध्वनि से उत्पन्न हुए हैं। प्रणव परमात्मा है। बुरे शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए, जिससे भगवान् कृष्ण अपमानित न हों।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ रे सब शब्द ओंकारा रे शादा दे पैदा ओ। ओंकार भगवान् असो। बुरे शब्दा रा प्रयोग नी करना चैं जनी साय भगवान् कृष्णा रा अपमान न ओ।

कृष्ण ते राजनीतिस्तु सर्वजनहिताय हि।
भवन्तु सुखिनः सर्वे सिद्धान्तस्तव विश्रुतः॥279॥

हिन्दी– भगवन्! आपकी राजनीति सब जीवों के हित के लिए होती है। दुनियां के सब जीव सुखी हों, आपका यह नियम विख्यात है।

बघाटी हिमाचली– भगवन्! त्हारि राजनिति सबी जीवा री बलाई री खातर ओ। दुनियाँ रे सब जीव सुखि रौ, त्हारा इ नियम मशूर असो!

सिद्धान्तो यस्य नास्तीह नेतारं तं न कुर्यादिह।
सिद्धान्तरहिताः लोके नश्यन्ति नाशयन्ति च॥280॥

हिन्दी– जिसका कोई सिद्धान्त न हो उसको अपना नेता नहीं चुनना चाहिए। सिद्धान्तहीन लोग स्वयं भी नष्ट होते हैं और दूसरों को भी नष्ट करते हैं।

बघाटी हिमाचली– जसरा कोई नियम नी ओंदा से आपणा नेता नी चुनणा चैं। नियमरहित आदमि आपि अरो रेके सबी खे बि नष्ट करो।

शरीरं हि यथा लोके कृष्णस्य प्राप्तिसाधनम्।
सर्वासां हि तथा स्त्रीणां पतयः प्राप्तिसाधनम्॥281॥

हिन्दी– जिस प्रकार यह शरीर कृष्णप्राप्ति का साधन है उसी प्रकार समस्त स्त्रियों के लिए उनके पति ही कृष्ण प्राप्ति के साधन हैं।

बघाटी हिमाचली– जीशा इ शरीर भगवाना री प्राप्ति रा साधन असो तीशा सबी ज्वानसा खे तीनी रे पतिदेव भगवाना खे पाणि रे साधन असो।

युद्धं धर्माधर्मयोस्तु भवे भवति शाश्वतम्।
जयति धर्मवीरो हि अधर्मवीरो हन्यते॥282॥

हिन्दी– दुनियाँ में धर्म और अधर्म के बीच युद्ध निरन्तर चलता है। उसमें धर्मवीर की विजय होती है परन्तु अधर्मवीर का अन्त।

बघाटी हिमाचली– दर्मा अरो अदर्मा माँएं हमेशा युद्ध चलो। तीना माँएं दर्मवीर जीतो अरो अदर्मवीर मारा जाओ।

को न तत्र गुणो कृष्णे जगद्येन न मुह्यति।
गुणाश्रयस्तु गोविन्दः सर्वे समाश्रयन्ति तम्॥283॥

हिन्दी– भगवान् कृष्ण में ऐसा कौन–सा गुण नहीं है जिससे संसार मोहित नहीं होता। समस्त गुणों का आधार कृष्ण हैं। सब लोग उनका सहारा लेते हैं।

बघाटी हिमाचली– कृष्ण जी माँएं से कुणजा गुण नी आथि जनी साय दुनियाँ मोहित नी ओंदि। सबी गुणा रा आधार कृष्ण असो। सब आदमि तीना रा स्हारा लौ।

धर्मो युद्धमपि प्रोक्तं सत्यं यदा हि संकटे।
सत्यपक्षे भवेत्कृष्णः त्यजेत् तं तु कदापि न॥284॥

हिन्दी– युद्ध को धर्म भी बताया गया है, जबकि सत्य सङ्कट में हो। कृष्ण सदा सत्य के पक्ष में रहते हैं, उनका साथ कभी न छोड़ें।

बघाटी हिमाचली– लड़ाइ दर्म बि बताय राखा, जबे सच खतरे माँएं ओ। कृष्ण सदा सचा रे कनारे खे रौ, तीना रा साथ नी छाडणा चैं।

ग्रहास्तत्र तु जीवानां पूज्याः सन्तीह देवताः।
फलं तेषां यथाकर्म सत्कर्मणा सदा शुभाः॥285॥

हिन्दी– ग्रह मनुष्यों के पूज्य देवता हैं। वे हमारे किए हुए कर्मों के फलों की सूचना देते हैं। सत्कर्मों का फल सदा शुभ होता है।

बघाटी हिमाचली– ग्रौ आदमी रे पूज्य देवते असो। से म्हारे कर्मा रे फला रि सूचना देओ। अच्छे कर्मा रा फल सदा शुभ ओ।

स्वधर्मः प्रतिभा लोके वेदोक्तं हि शाश्वतम्।
प्रतिभा तेन सर्वैस्तु माननीया जनैः जनैः॥286॥

हिन्दी– मनुष्य का अपना कर्तव्य ही उसकी प्रतिभा होती है, यह वेदों का सनातन नियम है। इसलिए सभी लोगों को अपनी प्रतिभा का आदर करना चाहिए।

बघाटी हिमाचली– आदमी रा आपणा कर्तब ही तेसरि प्रतिभा ओ, इ वेदा रा सनातन नियम असो। एनी री खातर सबी खे प्रतिभा रा आदर करना चैं।

सर्वैस्तु सर्वकार्याणि न क्रियन्ते कदाचन।
स्वधर्मः तेन विश्वस्मिन् माननीयो हि सर्वथा॥287॥

हिन्दी– हर आदमी हर काम को नहीं कर सकता। इसलिए संसार में व्यक्तिगत स्वभाव का सबको हर प्रकार से आदर करना चाहिए।

बघाटी हिमाचली– सब आदमि सब काम नी कर सकदे। एनी खे हर आदमी रे खास स्वबावा रा सबी खे हर तरीके साय आदर करना चैं।

कर्तृत्वं शरणागत्या नैवेह ह्यवशिष्यते।
तेन मुक्तिः सदानन्दः कृष्णलोके महीयते॥288॥

हिन्दी– आदमी में जो कर्तापन का अभिमान है वह भगवान् की शरण लेने से नहीं टिकता। उससे वह मुक्त होकर नित्यानन्द को प्राप्त करते हुए कृष्णलोक में महत्त्व को प्राप्त करता है।

बघाटी हिमाचली– आदमी माँएं जो कर्तापणा रा अभिमान असो से भगवाना रि शरण लणि साय नी टिकदा। तेनीसाय से मुक्त ओय रो नित्यानन्दा खे प्राप्त करदे कृष्णलोका माँएं महत्त्व पाओ।

ग्रहेषु वर्णरूपेण त्वमेव सम्प्रतिष्ठसि।
यस्य भवेद्यथा वर्णः तद्रूपफलसूचकः॥289॥

हिन्दी– ग्रहों में रङ्गों के रूप में आप ही विराजते हैं। जिस ग्रह का जैसा रङ्ग होता है वह उसके अनुसार फल का सूचक होता है।

बघाटी हिमाचली– ग्रोआ माँएं रङ्गा रे रूपा माँए तूमे ई विराजो। जस ग्रोआ रा जीशा जा रङ्ग ओ से तेते रे अनुसार आपणा फल बताओ।

त्यजति नैव कर्मेह ममत्वेन तु यत्कृतम्।
ममत्वं तु परित्यज्य व्रजेशं शरणं व्रजेत्॥290॥

हिन्दी– जो भी काम ममतापूर्वक किया जाता है वह कर्म मनुष्य का पीछा नहीं छोड़ता। इसलिए कर्म में ममता त्यागकर कृष्ण जी की शरण लेनी चाहिए।

बघाटी हिमाचली– जो बि काम ममता साय किया जाओ से काम आदमी रा पीछा नी छाडदा, एनी खे कामा माँएं ममता छाड रो कृष्ण जी रि शरण लणि चैं।

कृष्ण रूपो हि देवोऽयं कामस्तु विश्वविश्रुतः।
महादेवेन दग्धोऽपि कृष्णध्यानेन वार्यते।।291।।

हिन्दी– यह जो विश्वप्रसिद्ध काम देवता है यह कृष्ण जी का ही एक रूप है। भगवान् शिव जी द्वारा जला दिए जाने पर भी यह कृष्ण जी के ध्यान से ही पीछा छोड़ता है।

बघाटी हिमाचली– इ जो मशूर कामदेव असो, इ कृष्णा रा ई एक रूप असो। भगवान् शिव जी रे फुक देणि पाँएं बि इ कृष्णा रे द्याना साय ई पीछा छाडो।

कृष्णस्येच्छां विनालोके स्पृशेन्नापि कण्टकम्।
तस्यैव शरणं तस्मात् सर्वविधसुखप्रदम्।।292।।

हिन्दी– भगवान् कृष्ण जी की इच्छा के बिना दुनियाँ में एक कान्टा भी नहीं छूता। इसीलिए उनकी शरण समस्त सुखों को देने वाली है।

बघाटी हिमाचली– भगवाना री मर्जी दे बिना एक कान्डा बि नी छून्दा। एनी खे कृष्णा रि शरण सब सुख देणि आलि असो।

नैव कोऽपि तिरस्कुर्यात् माधवं परमं नटम्।
लोके रूपेण केनापि यत्रकुत्रापि दृश्यते।।293।।

हिन्दी– किसी को भी भगवान् कृष्ण का अपमान नहीं करना चाहिए, चाहे वे दुनियाँ में किसी भी रूप में दिखाई देते हों।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ माँए चाए भगवान् केसी बि रूपा माँएं देखुओ, तीना रा अपमान कसके नी करना चैं।

भारते भूमिहीनोऽपि देशार्थं यो हि जीवति।
तमाहं कृष्णवं शीयं राष्ट्र पुत्रं प्रणौम्यहम्।।294।।

हिन्दी– भारत में जो भूमिहीन भी देशहित के लिए जीता है, श्रीकृष्ण के वंशज उस राष्ट्रपुत्र को मैं प्रणाम करता हूँ।

बघाटी हिमाचली– म्हारे देशा माँएं जो भूमिहीन बि देश सेवा री खातर जीओ, तेस कृष्णा रे खानदाना रे राष्ट्रपुत्रा खे आऊँ डाल करू।

नारीह तुलसीरूपा त्वां चिद्रूपं हि सेवते।
चित्सेवार्थं शरीरं तु रामार्थं हनुमान्वत्॥295॥

हिन्दी– तुलसीरूपा नारीजगत् आपके चेतनरूप की सेवा करता है। यह मनुष्य शरीर उसी प्रकार परमात्मा की सेवा के लिए है जिस प्रकार हनुमान् जी भगवान् राम जी की सेवा के लिए।

बघाटी हिमाचली– तुलसीरूप ज्वानसा त्हारे चेतन रूपा रि सेवा करो। इ आदमी रा शरीर तीशा ई भगवाना री सेवा री खातर असो जीशे अणुमान् जी राम जी री सेवा री खातर।

नानाकृतीनि पश्यामि नटस्य नाटके यथा।
नैपथ्ये त्वां न पश्यामि विचित्रं खलुनाटकम्॥296॥

हिन्दी– नाटक में अभिनेता की तरह मैं आपको अनेक प्रकार की शक्लों में देखता हूँ। परदे के पीछे आपको नहीं देख पाता हूं। निश्चय ही संसार अनोखा नाटक है।

बघाटी हिमाचली– नाटका माँएं स्वांगी री तरह आऊँ तूमा खे भौत किशमा री शक्ला माँएं देखू। पड़दे पिचके तूमा खे नी देख पान्दा। इ दुनियाँ एक नौखा नाटक असो।

अज्ञ इदं न जानाति एकतो बहवः कथम्।
विज्ञ इदं हि जानाति समस्तं कृष्ण एव हि॥297॥

हिन्दी– अज्ञानी यह नहीं जानता कि भगवान् एक से बहुत कैसे बन गए। विज्ञानी यह जानता है कि यह सारा संसार कृष्ण ही है।

बघाटी हिमाचली– अज्ञानि इ नी जाणदा जे भगवान् एकी दे भौत सारे कीशे बण गोए। भगवाना खे जाणनि आला इ जाणो जे इ सारि दुनियाँ कृष्ण ही असो।

प्रकाशने तु ये लग्नाः सत्साहित्ये विशेषतः।
कुर्वन्तः कृष्णकार्यं ते लभन्ते दिव्यमाशिषम्॥298॥

हिन्दी– जो लोग प्रकाशन का काम करते हैं, विशेषकर अच्छे साहित्य के। वे भगवान् कृष्ण का कार्य करते हुए उनसे अलौकिक आशीर्वाद पाते हैं।

बघाटी हिमाचली– जो आदमि कताबा छापणि रा काम करो, खास कर रो अच्छी कताबा रा। से भगवाना रा काम करदे तीना दे दुर्लभ आशीर्वाद प्राप्त करो।

राष्ट्रधर्मः परो धर्मः सर्वेषां देशवासिनाम्।
मानवता परा प्रोक्ता वेदेषु तत्र सारतः।।299।।

हिन्दी– राष्ट्रधर्म सब देशवासियों के लिए महान् धर्म है। उससे भी श्रेष्ठ मानवता धर्म को वेदों में सार रूप में बताया गया है।

बघाटी हिमाचली– राष्ट्रधर्म सबी देशवासी खे महान् दर्म असो। तेईदे बि सौणा मानवता दर्म वेदा माँएं निचोड़ रूपा माँएं बताय राखा।

कौतुमेकं मया दृष्टं मोहकमिह भूतले।
दृष्टिर्पतति यत्रापि सर्वत्र नटनं तव।।300।।

हिन्दी– मैंने इस धरती पर एक आश्चर्य देखा, जहाँ भी दृष्टि पड़ती है सब जगह आपका ही अभिनय नजर आता है।

बघाटी हिमाचली– मोंएं इयाँ दुनियाँ माँएं एक हैरानि देखि, जेती तैं बि नजर जाओ त्हारा ई स्वाँग देखुओ।

वेदाः कृष्णपरास्तत्र कृष्णः वेदपरस्तथा।
न कृष्णवेदयोर्भेदः द्वयमेकं हि संस्मृतम्।।301।।

हिन्दी– वेद कृष्णपरक हैं और कृष्ण वेदपरक हैं। कृष्ण जी और वेदों में कोई भेद नहीं है, दोनों को एक ही बताया गया है।

बघाटी हिमाचली– वेदा माँएं कृष्णा रा वर्णन असो अरो कृष्ण वेदा रा प्रत्यक्ष रूप असो। कृष्णा अरो वेदा माँएं कोई फरक नी आथि, दोए एक ई बताय राखे।

खादति मनुजं पापः चित्ते पापं न धारयेत्।
विमुक्तो ह्यर्जुनः पापात् कृष्णं शरणं गतः।।302।।

हिन्दी– पाप मनुष्य को खाता है, मन में पाप को धारण न करो। अर्जुन के कृष्ण जी की शरण लेने पर अर्जुन के पाप नष्ट हुए थे।

बघाटी हिमाचली– पाप आदमी खे खाओ, मना माँएं पाप धारण न करो। कृष्णा रि शरण लणि पाँएं अर्जुना रे पाप नष्ट ओ गए थे।

मायायां माधवं दृष्ट्वा स्वकर्मणा उपासते।
नैव सा बाधते तं वै विज्ञाय प्रेमिणं परम्।।303।।

हिन्दी– संसाररूप माया के अन्दर कृष्ण को देखकर जो अपने स्वाभाविक कर्म से उनकी पूजा करता है उसके काम में वह बाधा नहीं डालती, यह जानकर कि वह कृष्ण का प्रेमी है।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ माँएं जो कृष्णा रे दर्शन कर रो आपणे शास्त्रोक्त कर्तबा साय तेसरि पूजा करो, से तेसके कृष्णा रा प्रेमि जाण रो तेसरे कामा माँएं रूकावट नी पान्दि।

भगवदिच्छां विना लोके पत्रमपि न कम्पते।
तस्येच्छां तु समादृत्य स्वीयं कर्म समाचरेत्।।304।।

हिन्दी– भगवान् की मर्जी के बिना संसार में पत्ता भी नहीं हिलता। इसलिए उनकी मर्जी का आदर करके सबको अपना सहज कर्म करना चाहिए।

बघाटी हिमाचली– भगवाना री मर्जी दे बीना दुनियाँ माँएं पाच बिनी हिलदा। एनी खे तेसरी इच्छा रा आदर कर रो आपणा सहज कर्तब करना चैं।

पुत्री प्रकृतिरूपा हि राधिकारूपिणी प्रिया।
पुत्रवत् रक्षणीया सा पाठनीया तथैव च।।305।।

हिन्दी– बेटी प्रकृतिरूपा है जो कि प्रिया राधा का ही एक रूप है, उसकी बेटे की तरह ही रक्षा करनी चाहिए और उसको पढ़ाना चाहिए।

बघाटी हिमाचली– बेटि प्रकृति अरो प्रिया राधा जी रा ई एक रूप असो, से बेटे री तरह बचावणि अरो पढ़ावणि चैं।

अन्नं ब्रह्मेति सम्प्रोक्तं विश्वमन्नेन जीवति।
अन्नस्योत्पादकस्येह कुर्यात्सदा समादरम्।।306।।

हिन्दी– अनाज को परमात्मा कहा गया है, दुनियाँ अनाज पर जीती है। अन्नोत्पादक किसान का सदा आदर करना चाहिए।

बघाटी हिमाचली– नौज भगवान् असो, दुनियाँ नजा पाँएं जीओ। नौज पैदा करनि आले जिमीदारा रा सदा आदर करना चैं।

विज्ञानं सुखदं लोके संप्रयुक्तं विवेकतः।
प्रयुक्तमविवेकेन भवेन्नाशाय सर्वथा।।307।।

हिन्दी– संसार में विज्ञान सुखदायक है, अगर विवेक से उपयोग किया गया तो। अविवेक से उपयोग में लाया विज्ञान तो हर प्रकार से नाश ही करता है।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ माँएं विज्ञान सुखदायक असो जे समजदारी साय तेते रा उपयोग किया जाओ। नासमजी साय प्रयोग किया दा विज्ञान तो पूरी तरह नाश करो।

कृष्णसम्प्रेरिता बुद्धिः योजनीया सुकर्मसु।
जीवनं सरलं येन हानिर्न भविता तथा।।308।।

हिन्दी– भगवान् कृष्ण द्वारा प्रेरित ज्ञान का उपयोग अच्छे कामों में करना चाहिए। इससे जीना भी आसान हो जाएगा और कोई नुकसान भी नहीं होगा।

बघाटी हिमाचली– भगवाना रे दीते दे ज्ञाना रा उपयोग अच्छे कामा माँएं करना चैं। एनी साय जिवणा बि सूखा ओय जाओ अरो कें नुकसाण बि नी ओंदा।

कार्यं कृष्णप्रदत्तं तु शारीरं चैव बौद्धिकम्।
सर्वे हि कृष्णतो जाताः सर्वे च तस्य कर्मिणः।।309।।

हिन्दी– काम शारीरिक हो या बौद्धिक सब कृष्ण जी द्वारा दिए गए हैं। सभी लोगों को उन्होंने पैदा भी किया है और उनके लिए काम भी बाँटे हैं।

बघाटी हिमाचली– काम शरीरा रा ओ या दमागि सब भगवाने बान्ड राखे। सब लोक तीने ई जाय राखे अरो तीना खे काम बि बान्ड राखे।

लोके सर्वाणि कार्याणि निर्मितानि परात्मना।
कार्यं कस्यापि निम्नं न ज्ञेयमुच्चं च सर्वथा।।310।।

हिन्दी– संसार के समस्त काम भगवान् के बनाए हुए हैं, किसी के भी काम को छोटा या बड़ा नहीं समझना चाहिए।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ रे सब काम कृष्ण जी ए बणाय राखे, कसि बि आदमी रा काम छोटा या बड़ा नी समजणा चैं।

सत्यमिदं जगत्सर्वमसत्यं नास्ति सर्वथा।
नास्ति लोके स्थिरं किञ्चित् जगद्विपरिवर्तते॥311॥

हिन्दी– यह संसार सत्य है, असत्य नहीं। संसार में स्थिर कुछ भी नहीं, यह सत्य होते हुए भी बदल रहा है।

बघाटी हिमाचली– इ दुनियाँ सच कि असो, असचकि नी आथि। दुनियाँ माँएं टिकणि आला कें बिनी आथि, सब कुछ बदल नि लग रोआ।

जीवनं प्रतिशब्दोऽयं गुहायां श्रूयते यथा।
आचरति यथा योहि विश्वतो लभ्यते तथा॥312॥

हिन्दी– जीवन एक गूंज है, जैसे कि गुफा में सुनाई देती है। जो आदमी जैसा आचरण करता है, संसार रूप गुफा से उसको वैसा ही जवाब मिलता है।

बघाटी हिमाचली– जिंदगि एक गूँज असो, जिशि गुफा माँएं शुणुओ। जो आदमि जीशा जा एरो, दुनियाँ रि गुफा तेसके तीशा जा ई जवाब देओ।

धर्माधर्ममयः कृष्णः सर्वगुणमयो हि सः।
धर्मिणे धर्मरूपस्तु विपरीतस्त्वधर्मिणे॥313॥

हिन्दी– भगवान् धर्म और अधर्म दोनों से युक्त हैं, उनमें समस्त गुण हैं, धर्म पालक के लिए धर्मरूप हैं तो अधर्मी के लिए अधर्मरूप।

बघाटी हिमाचली– भगवान् दर्मरूप बि अरो अदर्मरूप बि। तीना माँएं दुनियाँ रे सब गुण असो। से दर्मी खे दर्मरूप अरो अदर्मी के अदर्मरूप असो।

परवस्तु विषं लोके धनमपि परं तथा।
कार्या न तत्र दुर्दृष्टिः कृष्णस्य शुभ दृष्टये॥314॥

हिन्दी– दूसरे की वस्तु और धन पर अधिकार जमाना जहर है। दूसरे की चीजों पर कभी बुरी नजर नहीं डालनी चाहिए, कृष्ण जी की

शुभदृष्टि तभी प्राप्त होती है।

बघाटी हिमाचली– दूजे री चीजा अरो पैसे पाँएं अक जमावणा जैर ओ। तेते पाँएं बुरि नजर राखणि साय भगवाना रि शुभ नजर प्राप्त नी ओंदि।

वन्देऽहं शूलिनीं देवीं रच्यते प्रेरितम् यया।
तस्यै एव तया दत्तं मुक्तहस्तः समर्पये॥315॥

हिन्दी– मैं शूलिनी दुर्गा माँ को प्रणाम करता हूँ जिनकी प्रेरणा से मैं यह काव्य रच रहा हूँ। मैं उन माँ के दिए हुए उस काव्य को खुले हाथों उन्हीं को सौंपता हूँ।

बघाटी हिमाचली– आऊँ सोलनी री देवी आमा खे डाल करू जियाँ री प्रेरणा साय आऊँ इ काव्य रचणि लग रोआ। आऊँ तीआँ आमा खे इ काव्य देणि आली रे हाथा माँएं खुले हाथे सौंपणि लग रोआ।

पुरे शूलिनी मन्दिरं सोलने यद्विराजते।
कीर्तिं बघाटभूमेर्हि तनोति भूमिमण्डले॥316॥

हिन्दी– सोलन में विराजमान शूलिनी दुर्गा का मन्दिर धरती पर बघाट भूमि के यश को फैला रहा है।

बघाटी हिमाचली– सोलनि शूलिनी दुर्गा माता रा मन्दर दरती पाँएं बगाटा री जमीना रा जश फलावणि लग रो आ।

रूपं गोविन्दशक्तेस्तु सुन्दरमत्र शोभते।
शूलिनी परमात्मा सा महिषासुरमर्दिनी॥317॥

हिन्दी– यहाँ पर भगवान् की शूलिनी शक्ति का सुन्दर रूप शोभायमान है जो कि साक्षात् भगवती महिषासुर मर्दिनी हैं।

बघाटी हिमाचली– एती भगवाना री शूलिनी शक्ति रा सुन्दर रूप सजा दा असो जो साक्षात् परमात्मा महिषासुर मर्दिनि असो।

पंवारः शूलिनीभक्तः परमारस्तु मूलतः।
विभीतो मुगलैः कश्चित् सोलने हि समागतः॥318॥

हिन्दी– शूलिनीभक्त कोई पंवार मूलतः परमारवंशी मुगलों से सताया हुआ सोलन में आ गया था।

बघाटी हिमाचली– सोलनी री माता रा कोंएं पंवार या परमार बगत मुसलमाना रा सतावा दा सोलनि आय रो बस गोआ था।

तदा राज्ये स्म सामन्ताः विवदन्तीह माविनः।
तान् जित्वा परमारः सः प्रारब्धवान् सुशासनम्।।319।।

हिन्दी– उस समय सोलन क्षेत्र में मावी नामक सामन्त आपस में लड़ते रहते थे। उनको जीतकर उस पंवार ने यहाँ अपना शासन करना शुरु किया।

बघाटी हिमाचली– तेस बक्ता सोलनि माँएं मावी नाँवां रे सामन्त आपि माँएं लड़्या करो थे। तीना खे जित रो तिणिए पंवारे एती आपणा शासन करना शुरु किया।

दुर्गा सिंहस्तु राजा हि सोलनेऽभवदन्तिमः।
राजधर्मप्रवीणः सः यशो देशे तु लब्धवान्।।320।।

हिन्दी– सोलन राज्य में अन्तिम राजा दुर्गासिंह हुए जो कि शासन चलाने में कुशल थे और जिन्होंने देश में यश प्राप्त किया।

बघाटी हिमाचली– बघाटा रा आखरी राजा दुर्गा सिंह ओआ जो कुशल शासक था अरो जिणिए देशा माँएं नाँव पाया।

तस्य मित्राणि सर्वे हि नाभवन्शत्रवस्तदा।
शक्तिभक्तस्तु पंवारः प्रजायै किं न दत्तवान्।।321।।

हिन्दी– राजा दुर्गासिंह के सब मित्र थे, कोई शत्रु नहीं थे। मातृभक्त उस राजा ने अपनी प्रजा को क्या क्या नहीं दिया।

बघाटी हिमाचली– राजा दुर्गासिंहा रे सब दोस्त थे, कोंएं दुश्मण ना था। दुर्गा माता रे बगते तिणिए आपणी जनता री खातर का का नी किया।

धर्मः सनातनः प्राणः तस्याभवद्धि सर्वथा।
धर्मस्य नगरी तस्मात् प्रोक्ता देशे महात्मभिः।।322।।

हिन्दी– सनातन धर्म उस राजा की आत्मा थी। इसी कारण देश के माने हुए लोग सोलन को धर्मनगरी कहते थे।

बघाटी हिमाचली– सनातन दर्म तेस राजे रि आत्मा थि। देशा रे

माने ओंदे आदमि सोलनि खे दर्मनगरि बोल्या करो थे।

नामकर्ता प्रदेशस्य स्मरिष्यते नृपःचिरम्।
संस्कृतिः पार्वती येन जनप्रिया च रक्षिता।।323।।

हिन्दी– यह राजा प्रदेश को हिमाचल नाम देने के कारण लम्बे समय तक याद किए जाते रहेंगे जिन्होंने पहाड़ की प्यारी पहाड़ी संस्कृति की रक्षा की।

बघाटी हिमाचली– इ राजा प्रदेशा खे ईमाचल नाँव देणि री बजा साय लम्बे टैमा तैं याद किया जांदा रौणा जिणिए प्हाड़ा रि लोकप्रिय संस्कृति रि रक्षा कि।

जितवानासुरं भावं दत्त्वा संस्कृतशिक्षणम्।
स्थापितवान्शुभं भावं राज्ये हि सोलने तदा।।324।।

हिन्दी– इस राजा ने अपने राज्य में संस्कृत भाषा की शिक्षा देकर तामसी विचारों पर विजय प्राप्त की और बघाट में श्रेष्ठ विचारों की स्थापना की।

बघाटी हिमाचली– इणिए राजे बगाटा माँएं संस्कृत भाषा रि शिक्षा दे रो बूरे विचारा पाँएं विजय प्राप्त कि अरो इयाँ र्‍यास्ति माँएं सौणे विचार स्थापित किए।

मातृगुरुश्च तस्यासीत् त्यागिनी सा हि नन्दिनी।
यस्याः संयम सत्रस्तु भक्तैरद्यापि सेव्यते।।325।।

हिन्दी– राजा दुर्गासिंह की गुरुमाता संन्यासिनी आनन्दमयी माँ थी जिनके द्वारा संस्थापित संयम सत्र उनके भक्तों द्वारा आज भी अपनाया जाता है।

बघाटी हिमाचली– तेस राजे रि गुरु माता संन्यासण आनन्दमयि माँ थि जियाँ रा चलावा दा संयम सत्र तींयाँ रे बगत आज बि अपनाओ।

मातरं सर्वनारीषु पश्यन्तु सकलाः जनाः।
भजन्तु भगवन्तं च उपदिष्टवती तदा।।326।।

हिन्दी– सभी लोगों को समस्त स्त्रियों में माँ के दर्शन करने चाहिए और भगवान् का भजन करना चाहिए, यह माँ का उपदेश था।

बघाटी हिमाचली– सबी लोका खे सबी ज्वानसा माँएं भगवती माता रे दर्शन करने चैं अरो भगवाना रा बजन करना चैं, इ तींयाँ रा उपदेश था।

विंशत्याः प्रथमे वर्षे ईशवीयाब्दमानतः।
दुर्गासिंह स्तदा जातः प्रियमातुस्तु गर्भतः॥327॥

हिन्दी– सन् 2001 में दुर्गासिंह ने अपनी प्रिय माँ के गर्भ से जन्म लिया था।

बघाटी हिमाचली– सन् 2001 माँएं दुर्गासिंहे आपणी प्यारी मा रे पेटा दे जन्म लोआ था।

कुनक्षत्रे हि जातत्वात् बोचस्थाने हि रक्षितः।
अन्ते हि पञ्चवर्षाणां सोत्सवं प्रापितः पुरम्॥328॥

हिन्दी– बुरे नक्षत्र में पैदा होने के कारण उनको बोच नामक स्थान पर बने राजमहल में रखा गया था। पाञ्च वर्ष वहाँ रहने के बाद हर्षोल्लास के साथ उनको वापिस सोलन लाया गया था।

बघाटी हिमाचली– बूरे नक्षत्रा माँएं जाणि री बजा साय से बोचा रे बेड़े माँएं राखा गोआ था। पांजा बरशा तेती रौणि दे बाद से गाजे बाजे साय सोलनि खे वापस ल्यावा गोआ था।

अक्षराणि गृहे प्राप्य संस्कारैरभवन्महान्।
क्रीडकश्च सुबुद्धिश्च मित्राणां च सहायकः॥329॥

हिन्दी– पहले अपने घर में ही अक्षर ज्ञान और संस्कारों को प्राप्त करके वे महान् बने तथा वे तेज बुद्धि, खिलाड़ी और अपने दोस्तों के सहायक रहे।

बघाटी हिमाचली– तीणिए आपणे गरे आखरा रा ज्ञान शीखा अरो संस्कार पाए। से भौत होश्यार, खिलाड़ि अरो आपणे दोस्ता रा मददगार था।

उच्चशिक्षा हि लाहौरे विवाहः षोडशे तथा।
टिहरीतः नृपाज्जाता जाता राजसहायिका॥330॥

हिन्दी– इनकी उच्च शिक्षा लाहौर में तथा विवाह सोलहवें वर्ष में

हुआ था। इनकी धर्मपत्नी शशिप्रभा जो कि टिहरी राज परिवार से थी शासन में राजा दुर्गासिंह की सहायिका बनी।

बघाटी हिमाचली– तीना रि बड़ि पड़ाइ ल्हौरा माँएं अरो ब्या सोला री उम्रा माँएं ओआ था। राजे रि राणि शशि प्रभा जो टीरी रे राज गराने दे थि तेसरे शासना रे कामा माँएं मददगार बणि।

संस्कारान् मातृभिः लब्ध्वा पितृव्येन च पालितः।
शासन कौशलं चैव दृष्ट्वा गौरैस्तु मानितः।।331।।

हिन्दी– अपनी माताओं से अच्छे संस्कार पाए हुए और चाचा जी द्वारा पाले गए दुर्गासिंह के शासन कौशल को देखकर अंग्रेज शासक उनका आदर करते थे।

बघाटी हिमाचली– आपणी मा दे सौणे गुण पाए ओंदे अरो चाचे रे द्वारा पाले ओंदे तेस राजे रा शासन कौशल देख रो अंग्रेज सरकार बि तेसरा आदर करो थि।

नगरं स्वर्गतुल्यं हि ग्राम्योत्पादेन सज्जितम्।
संवाहनानि रेलादि किं किं नासीद्धि सोलने।।332।।

हिन्दी– स्वर्ग के समान ग्रामीण उपजों से सजा शहर रेल आदि अनेक वाहनों से युक्त भी था। उस समय भी सोलन में क्या क्या नहीं था।

बघाटी हिमाचली– सुर्गा जीशा सौणा, गाँवा री पैदा की दी चीजा साय सजा दा अरो किशमा किशमा री रेल बगैरा श्वारी बि थी। तेस बक्ता सोलनि माँएं का का ना था।

ठोडानृत्येन साकं सः कृतवान्मेलकान्तथा।
नृत्यं नु धर्मवीराणां लोके कस्मै न रोचते।।333।।

हिन्दी– राजा साहब ठोडा नृत्य से मेलों का आरम्भ करते थे। धर्मवीरों द्वारा किया जाने वाला यह युद्ध नृत्य भला किसको पसन्द नहीं आता।

बघाटी हिमाचली– राजा साब ठोडे रे नाचा साय मेले रा आरम्भ कराओ थे। दर्मवीरा रे खेलणि रा इ युद्धा रा नाच भला कसके सौणा नी लगदा।

धर्मप्राणा प्रिया राज्ञी व्रतंदानं चकार च।
प्रजा चापि बघाटस्याभवद् वेदपरायणा।।334।।

हिन्दी– राजा की धर्मप्राण रानी व्रत दानादि नियम अपनाती थी। बघाट राज्य की जनता भी वैदिक नियमों को अपनाती थी।

बघाटी हिमाचली– राजे रि दार्मिक राणि बर्त अरो दाण करया करो थि। एती रे लोक बि वैदिक नियम अपनाया करो थे।

जौणाजी सुन्दरे ग्रामे जाबली निकटे तथा।
राज्यकेन्द्रस्य चिह्नानि दृश्यन्तेऽद्यापि सर्वथा।।335।।

हिन्दी– सुन्दर ग्राम जौणी जी अरो जाबली के निकट तत्कालीन बघाट राज्य के निशान आज भी देखे जाते हैं।

बघाटी हिमाचली– सौणे जौणा जी गाँवां माँएं अरो जाबली निवड़े तेस बकता रे रियास्ता रे नशाण आज बि देखुओ।

निर्धना अस्य राज्यस्य आसन्हि कृषिकर्मिणः।
सुविधायै हि राज्ञा च प्रबन्धाः विविधाः कृताः।।336।।

हिन्दी– बघाट रियासत के किसान गरीब थे, राजा ने उनकी किसानी की सुविधा के अनेक प्रबन्ध किए थे।

बघाटी हिमाचली– इयाँ रियासति रे जिमीदार गरीब थे, राजे तीना रे कामा खे सूखा करनि खे भौत सारे इन्तजाम कर राखे थे।

तदा सुशासनार्थं हि समितिः तेन निर्मिता।
गौरजनेन सम्बन्धं कृतवान्चोत्तमं सदा।।337।।

हिन्दी– उन्होंने उस समय अच्छे शासन के लिए एक समिति बनाई थी। अंग्रेज लोगों के साथ भी उन्होंने हमेशा अच्छे सम्बन्ध बनाए रखे।

बघाटी हिमाचली– तेस बक्ता सौणे शासना री खातर तिणिए एक समिति, बणाय राखि थि। अंग्रेजा साय बि तिणिए सौणा साथ बणाय राखा था।

नगरं सुन्दरं श्रुत्वा समायान्ति स्म दर्शकाः।
अद्यापि सोलते तद्वत् आकर्षणं हि वर्धते।।338।।

हिन्दी– इस शहर की सुन्दरता के बारे में सुनकर दर्शक इसे देखने के लिए आते थे। आज भी सोलन में उसी तरह आकर्षण बढ़ रहा है।

बघाटी हिमाचली– एस शैरा रि सुन्दरता शुण रो दर्शक एते देखणि आओ थे। आज बि सोलनि माँएं तीशा ई आकर्षण बड़नि लग रोआ।

सर्वे जनाः प्रसन्नास्तु करयालानृत्यप्रियाः।
यज्ञो भुजड़ु वर्षायै जोगड़ा प्रार्थना तथा।।339।।

हिन्दी– यहां के करयाला प्रेमी लोग सदा प्रसन्न रहते हैं। यहाँ वर्षा न होने पर जलस्रोत के पास भुजड़ु नामक यज्ञ किया जाता है। इसके लिए जोगड़ा नामक प्रार्थना से जलदेव की प्रार्थना भी की जाती है।

बघाटी हिमाचली– एती रे करयाला प्रेमि आदमि सदा खुश रौ। जे बरखा ना ओ तो बुजड़ु किया जाओ। जोगड़े जलदेवते रि प्रार्थना बि करो।

नित्यं समाजसेवायै ब्वाराभवत्तदा प्रथा।
अन्योऽन्यं भावयन्तो हि सर्वः सर्वं स्म सेवते।।340।।

हिन्दी– उस समय ग्रामीण लोगों में समाजसेवा के रूप में ब्वारा प्रथा होती थी। पारस्परिक सद्भावना के साथ सभी लोग सबकी सेवा करते थे।

बघाटी हिमाचली– तेस बक्ता गाँवाँ माँएं एकी दूजे री सेवा री खातर ब्वारे लाए जाओ थे। आपसी प्रेम भावना साय सब आदमि सबी रि सेवा करया करो थे।

पूड़ा खाद्यं फ्णुआ नृत्यं विवाहादौ तथोत्सवे।
नित्यं मङ्गलकार्येषु सङ्गीतं भजनं तथा।।341।।

हिन्दी– विवाहों, उत्सवों और हमेशा माङ्गलिक कामों में यहां फ्णुआ नृत्य, सङ्गीत और भजन किए जाते हैं।

बघाटी हिमाचली– ब्या, त्वार अरो सौणे कामा माँएं एती फ्णुआ नृत्य, सङ्गीत अरो बजन किए जाओ।

सुपरीक्ष्य नियोज्यैव प्रशासनाधिकारिणः।
दुर्गासिंहः राज्ये हि सम्प्राप्तवान् समादरम्।।342।।

हिन्दी– अपने प्रशासनाधिकारियों को अच्छी प्रकार परीक्षा करके नियुक्त करने से दुर्गासिंह ने अपनी प्रजा में आदर प्राप्त किया।

बघाटी हिमाचली– आपणे सरकारि अधिकारी खे अच्छी तरह साय परख रो राखणि साय दुर्गासिंहे आपणी जनता माँएं खूब आदर पाया।

धर्मज्ञः शक्तिभक्तो हि निर्माय मन्दिराणि च।
प्रजायै सः सुखं दत्त्वा गौरेभ्यः लब्धवान् पदम्।।343।।

हिन्दी– धर्म के ज्ञाता भगवती माता के भक्त उस राजा ने मन्दिरों का निर्माण करके तथा प्रजा को सुख देकर अंग्रेज सरकार रो सम्मानजनक उपाधि प्राप्त की।

बघाटी हिमाचली– धर्मज्ञाता भगवती रे बगते तिणिए राजे मन्दरा रा निर्माण कर रो अरो आपणी प्रजा खे सुख दे रो अंग्रेज सरकारा दे आदरणीय स्थान प्राप्त किया।

नाम दत्त्वा प्रदेशाय तदा पुराणसम्मतम्।
तेन प्राप्तं प्रजाप्रेम स्थानीय उपभाषया।।344।।

हिन्दी– इस प्रदेश को पुराणोक्त हिमाचल नाम देकर और अपनी प्रजा से बघाटी बोली में संवाद करके अपने प्रजा का प्रेम प्राप्त किया।

बघाटी हिमाचली– एस प्रदेशा खे पुराणा माँएं बतावा दा हिमाचल नाँव दे रो अरो आपणी जनता साय एती रि बगाटि प्हाड़ि बोली माँएं बाता कर रो तीना रा प्यार प्राप्त किया।

विभागाः न्यायरक्षादि वनादिकास्तथैव च।
यथादोषस्तथा दण्डः विकासः शोभनः कृत।।345।।

हिन्दी– उन्होंने अपने यहाँ न्याय, रक्षा और और वन आदि अनेक विभाग स्थापित किए थे। अपराधियों को उनके अपराधों के हिसाब से सजा का प्रावधान था। राज्य ने अच्छा विकास किया था।

बघाटी हिमाचली– आपणे ठें कानून, रक्षा और जंगला बगैरा साय जुड़े दे मैकमे बणाय राखे थे। जुल्म करनि आले खे जुल्मा रे मुताबिक सजा मीलो थि। रियासति माँएं सौणि तरक्कि कर राखि थि।

शीघ्रमुत्थाय काले तु सन्ध्यां चैव चकार सः।
रूद्री सप्तशती गीता साकं भागवतादिकम्।।346।।

हिन्दी– वे तड़के उठकर सन्ध्या करते थे, साथ में रूद्राष्टाध्यायी, दुर्गासप्तशती, भगवद्गीता और भागवातादि पुराणों का भी पाठ करते थे।

बघाटी हिमाचली– से भल्खि दे उठ रो सन्ध्या करो थे अरो रूद्राष्टाध्यायी, सप्तशती, गीता अरो बागवत बगैरा पुराणा रा बि पाठ करो थे।

जननीं वैश्वदेवं च मन्दिरेषु नमन् तथा।
राजधर्मं प्रभोः सेवां मत्वा कालं हि नीतवान्।।347।।

हिन्दी– वैश्वदेव करके माँ को प्रणाम करके और मार्गस्थ मन्दिरों में प्रणाम करते हुए तथा अपने राजधर्म को भगवान् की सेवा मानकर समय बिताते थे।

बघाटी हिमाचली– वैश्वदेव कर रो, आपणी मा खे डाल कर रो अरो बाटा दे सबी मन्दरा माँएं डाल कर दे आपणे राजदर्मा खे भगवाना रि सेवा मान रो टैम बिताओ थे।

मातृः प्रणम्य नित्यं सः पृच्छति सचिवं तथा।
सेवितवान् हि राजानं शैय्यान्तं यः प्रभाततः।।348।।

हिन्दी– सायंकाल आकर हर रोज माताओं को प्रणाम करके उनके सहित अपने उस सविव की भी कुशल पूछते थे जो उनकी सबेरे उठने से लेकर रात को सोने तक सेवा किया करता था।

बघाटी हिमाचली– ब्याले रोज आपणी मा खे डाल कर रो तीनी साय आपणे सचिवा रि बि कुशल पूछो थे जो तीना रि भल्खि उठणि दे लय रो राति सुतणि तैं सेवा करो था।

सः ब्रह्मकर्मणा मुक्तेः आदर्शं हि जनान् ददौ।
पूर्वेषां चैव श्राद्धेन दीनान् हि दानतः तदा।।349।।

हिन्दी– उस समय उन्होंने कर्मकाण्ड के द्वारा मोक्ष के आदर्श को लोगों के सामने प्रस्तुत किया। पितरों के श्राद्ध और गरीबों को दान देने से भी यह काम किया।

बघाटी हिमाचली– तेस बक्ता तीने लोका खे कर्मकाण्डा, श्राद्धा अरो गरीबा खे दाणा साय मोक्षा रा आदर्श बतावा।

श्रद्धया ब्रह्मचर्येण पुराणैः विविधैस्तथा।
दयादिधर्मचिह्नैश्च प्रजायाः प्रेम लब्धवान्।।350।।

हिन्दी– उन्होंने श्रद्धा, ब्रह्मचर्य, अनेक पुराण कथाओं तथा दयादि धर्म लक्षण अपनाकर अपनी प्रजा का प्यार प्राप्त किया।

बघाटी हिमाचली– तिणिए श्रद्धा, ब्रह्मचर्य, पुराणकथा अरो दया बगैरा दर्मलक्षण अपनाय रो आपणी जनता रा प्यार प्राप्त किया।

निन्दासमर्थकः पापी चरितवान्मनोर्वचः।
राजधर्मावलम्बी सः आदर्शोऽभूत् स्वधर्मिणाम्।।351।।

हिन्दी– किसी की निन्दा का समर्थन करने वाला आदमी पापी होता है, मनु के इस वचन का उन्होंने पालन किया। राजधर्माश्रित वह राजा अपने कर्तव्याश्रितों के लिए आदर्श रूप था।

बघाटी हिमाचली– कसरी निन्दा रा समर्थन करनि आला आदमि पापि ओ, मनु रे एस बचना रा तीने पालन किया। राजदर्मा पाँएं चलनि आला से राजा आपणा कर्तव्य अपनावणि आले खे आदर्शरूप था।

दुर्गादेवीं हि देवठ्यां द्यारशे नर्मदेश्वरम्।
पुरे नृसिंहमन्दिरं स्थापितवान् तु सुन्दरम्।।352।।

हिन्दी– उन्होंने देवठी में दुर्गादेवी द्यारश घाट में नर्मदेश्वर शिव और सोलन में नृसिंह के सुंदर मन्दिर स्थापित किए।

बघाटी हिमाचली– तिणिए देवठी दुर्गा रा, द्यारशगाटा नर्मदेश्वर शिवा रा अरो सोलनि नृसिंहा रे सौणे मन्दर स्थापे।

वेदमूर्तिं कसौल्यां च जावणायां लगासनम्।
विविधेषु सुतीर्थेषु हरिद्वारे तथैव च।।353।।

हिन्दी– कसौली में वेदमन्दिर, जावणा में लगासन देवी का और अनेक तीर्थों सहित हरिद्वार में भी मन्दिर स्थापित किए।

बघाटी हिमाचली– कशोली वेद मन्दर, जावणे लगासन देवि अरो भौत सारे तिर्था समेत हरिद्वारा बि मन्दर बणावे।

पञ्चाङ्गेन मुकन्दस्तु आयुर्वेदेन माधवः।
देवीरामः सुमन्त्रेण बघाटं दत्तवान् यशः।।354।।

हिन्दी– पञ्चाङ्ग बनाकर मुकन्दवल्लभ ने, आयुर्वेद से माधव ने और नेक सलाह से देवीराम ने बघाट को यश प्रदान किया।

बघाटी हिमाचली– पञ्चाङ्गा साय मुकन्दबल्बे, आयुर्वेदा साय मादवे अरो अच्छि सलाय साय देवीरामे बगाट रियासति रा नाँव राख।

राजपूतसभाध्यक्षः दुर्गासिंहोऽभवत्तदा।
उपाधिं धर्ममार्तण्डं काशीतः सः हि लब्धवान्।।355।।

हिन्दी– उस समय दुर्गासिंह भारतीय राजपूत सभा के प्रधान थे। उन्होंने काशी से धर्ममार्त्तण्ड की उपाधि भी प्राप्त की।

बघाटी हिमाचली– तेस जमाने माँएं राजा साब देशा री राजपूत सबा रे प्रदान थे। तीना खे काशी दे दर्ममार्तण्डा रि उपादि बि मिलि थि।

अल्पमूल्येन हि न्यायं आसन्तुष्टिं प्रदत्तवान्।
साम्राज्यादतिदूरं प्रजाप्रेम हि पालितम्।।356।।

हिन्दी– वे कम से कम कीमत के साथ सन्तोषप्रद न्याय दिलाते थे और साम्राज्यवाद से दूर रहकर केवल प्रजाप्रेम का पालन करते थे।

बघाटी हिमाचली– से थोड़ी किमति माँएं इन्साफ दिलाओ थे अरो साम्राज्यवादा दे दूर बस प्रजाप्रेमा रा पालन करो थे।

विषयाः पाठशालायां सविज्ञानं हि नूतनाः।
संस्कृतं चैव तारिण्यां प्रमुखो यत्र दीक्षितः।।357।।

हिन्दी– उस समय हाई स्कूल में विज्ञान सहित नए विषयों को पढ़ाने का प्रबन्ध किया गया। संस्कृत भाषा की पढ़ाई के लिए तारिणी महाविद्यालय स्थापित किया गया जिसके पहले प्राचार्य मथुराप्रसाद दीक्षित बने।

बघाटी हिमाचली– तेस बक्ता हाई स्कूला माँएं विज्ञाना समेत नोए विषय पड़ावे गोवे अरो संस्कृत भाषा री पड़ाई री खातर तारिणी महाविद्यालय खोला गोआ जेते रे पैले प्रदानाचार्य मथुराप्रसाद दीक्षित जी बणे।

मालवीयस्य सन्देशः वीराणां च समादरः।
भारते विलयार्थं च नेतृत्वं विहितं प्रियम्॥358॥

हिन्दी– सोलन में पं. मदनमोहन मालवीय जी का वक्तव्य सुनवाया गया। स्वतन्त्रता सैनिकों को सम्मानित किया गया। राजा ने पहाड़ी रियासतों को भारत में मिलाने के अभियान का आदर्श और प्रिय नेतृत्व निभाया।

बघाटी हिमाचली– सोलनि पं. मालवीय जी रा भाषण शणावा गोआ। स्वतन्त्रता सैनिक बि सम्मानित किए गोए। राजे प्हाड़ि रियासता खे देशा माँएं रालनि रे कामां रा सौणा अरो सक्रिय नेतृत्व नबावा।

नृसिंहमन्दिरे देव्याः आनन्द्याः स्वागतं कृतम्।
यस्या अध्यात्मशक्त्या हि गुरुनृपौ नतौ तदा॥359॥

हिन्दी– सोलन के नृसिंह मन्दिर में आध्यात्मिक माता आनन्दमयी का स्वागत किया गया था। उनकी अध्यात्मशक्ति के सामने राजगुरु दीक्षित जी और दुर्गा सिंह नतमस्तक हो गए थे।

बघाटी हिमाचली– सोलनि रे नृसिंह मन्दरा माँएं आध्यात्मिक माता आनन्दमयी रा स्वागत किया गोआ था। तींयाँ री आध्यात्मिक शक्ति साय राजगुरु दीक्षित अरो राजा साब नतमस्तक ओ गोए थे।

सहसा राज्य रत्नं हि राजसहायिका शशी।
पक्षाघातप्रहारेण संसारत इतो गता॥360॥

हिन्दी– अचानक राजसहायिका रानी शशि पक्षाघात रोग से ग्रस्त होकर इस संसार से चल बसी।

बघाटी हिमाचली– चाणकी राणि शशि पक्षागात रोगा साय इयां दुनियाँ दे चल बसि।

गते पितरि बाल्ये हि यौवने कन्यके गते।
गते मन्त्रिणि पत्न्यां च मातरं शरणं गतः॥361॥

हिन्दी– बचपन में पिता के, जवानी में कन्या के और उसके बाद सचिव और धर्म पत्नी के भी स्वर्ग सिधार जाने पर राजा ने आध्यात्मिक माँ आनन्दमयी जी की शरण ग्रहण कर ली।

बघाटी हिमाचली– बचपणा माँएं बावा रे, जवानी माँएं कन्या रे

अरो तेई दे बाद मन्त्री देवीरामा रे स्वर्ग सिदारनि पाँएं राजे संन्यासलय रो आनन्दमयी माता रि शरण ग्रहण कि।

नरेशः मातृसङ्घेशो जनला भाय वाचितः।
लुप्ताद्वैतं तु वेदानां येन प्रकाशतां व्रजेत्।।362।।

हिन्दी– भगवान् के भक्त लोगों ने सामान्य जनता के लाभ के लिए मातृसङ्घ बनाकर राजा को उसका प्रधान बना दिया जिसके माध्यम से वेदों का लुप्त हुआ अद्वैत मत सब तक पहुंचे।

बघाटी हिमाचली– भगवाना रे बगत लोके आम आदमी रे फायदे री खातर मातृसङ्घ बणाय रो राजा तेते रा प्रदान बणावा जनी साय वेदा रा राचा ओंदा अद्वैत विचार सबी तैं पौंचो।

प्रभुणा बन्धनं छिन्नं आत्मकल्याणहेतवे।
कथं न तदहं कुर्याम् यदर्थं तेन कल्पितः।।363।।

हिन्दी– राजा बोले– भगवान् ने मेरे सब बन्धन छीन लिए हैं, ताकि मेरा आत्मकल्याण हो। फिर मैं वही क्यों न करूँ जिसके लिए भगवान् ने यह स्थिति बनाई है।

बघाटी हिमाचली– राजे बोला– ''भगवाने मेरे सारे बन्धन काट दीते, जेनी साय मेरा आपणा कल्याण ओ। तबे आऊँ से ई काम कोए ना करू जनी री खातर भगवाने इ स्थिति बणावि।''

दैवाद्गतकुटुम्बस्य मातैव शरणं मम।
अशरणस्य दीनस्य केवलं शरणं परम्।।364।।

हिन्दी– दुर्भाग्य से परिवार के चले जाने पर माँ ही मेरी शरण हैं। शरण रहित दीन की केवल वे अन्तिम शरण हैं।

बघाटी हिमाचली– नभागा रे मेरे परिवारा रे चले जाणि पाँएं मा ई मेरि शरण असो। जसरा कोएं नी ओंदा तेस दीन दुःखि रि सेई सबी दे बड़ि शरण असो।

वैधव्यं सहते नारी वैधुर्यं न कथं पुमान्।
पत्नीव्रतं करिष्यामि रामेणाचरितं यथा।।365।।

हिन्दी– जब बेचारी स्त्री को वैधव्य सहना पड़ता है फिर पुरुष क्यों

न वैधुर्य को सहे। मैं भगवान् राम की तरह ही एक पत्नी व्रत का पालन करूँगा, राजा ने यह निश्चय किया।

बघाटी हिमाचली– जबे बचारी ज्वानसा खे बि रण्डेपा सहणा पड़ो तबे ठींड कोए ना तेते सओ। मेरे भगवान् रामचन्द्रा री तरे एक पत्नी व्रता रा पालन करना, राजे निश्चय किया।

सिंहः जनकवज्ज्ञानी भक्तोऽभूत्परमात्मनः।
वेदोक्तसाधनैः सम्यक् मनःशुद्धिमुपादिशत्॥366॥

हिन्दी– राजा सिंह राजा जनक के समान आत्मज्ञानी और परमात्मा के भक्त थे। उनका उपदेश होता था कि वेदों में बताए गए साधनों से अपने मन को शुद्ध करना चाहिए।

बघाटी हिमाचली– श्री दुर्गासिंह राजे जनका री तरह आत्मज्ञानि अरो भगवाना रे बगत थे। से उपदेश देओ थे जे वेदा माँएं बतावे दे साधना साय मन साफ करना चैं।

मातृशक्तिं परारूपां भारतानन्दिनीं तदा।
गतवान् परमेशीं सः पूजितां वेदवादिभिः॥367॥

हिन्दी– उस समय वे भारत को आनन्द देने वाली, वैदिकों द्वारा पूजित परमात्मिका आनन्दमयी के पास गए।

बघाटी हिमाचली– तेईदे फीरे दुर्गासिंग देशा खे आनन्द देणि आली, सनातनी रे द्वारा पुजि ओंदी भगवती आनन्दमयी काय खे गोए।

आसीत्सिंहः विरोधी तु कुप्रथानां हि सर्वथा।
सख्यः पत्न्या सहायाताः पत्न्यः नैव तदा कृताः॥368॥

हिन्दी– राजा साहब कुप्रथाओं के विरोधी थे। अपने विवाह में रानी के साथ भेजी गई सखियों को उन्होंने अपनी पत्नियां नहीं बनाया।

बघाटी हिमाचली– राजा साब बुरी रिवाजि रे विरोधि थे। तीने आपणी राणी साय आई दी स्हेली आपणी राणी नी बणावी।

देशेषु भारतः श्रेष्ठः तत्र चैव हिमाचलः।
तत्रापि सोलनं श्रेष्ठं सोलने शूलिनीगृहम्॥369॥

हिन्दी– दुनियाँ के देशों में भारत श्रेष्ठ है, भारत में हिमाचल श्रेष्ठ

है, वहाँ भी सोलन श्रेष्ठ है तथा सोलन में शूलिनी माता का मन्दिर श्रेष्ठ है।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ माँएं बारत श्रेष्ठ, बारता माँएं हिमाचल, तेती सोलन अरो सोलनि माँएं सोलनी री माता रा मन्दर श्रेष्ठ असो।

राजनीतिः जनैरत्र स्वहिताय न केवलम्।
लाभं दृष्ट्वा हि सर्वेषां आचर्यते तु सर्वदा।।370।।

हिन्दी– यहां के लोग राजनीति का प्रयोग केवल निजी हित के लिए नहीं करते, इसका आचरण सबके हितकारी कार्यों में किया जाता है।

बघाटी हिमाचली– एती रे आदमि बस आपणे फायदे री खातर राजनीति नी करदे, से एते सबी रे फायदे री खातर अपनाओ।

शासिते सिंहराज्ये तु पुरा सोलन मण्डले।
प्रगत्यै जागृतिर्नित्यं संदृश्यते जने जने।।371।।

हिन्दी– पिछले समय में दुर्गासिंह द्वारा प्रशासित इस जिले में आज हर व्यक्ति में प्रगति के प्रति जागरूकता देखी जाती है।

बघाटी हिमाचली– पैले दुर्गासिंगा रे द्वारा शासित एस जिले माँएं एबे हर आदमी माँएं तरक्की री खातर जागरूकता देखुओ।

नरस्तु बध्यते येन सकामेनेह कर्मणा।
सकाम कर्म प्रलीनः सोलने नैव दृश्यते।।372।।

हिन्दी– मनुष्य संसार में जिस सकाम कर्म से बन्धन में पड़ता है वह सकाम कर्म सोलन में दिखाई नहीं देता।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ माँएं जस सकाम कर्मा साय आदमि बन्धना माँएं पड़ो से सकाम कर्म सोलनि रे माँएं लोका माँएं नी देखुदा।

प्रबन्धकौशलं राज्ञः सोलनेऽद्यापि दृश्यते।
फलैश्च बहुशाकान्नैः प्रौद्योगैर्विविधैस्तथा।।373।।

हिन्दी– राजा के प्रबन्धकौशल के चिह्न सोलन में आज भी फलों, सब्जियों और अनाजों के उत्पादन तथा उद्योगों में देखे जाते हैं।

बघाटी हिमाचली– राजे रे सौणे प्रबन्धा रे नशाण सोलनि माँएं

आज बि फला, सब्जी अरो नजा रे उत्पादना तथा उद्योगा माँएं देखुओ।

नदीनां प्रमुखानां नु प्रयागे संगमो यथा।
जनानां बहुदेशानां सोलने पुण्यसङ्गमः॥374॥

हिन्दी– जिस प्रकार से भारत की प्रमुख नदियों का मिलन प्रयाग में होता है उसी प्रकार विविध स्थानों के लोगों का पवित्र मिलन सोलन में देख जाता है।

बघाटी हिमाचली– जीशा म्हारे देशा री प्रमुख नदी रा मिलन प्रयागा माँएं देखुओ तीशा भौत किशमा रे लोका रा सौणा मिलन सोलनि माँएं देखुओ।

प्रबन्धोऽत्र सुशिक्षायाः प्रशिक्षायास्तथैव च।
सौजन्यं च बघाटस्य ददाति विपुलं यशः॥375॥

हिन्दी– यहाँ के शिक्षण और प्रशिक्षण के प्रबन्ध और सोलन वासियों की सज्जनता सोलन को बहुत यश दिला रहे हैं।

बघाटी हिमाचली– एती रे शिक्षा अरो प्रशिक्षणा रे इन्तजाम अरो सोलनि आले रि सज्जनता एते खे भौत जश दलावणि लग रोए।

जीवननीतिरस्माकं सर्वजनहिताय वै।
राजनीतिरपीयं च सर्वैराचर्यते हि या॥376॥

हिन्दी– हमारे जीने का उद्देश्य सब लोगों के हित के लिए होता है। यही हमारी राजनीति भी है जिसका सभी पालन करते हैं।

बघाटी हिमाचली– म्हारे जिवणि रा नियम सबी आदमी रे बले री खातर ओ। ए ई म्हारि राजनिति बि असो जनी सब अपनाओ।

अभिप्रायो मतस्येह विचार एव गृह्यते।
नेत्रा मिलेदयं येन मतं तस्मै प्रदीयते॥377॥

हिन्दी– मत या वोट का मतलब होता है विचार। जिस नेता के साथ अपना विचार मिले उसको वोट देना चाहिए।

बघाटी हिमाचली– बोटा रा मतलब ओ सोच। जस नेते साय म्हारे विचार मीलो तेसके वोट देणा चैं।

जनाः जीवन्ति नैवेह हितार्थं केवलं निजम्।
सकलाः सुखिनः सन्तु मत्वा यच्छन्ति ते मतम्।।378।।

हिन्दी– सोलन के लोग केवल अपने फायदे के लिए ही नहीं जीते। सभी लोगों को सुख मिले, ऐसा सोचकर लोग वोट देते हैं।

बघाटी हिमाचली– सोलनि रे आदमि बस आपणे ई फायदे री खातर नी जिंवदे। सबी लोका खे सुख मिलना चैं, ईशा सोच रो से वोट देओ।

कर्तव्येन हि बन्धुत्वं समाचरन्ति सज्जनाः।
येन सुखं हि दीनानां मानं च धनिनां तथा।।379।।

हिन्दी– सज्जन लोग अपना कर्तव्य निभा करके भाईचारा निभाते हैं जिससे गरीबों को सुख मिले और अमीरों को सम्मान मिले।

बघाटी हिमाचली– बले आदमि आपणे कर्तब नबाय रो बाईचारा राखो जनी साय गरीबा खे सुख मीलो अरो अमीरा खे इज्जत।

सर्वैः कुलेष्टदेवास्तु पूज्यन्ते हि पृथक् पृथक्।
एक एव तु सर्वेषां राजा देवो बिजेश्वरः।।380।।

हिन्दी– सभी लोग अपने अपने अलग अलग कुलेष्ट देवताओं की पूजा करते हैं लेकिन राजा देव बीजेश्वर इस क्षेत्र का एक ही है।

बघाटी हिमाचली– सब आदमि आपणे आपणे अलग अलग कुलेष्ट देवता पूजो पेरि राजा देओ बीजु एस क्षेत्रा रे लोका रा एक ई असो।

विघ्नतः परिरक्षार्थं सर्वे जनाः स्मरन्ति तम्।
सर्वविधाय लाभाय प्रयान्ति शरणं तथा।।381।।

हिन्दी– सभी प्रकार की बाधाओं से बचाव के लिए सब लोग उस देवता को याद करते हैं। अनेक प्रकार के लाभों के लिए भी लोग उनकी शरण में जाते हैं।

बघाटी हिमाचली– सबी किश्मा री बाधा दे बचावा री खातर सब आदमि एस देवते खे याद करो। सबी किशमा रे फायदे री खातर बि लोक तेसरी शरणा माँएं जाओ।

विश्वधर्मो हि सर्वेषां सनातनो यदुच्यते।
विज्ञानसम्मतः लोके प्रत्यक्षमत्र मन्यते।।382।।

हिन्दी– सनातन धर्म जो कि मानवधर्म कहा जाता है, यह संसार में प्रत्यक्षतः विज्ञान सम्मत माना जाता है।

बघाटी हिमाचली– सनातन दर्म जो मानवदर्म असो, इ दुनियाँ माँएं प्रत्यक्ष रूपा माँएं विज्ञान सम्मत माना जाओ।

सर्वज्ञाता हि कृष्णस्तु सर्वद्रष्टा च पालकः।
हन्ता हतः स एवेह सर्वरूपस्तथैव च।।383।।

हिन्दी– कृष्ण सर्वज्ञ, सर्वदर्शक, सर्वपालक, हन्ता, हत और सर्वरूप हैं।

बघाटी हिमाचली– कृष्ण सर्वकर्ता, सर्वज्ञ, सर्वदर्शक, सर्वपालक, हन्ता, हत और सर्वरूप असो।

नरत्वं भारतं चैव एकत्र द्रष्टुमिच्छसि।
भूमिं सोलनमागत्य गृह्णन्तु स्वागतं शुभम्।।384।।

हिन्दी– अगर आप मनुष्यता और भारत देश का एकत्र सङ्गम देखना चाहते हैं तो सोलन आकर इसका शुभ स्वागत ग्रहण करें।

बघाटी हिमाचली– जे तूमे इन्सानियता अरो बारत देशा रा एकी जगा सङ्गम देखणा चाओ तो सोलनि खे आय रो इयाँ सोलनि रा शुभ स्वागत ग्रहण करो।

गोविन्दो जीवने यस्य वेदानां नियमास्तथा।
तं सोलनमहं वन्दे विश्वन्द्यमिह मण्डलम्।।385।।

हिन्दी– जिसके जीवन में भगवान् कृष्ण और उनके उपदेश रूप वैदिक नियम विद्यमान हैं उस विश्वपूजित सोलन जिले को मैं प्रणाम करता हूँ।

बघाटी हिमाचली– जसरे जीवना माँएं भगवान् कृष्ण अरो तीना रे उपदेश रूप वैदिक नियम असो तेस विश्वपूजित सोलन जिले खे आऊँ डाल करू।

पर्यावरणहानिस्तु अधर्मेणेह जायते।
तस्मात्सनातनं धर्मं प्रत्येको ह्यनुपालयेत्॥386॥

हिन्दी– इस संसार में पर्यावरण का नुकसान अधर्म करने से होता है इसलिए हर आदमी को सनातन धर्म का अनुपालन करना चाहिए।

बघाटी हिमाचली– इयाँ दुनियाँ माँएं पर्यावरणा रा नुकसाण अदर्म करनि साय ओ। एनी खे हर आदमी खे सनातन दर्मा रा पालन करना चैं।

कोरोनासंकटे काले संयमो दर्शितो जनैः।
राष्ट्रस्य स्वस्य चैवेह हितं विश्वस्य साधितम्॥387॥

हिन्दी– यहाँ कोरोनासंकट के समय में लोगों ने बहुत संयम दिखाया है जिससे उन्होंने अपना, देश का और दुनियाँ का हित साधन किया है।

बघाटी हिमाचली– कोरोना संकटा माँएं एती रे लोके बहुत संयम दखावा जनीसाय तीने आपणा, देशा रा अरो दुनियाँ रा बला किया।

शिक्षासंस्था हि शूलिन्यां पूर्वतमा तु दृश्यते।
शस्ता संस्कृतशिक्षायै रक्षायै संस्कृतेस्तथा॥388॥

हिन्दी– सोलन में जो सबसे पुरानी शिक्षा संस्था देखी जाती है वह संस्कृत भाषा की शिक्षा और संस्कृति की रक्षा के लिए प्रशंसनीय है।

बघाटी हिमाचली– सोलनि जो सबी दे प्राणि शिक्षा संस्था असो से संस्कृत भाषा री शिक्षा और संस्कृति री रक्षा री खातर प्रशंसनीय असो।

कृष्णेच्छया जगत्सर्वं कृष्णेच्छया च सोलनम्।
कृष्णेच्छयैव तत्काव्यं कृष्णायैव समर्पये॥389॥

हिन्दी– यह संसार कृष्णेच्छा से चल रहा है। कृष्णेच्छा से ही सोलन है। उन्हीं की इच्छा से उनका काव्य उन्हीं को सौंपता हूँ।

बघाटी हिमाचली– इ दुनियाँ कृष्णा री इच्छा साय चलो। सोलन बि तीना री इच्छा साय असो। तीना रा इ काव्य तीना री इच्छा साय तीना खे ई सौंपू।

कृष्णकार्यं महद्भाग्यं प्रेमप्रदं तथैव च।
कृष्णकार्यं जगद्वन्द्यं कृष्णकार्यं प्रणौम्यहम्॥390॥

हिन्दी– भगवान् कृष्ण का काम करना बड़े भाग्य से होता है। यह प्रेमप्रद भी है। उनके कार्यों को दुनियाँ वन्दन करती है। मैं भी उनके कार्य को प्रणाम करता हूँ।

बघाटी हिमाचली– भगवान् कृष्णा रा काम करना बड़े बागा रि बात ओ, इ प्यारा रि बावना बि दे ओ। दुनियां तीना रे कामा खे पूजो। आऊँ बि तीना रे कामा खे डाल करू।

कृष्णलोकादिदं सर्वं जायते च प्रकाशते।
कृष्णेच्छया लयश्चैव सर्वं कृष्णः चराचरम्॥391॥

हिन्दी– यह सारा संसार कृष्णलोक से सञ्चालित, उत्पन्न, प्रकाशित और लीन होता है। यह सजीव और निर्जीव सारा संसार भगवान् कृष्ण से ही है।

बघाटी हिमाचली– इ सारि दुनियां कृष्णा रे लोका दे सञ्चालित, पैदा, प्रकाशित अरो लीन ओ। जेंवदि अरो ना जेंवदि सारि दुनियाँ भगवान् कृष्णा दे ई असो।

विश्वपरिवर्तनं नित्यं सवस्तूनीह सर्वथा।
अस्मिह्नि परिवर्तने तं पश्यति प्रपश्यति॥392॥

हिन्दी– यह संसार हर वस्तु के साथ निरन्तर बदल रहा है। इस बदलाव के अन्दर जो भगवान् कृष्ण को देखता है वह वास्तव में भगवान् के दर्शन करता है।

बघाटी हिमाचली– इ दुनियां हर चीजा साय हर बक्त बदलनि लग रोइ। एस बदलावा रे बीचा माँएं जो भगवान् कृष्णा खे देखो से असलि माँएं भगवाना रे दर्शन करो।

संसारे घटनाः सर्वाः कृष्ण एव भवन्ति हि।
नैव तस्मात्पृथक् किञ्चित् जगत्सर्वं स एव हि॥393॥

हिन्दी– संसार में घटने वाली समस्त घटनाएं भगवान् कृष्ण के शरीर के अन्दर घट रही हैं। श्री कृष्ण से अलग कुछ भी नहीं है। सारा संसार भगवान् ही है।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ माँएं गटणि आली सब गटना भगवान्

कृष्णा रे शरीरा माँएं गटो। कृष्णा दे जूदा कुछ बि नी आथि। इ सारि दुनियाँ भगवान् ही असो।

अन्तर्जालयुगेऽस्मिन्हि वृत्तिर्गृहात्तु जायते।
विद्यार्थिनोऽपि पाठं स्वं पठन्त्यत्र तथैव तु॥394॥

हिन्दी– इन्टरनेट के इस युग में नौकरियां भी घर से ही होती हैं। यहाँ तक कि विद्यार्थी भी अपनी पढ़ाई घर पर ही कर रहे हैं।

बघाटी हिमाचली– इंटरनेटा रे एस जमाने माँएं नौकरी बि गरे बेठ रो ओणि लग रोई। एबे तो छोटू बि आपणि पड़ाइ घरा देई करो।

सत्त्वादौ निहितं कर्म वर्णानामिह सर्वथा।
पञ्चभूतगुणैरेवं वर्णकर्म तु निश्चितम्॥395॥

हिन्दी– हमारे यहाँ वर्ण या जातियों के कर्तव्य हमारे शरीर के सत्त्वादि गुणों के स्वभाव पर निर्भर हैं। पृथ्वी आदि पाञ्च भूतों के गुणों के अल्पाधिक मिश्रणों से वर्णों या जातियों के कर्तव्य निर्धारित हुए हैं।

बघाटी हिमाचली– म्हारे वर्णा या जाती रे कर्तब म्हारे सत्त्वादि गुणा रे सबावा पाँएं निर्भर असो। पृथ्वी बगैरा पांजा तत्त्वा रे कम जादे मिक्चरा साय वर्णा या जाती रे कर्तब निर्धारित असो।

उदारचिन्तनेनैव राजनीतिस्तु शुध्यति।
लोके सङ्कीर्णदृष्ट्येषा सदा हानिकराशुभा॥396॥

हिन्दी– राजनीति का शुद्धिकरण उदार सोच से होता है। यह तंगदिली की सोच से सदा हानिकारक अरो अशुभ होती है।

बघाटी हिमाचली– राजनीति रा शुद्धिकरण उदार दिला साय ओ। तंगदिली साय इ सदा हानिकारक और अशुभ ओ।

पापो न जायते लोके कृष्णाज्ञापरिपालने।
कृष्णस्याज्ञा तु कृष्णार्थं स एव परिपालकः॥397॥

हिन्दी– भगवान् कृष्ण की आज्ञा का पालन करने से कभी पाप नहीं लगता। कृष्ण की आज्ञा कृष्ण की सेवा के लिए है। वही दुनियाँ का पालन करने वाले हैं।

बघाटी हिमाचली– भगवान् कृष्णा री आज्ञा रा पालन करनि साय

कबे पाप नी लगदा। कृष्णा रि आज्ञा कृष्णा री सेवा री खातर असो। सेई दुनियाँ रा पालन करो।

जनैर्विज्ञानकालेऽस्मिन् स्वोपभाषा हि विस्मृता।
यस्यां श्रेष्ठोपदेशास्तु निहिताः सन्ति लाभदाः।।398।।

हिन्दी– आज के वैज्ञानिक युग में लोग अपनी उस बोली को भूल गए हैं जिससे हमारे लिए लाभदायक मार्गदर्शन मिलता है।

बघाटी हिमाचली– आजा रे वैज्ञनिक युगा माँएं आदमि आपणी तींयां बोली खे बुल गोए जनी साय हामा खे जिवणि रा रास्ता मीलो।

अन्तर्बहिश्च सर्वत्र व्याप्तो यश्चेतनामयः।
पश्यति सर्वकार्याणि को मुक्तः कृष्णदृष्टितः।।399।।

हिन्दी– हमारे अन्दर और बाहर जो चेतन भगवान् समाहित है वह संसार के सब लोगों के कामों को देख रहा है। भगवान् कृष्ण की नजर से कौन बच सकता है।

बघाटी हिमाचली– म्हारे बीतरे अरो बारे जो चेतन भगवान् बेठा दा असो से दुनियाँ रे सबी आदमी रे कामा खे देखणि लग रोआ। भगवाना री नजरा दे कुण बच सको।

नैवेह लक्ष्यमस्माकं मतपत्रं हि केवलम्।
मनोजयं हि सर्वेषां कृत्वा सेवामहे जनान्।।400।।

हिन्दी– हमारा उद्‌देश्य केवल वोट लेना ही नहीं होता, हम इसके इलावा भी लोगों के दिलों पर राज करके उनकी सेवा करते हैं।

बघाटी हिमाचली– म्हारा काम बस वोट लणा नी ओंदा, हामें तेनी दे इलावा बि लोका रे दिला पाँएं राज कर रो तीना रि सेवा करू।

परिवर्तनशीलं तु वस्त्विह शरणं कथम्।
न परिवर्तते कृष्णः तस्मात्सः शरणं स्थिरम्।।401।।

हिन्दी– यहाँ बदलने वाली चीज हमारी शरण कैसे बने? भगवान् कृष्ण कभी बदलते नहीं, अतः वही एक स्थिर सहारा हैं।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ माँएं बदलनि आलि चीज म्हारा सहारा किशि बणो? भगवान् कृष्ण कबे बदल दे नी आथि, एनी री बजा साय

बस एक सेई पक्का स्हारा असो।

जातिमाश्रृत्य नैवेह मतं देयं कदाचन।
जातिधर्माः गृहे सन्तु नैव सन्तु गृहाद्बहिः।।402।।

हिन्दी– जाति के आधार पर किसी उम्मीदवार को वोट नहीं डालना चाहिए। अपने अपने जाति धर्म घर पर निभाने चाहिए, अपने घर से बाहर नहीं।

बघाटी हिमाचली– कसि उम्मीदवारा रि जाति देख रो तेसके वोट नी पाणा चैं। आपणी आपणी जाति रे दर्म गरे नबावणे चैं, आपणे गरा दे बारनी।

पञ्चभूतमयो देहः सत्त्वादीनामिहाश्रयः।
कार्यं तदनुरूपं हि असहजं कदापि न।।403।।

हिन्दी– पांच तत्त्वों से बना यह शरीर सत्त्वादि गुणों का आधार है, अपना कर्तव्य उस गुण के स्वभावानुसार निभाना चाहिए। उसके विपरीत गुण के स्वभाव का कर्तव्य कभी नहीं करना चाहिए।

बघाटी हिमाचली– पांजा बूता दे बणा दा इ शरीर सत्त्व बगैरा गुणा रा आधार असो, आपणा कर्तब तेस गुणा रे सबावा रे हिसाबा साय नबावणा चैं। तेते दे उल्टे गुणा रे सबावा रा कर्तब कबे नी नबावणा चैं।

विधाने जातिभेदस्तु विहितं हि कुशासकैः।
व्यवहारगतो भेदः विधाने नैव गृह्यते।।404।।

हिन्दी– हमारे कानून में जातियों का भेद विदेशी हमलावरों ने शामिल किया है, वास्तव में यह व्यावहारिक भेद हमारे यहाँ कानून में शामिल नहीं किया जाता।

बघाटी हिमाचली– म्हारे कानूना माँएं जाति रा भेदभाव बारले देशा रे हमलावरे शामल कर राखा, सचके माँएं इ बर्तावे रा फरक म्हारे कानूना माँएं शामल नी ओंदा।

कृष्णस्याज्ञा परो धर्मः वेदज्ञातृभिरूच्यते।
प्रसादार्थं हि कृष्णस्य तमेवेहानुपालयेत्।।405।।

हिन्दी– भगवान् कृष्ण की आज्ञा का पालन करना सर्वोत्तम धर्म है,

ऐसा वेदों के ज्ञाता बोलते हैं। भगवान् को प्रसन्न करने के लिए केवल उसी का पालन करना चाहिए।

बघाटी हिमाचली– भगवान् कृष्णा री आज्ञा रा पालन करना सबी दे बड़ा दर्म असो, ईशा वेदा खे जाणनि आले बोलो। भगवाना खे खुश करनि री खातर बस तेते रा ई पालन करना चैं।

द्रष्टव्या न हि जातिस्तु प्रत्याशिनः मतेष्विह।
भवेद्योग्यतमो योऽपि तं दातव्यमसंशयम्॥406॥

हिन्दी– वोट डालने के लिए उम्मीदवार की जाति नहीं देखनी चाहिए, उनमें जो भी सबसे योग्य हो निस्संदेह उसको वोट डालना चाहिए।

बघाटी हिमाचली– वोट पाणि खे उम्मीदवारा रि जाति नी देखणि चैं, तीना माँएं जो सबी दे खरा ओ बस तेसके ई वोट पाणा चैं।

मोहो बध्नाति जीवं हि असत्ये विश्ववस्तुनि।
तस्मात्स्वहृदये सत्यं कृष्णमेव समाश्रयेत्॥407॥

हिन्दी– जीवात्मा को संसार की बदलने वाली असत्य चीजों के प्रति आसक्ति अपने साथ बान्धती है, इसलिए अपने हृदय में बसने वाले और न बदलने वाले सत्य कृष्ण का ही सहारा लेना चाहिए।

बघाटी हिमाचली– म्हारे जीवात्मा खे दुनियाँ री बदलनि आली झूठी चीजा रे प्रति लगाव आपि साथी बानो, एनी खे आपणे दिला माँएं बसणि आले अरो ना बदलनि आले सच्चे साथी भगवान् कृष्णा रा ई स्हारा लणा चैं।

धर्मः सनातनः लोके प्रकृत्या सह वर्तते।
प्रकृतिरेव धर्मस्तु वक्तव्यं वस्तुततः॥408॥

हिन्दी– संसार में सनातन धर्म प्रकृति के साथ जुड़ा हुआ है। वास्तव में कहना चाहिए कि प्रकृति ही धर्म है।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ माँएं सनातन दर्म प्रकृति साय जुड़ा ओंदा असो। असलि माँएं प्रकृति ही दर्म असो।

परिवर्तनशीलं तु यदपि वस्तु दृश्यते।
तदेवासदसत्यं वा सद्विपरीतमुच्यते॥409॥

हिन्दी– दुनियाँ में जो भी वस्तु दिखाई देती है वह बदलने वाली है, उसी को असत् या असत्य कहते हैं। इसके विपरीत वस्तु सत्, सत्य या कृष्ण कही जाती है।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ माँएं जो बि चीज देखुओ से बदलनि आलि, असत् या असत्य असो। एते दे उलट जो चीज असो से सत्, सत्य या भगवान् असो।

समस्याः वारयित्वा हि मनोजयन्ति मानुषाः।
तेभ्य एव प्रयच्छन्ति मतानि हर्षतो जनाः।।410।।

हिन्दी– लोगों की समस्याओं का निवारण करके जो उनका मन जीत लेते हैं उन्हीं को लोग खुशी के साथ वोट देते हैं।

बघाटी हिमाचली– लोका री समस्या रा नवारण कर रो जो तीना रा दिल जित लौ, तीना खे ई से आदमि खुशी साय वोट देओ।

चेतना भावशक्तिर्हि सर्वात्मसु विराजते।
कणे कणे क्रियाशीला ब्रह्माण्डेष्वपि सा तथा।।411।।

हिन्दी– चेतना एक विचारशक्ति है जो सभी जीवात्माओं में विराजमान है, कण कण में क्रियाशील होकर वह समस्त ब्रह्माण्डों में भी उसी तरह क्रियाशील है।

बघाटी हिमाचली– चेतना एक विचारशक्ति असो जो सबी जीवात्मा माँएं विराजमान असो, चणी चणी माँएं काम करनि आलि से सबी ब्रह्माण्डा माँएं बि तीशा ई काम करदि रौ।

सर्वजनहितं हित्वा साधयन्ति सदा निजम्।
लभन्ते न निजं किञ्चित् नश्यन्ति सकलं तथा।।412।।

हिन्दी– जो लोग सर्वजनहित को छोड़कर केवल निजी स्वार्थ को साधते रहते हैं, वे अपना हित तो खोते ही हैं सबके हित का भी नाश करते हैं।

बघाटी हिमाचली– जो आदमि सबी रा बला छाड रो बस आपणा ई मतलब साद्या करो, से आपणा बला तो खोय देओ सबी रा बला बि नष्ट करो।

परिवर्तनशीले हि ममत्वं विश्ववस्तुनि।
अज्ञानं चैव मोहश्च अपि चासक्तिरूच्यते।।413।।

हिन्दी– संसार की बदलने वाली चीजों में जो ममता होती है वह अज्ञान, मोह और आसक्ति नाम से कहे जाते हैं।

बघाटी हिमाचली– दुनियाँ री बदलनि आली चीजा माँएं जो लगाव ओ तेनी खे अज्ञान, मोह अरो आसक्ति बोली।

शक्तिरायाति नित्यं या आगत्य सूर्यमण्डलात्।
वन्देऽहं कृष्णशक्तिं तां जगत्प्रियां हि राधिकाम्।।414।।

हिन्दी– सूर्यमण्डल में से आकर जो शक्ति नित्य हमारे जीवात्मा को सुकार्यों में लगाती रहती है मैं उस विश्वप्रिय कृष्ण जी की राधिका शक्ति को प्रणाम करता हूँ।

बघाटी हिमाचली– सुरजमण्डला माँएं दे आय रो जो शक्ति रोज म्हारे जीवात्मा खे सौणे कामा माँएं लाय करो, आऊँ तीयां दुनियाँ री प्यारी कृष्ण जी री राधा शक्ति खे डाल करू।

लक्ष्मी हि स्वच्छता नित्यं यस्य गृहे सुशोभते।
लक्ष्मीपतिः स्वयं विष्णुः तया सह विराजते।।415।।

हिन्दी– स्वच्छता रूप लक्ष्मी जिसके घर में शोभा पाती है, लक्ष्मीपति भगवान् विष्णु जी भी अपनी पत्नी के साथ वहाँ विराजते हैं।

बघाटी हिमाचली– स्वच्छतारूप लक्ष्मि जस गरा माँएं शोबा पाओ, लक्ष्मीपति भगवान् विष्णु जी बि आपणी पत्नी साय तेती विराजमान रौ।

कृष्णः करोति कल्याणं दुःखेनापि सुखेन च।
गोविन्दः नास्ति कस्येह स्वप्रेमदः न कस्य च।।416।।

हिन्दी– भगवान् कृष्ण जी मनुष्य को दुःख देकर उसका कल्याण करते हैं तो सुख देकर भी। इस संसार में भगवान् किसके साथी नहीं हैं और वे किसको अपना प्रेमदान नहीं करते।

बघाटी हिमाचली– भगवान् आदमी खे दुःख दे रो बि तेसरा कल्याण करो अरो सुख दे रो बि। इयाँ दुनियाँ माँएं भगवान् जी कसरे साथि नी आथि अरो कसके से आपणा प्यार नी देंदे।

शक्नोतीहैव यः सोढुं देहदु:खं सुखं तथा।
कृष्णकृपां समाप्नोति कृष्णलोकं तथैव च।।417।।

हिन्दी– जो आदमी इस जीवन में अपने शरीर के दु:ख और सुख को सहन कर सकता है, वह भगवान् कृष्ण की कृपा और उनके लोक को प्राप्त करता है।

बघाटी हिमाचली– जो आदमि एसी जीवना माँएं आपणे शरीरा रे दु:खा अरो सुखा खे सहन कर सको से कृष्ण भगवाना रि कृपा अरो तीना रे लोका खे प्राप्त करो।

सुखं भवतु धालायां अपि सोलन मण्डले।
दिव्ये हि भारते चैव पूर्णे भूमण्डले तथा।।418।।

हिन्दी– कृष्णकृपा से मेरे धाला गाँव में सदा सुख बना रहे। सोलन जिला, दिव्य भारत भूमि और सारी धरती के लोग भी सदा सुखी रहें।

बघाटी हिमाचली– कृष्णा री कृपा साय मेरे गाँव दाला, सोलन जिला, दिव्य बारत बूमी अरो दरती पाँएं सबी लोका खे सुख मीलो, भगवाना दे ईशा चाऊ।

कृष्णं त्वां पादयोः वन्दे लेखरामः पुनः पुनः।
पूर्तिं काव्यमिदं यस्य अगमदनुकम्पया।।419।।

हिन्दी– हे कृष्ण! मैं बारबार आपके चरणों में प्रणाम करता हूँ जिनकी कृपा से यह काव्य पूरा हो सका।

बघाटी हिमाचली– भगवन्! आऊँ बार बार त्हारे लाता पाँएं बार बार डाल करू जीना री दया साय इ काव्य पूरा ओय सका।

सर्वे स्वकर्म कुर्वन्तु कृष्णदत्तं हि सर्वदा।
आप्नुवन्तु फलं चैव कृष्णानन्दं ह्यलौकिकम्।।420।।

हिन्दी– सभी मनुष्य अपना वह कर्म करें जो भगवान् कृष्ण ने सौंपा है और कृष्णानन्द रूप अलौकिक फल को प्राप्त करें।

बघाटी हिमाचली– सब आदमि आपणा आपणा कर्म करो जो हामा खे कृष्ण भगवाने सौंप राखा अरो कृष्णानन्द रूप फल प्राप्त करो।

नमस्ते भक्तमित्राय नमश्चाभक्त शत्रवे।
समेभ्यः समरूपाय जीवेच्छारूपिणे नमः।।

❑❑